ANTARRASHTRIYA LOKYANI ANUSANDHATA

Compiled by
NARENDRA DHIR
Assisted by
JAGDISH CHATURVEDI
Published by
FOLK-LORE AKADEMI
FIRST EDITION 1962

Head Office :
KHANNA, PUNJAB
Delhi Office :
12/1-A MOTI NAGAR, NEW DELHI-15

प्रकाशक :
फ़ोक-लोर अकादमी
मुख्य कार्यालय
नरेन्द्र भवन, जी० टी० रोड,
खन्ना, (पंजाब)
दिल्ली कार्यालय :
१२/१-ए, मोती नगर, नई दिल्ली-१५

मूल्य ५-००
प्रथम बार, १९६२

मुद्रक :
एस० द्वारकादास एण्ड कम्पनी
पोस्ट बॉक्स नं० ११२५,
४२८५, अंसारी रोड,
३, दरयागंज, दिल्ली-६

BIBLIOGRAPHY OF
INTERNATIONAL
FOLK-LORISTS

अन्तर्राष्ट्रीय
लोकयानी
अनुसंधाता

फोकलोर अकादमी प्रकाशन

अन्तर्राष्ट्रीय
लोक-साहित्य
के
विद्वज्जनों तथा
जिज्ञासुओं को

स्वकथन

अभी तक किसी भी भाषा में ऐसी कोई भी पुस्तक प्राप्य नहीं है जिसमें लोकयानी जिज्ञासु अथवा विद्वान अपने विषय पर लिखी गई पुस्तकें खोज सकें। प्रारम्भ में यह पुस्तक एक साधारण निबन्ध मात्र थी। कुछ समय बाद ज्यों-ज्यों नाम जुड़ते गये इसका विस्तार भारत तक हो पाया और भाषा विभाग पंजाब से अनुदान प्राप्त होने के पश्चात् इसका क्षेत्र विदेशों तक भी फैल गया।

संकलन कर्ता का यह दावा कदापि नहीं है की इस पुस्तक से कोई तत्सम्बन्धी पुस्तक छूटी ही नहीं है। भारत की ही विभिन्न भाषाओं की पुस्तकें इस में नहीं आ पायी हैं। फिर विदेश की तो बात ही क्या। हाँ यह बात अवश्य है कि इस पुस्तक में जहाँ तक पहुँच सम्भव थी पुस्तकों की सूची बन गयी है।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन में जो सहयोग हमें भाषा विभाग पंजाब के महा निदेशक श्री लालसिंह जी का प्राप्त हुआ है उस के प्रति अकादमी विशेष रूप से आभारी है।

अकादमी इन दिनों "भारतीय लोक-साहित्य कोश" के निर्माण में व्यस्त है। पंजाबी में इसी प्रकार का कोश "पंजाबी लोक-साहित्य कोश" के नाम से अकादमी के पास तय्यार है; शीघ्र ही प्रकाशन व्यवस्था हो जाने पर जिज्ञासुओं की सेवा में प्रस्तुत किया जायेगा।

अकादमी श्री द्वारका दास जी मिश्रा की विशेष रूप से आभारी है जिन्होंने इस पुस्तक के मुद्रण में अकादमी का मार्ग प्रशस्त किया।

—*संयोजक*

अनुग्रह

भाषा-विभाग पंजाब—
जिन्होंने पुस्तक के
प्रकाशन के हेतु एक
हज़ार रुपये का
अनुदान दिया।

नरेन्द्र धीर

जन्म : १७ फरवरी, १९२५, लश्कर गवालियर (म० प्र०)
निवासी : उज्जैन (मध्यप्रदेश), खन्ना (पंजाब)
निवास : १२/१-ए, मोतीनगर, नई दिल्ली-१५
व्यवसाय : लेखन, संपादन, शोध इत्यादि
रचनायें : 'वेनिस का सौदागर' (काव्य), 'रंगीला चक्कर' (उपन्यास), 'मैं धरती पंजाब की' (शोध-ग्रन्थ : हिन्दी एवम् पंजाबी—केन्द्रीयशिक्षा मंत्रालय द्वारा सर्वोत्कृष्ट घोषित एवम् २००० रुपये से पुरस्कृत), नाथ-सिद्ध सहित्य (शोध ग्रन्थ : हिन्दी एवम् पंजाबी), हिमानी लोक-साहित्य (हिमानी प्रदेशीय लोक-साहित्य-शोध), 'मधुयामा' (काव्य), 'उर्वशी के गीत' (काव्य), अन्तरिक्ष के यात्री (चाँद सितारों की दुनिया), 'भारतीय-लोक-नाट्य' (शोध ग्रन्थ), 'धरती मेरी बोलती' (शोध ग्रन्थ)

जगदीश चतुर्वेदी

जन्म : १३ जनवरी, १९३३, लश्कर गवालियर (म०प्र०)
निवासी : उज्जैन (मध्य प्रदेश)
निवास : ९/२ ईस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-१२.
व्यवसाय : लेखन, आकाशवाणी भोपाल से संबद्ध; वर्तमान व्यवसाय : अनुसंधान सहायक—केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली
रचनायें : जीवन का संघर्ष (कहानियाँ), कपास के फूल (नाटक), वृत्त के चारों ओर (कहानीसंग्रह), प्रारम्भ (काव्य सम्पादन), पारिभाषिक शब्दसंग्रह (सहयोगी)

भारतीय लोक-साहित्य

एक सर्वेक्षण

यूँ तो भारतीय लोक-साहित्य का अपना एक इतिहास है एवम् उसमें भी उसकी प्राचीनता अपना एक अलग महत्त्व रखती है परन्तु विभिन्न विद्वानों के मतानुसार संसार के प्राचीनतम ग्रन्थ जिनकी रचना सप्तसिंधु अथवा पंजाब में हुई थी—लोक-साहित्य संकलन के सर्वप्रथम ग्रन्थ माने जाने चाहिये। वेदों को संभवतः इसी कारण श्रुति कहा गया है। 'वेदों का बहुत सा साहित्य लोक-साहित्य माना जाता है। अथर्ववेद के कुन्तापसूक्त (२०—१२७—१३६) खिल या परिशिष्ट कहे गये है। निश्चय ही इनमें संहिताकार ने लोक-साहित्य का संकलन किया है। संग्रह करने वाले वेदव्यास स्वयं कुरु जनपद के थे और वहाँ के लोक-साहित्य से भली भाँति परिचित थे। जब वे कृषि परिवारों में प्रणीत साहित्य का संग्रह कर चुके तो उनका ध्यान लोक में फैले हुए गानों पर भी गया जान पड़ता है। वे ही कुन्तापसूक्त है।' श्रुति वेदों का ही एक नाम माना जाता है। यह एक निश्चित संकेत माना जा सकता है कि यह वेदों की मौलिक वस्तु नहीं है वरन् तत्कालीन लोक-साहित्य है, जिसे बाद में जोड़ दिया गया प्रतीत होता है।

वेदों के पश्चात् उपनिषदों की रचना हुई जिसमें हमें लोक-कथाओं का कुछ अंश प्राप्त होता है। प्रत्येक दस उपनिषदों में हमें जहाँ एक ओर आत्मानुसंधान की प्रवृत्ति मिलती है वहाँ लोक-कथाओं के आधार पर जीवन-दर्शन का स्पष्ट दिग्दर्शन भी प्राप्त होता है। लोक-कथाओं का यह रूप भले धार्मिक परम्पराओं से परिपूरित हो पर उनमें हमें तत्कालीन लोक का एवम् उनकी लोक-परम्पराओं का दिग्दर्शन स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

उपनिषदों में जहाँ हमें आत्मानुसंधान की प्रवृत्ति वाली लोक-कथायें प्राप्त होती है, वहाँ ब्राह्मण ग्रन्थों में लोक-कथाओं को प्रतीकों एवम् उपमाओं के रूपक में बाँधकर प्रस्तुत किया गया है। लोक-धर्मी कथा परम्परा अथवा उसकी शैली भले ही तत्कालीन लोक के लिए शिक्षादायिनी अथवा दार्शनिक रूप से ओत-प्रोत हो परन्तु वह वर्त्तमान काल में तो लोक-साहित्य के अतिरिक्त अन्य नहीं मानी जानी चाहिए। ब्राह्मण ग्रन्थों की भाँति स्मृतियों में भी लोक-साहित्य का ही अंश प्राप्त होता है। स्मृतियों का उद्भव तो पूर्णरूपेण 'स्मरण की हुई' से ही हुआ है। तभी तो इन्हें 'स्मृति' कहा गया। लोक साहित्य भी प्राय: स्मृति के आधार पर ही अपनी लम्बी यात्रा का मार्ग सुगम कर पाते हैं। कंठों पर अठखेलियाँ करने वाला लोक-साहित्य कर्ण-द्वारों के द्वारा अन्तस में पैठता है और शनैः शनैः अन्तस में घर करता रहता है। यदा-कदा, यत्र-तत्र-सर्वत्र वह पुनः कंठों पर नर्तन करता है और युगानुयुग तक अपना अस्तित्व बनाये रखता है। अपने अस्तित्व को बनाये रखने में उसे भले कितने ही रूप बदलने पड़ें, भले कितने ही प्रदेशों का भ्रमण करना पड़े, भले कितने ही कंठों पर उसे कलाबाजियाँ लगानी पड़ें, पर वह अपने अस्तित्व को गुमने नहीं देता, खोने नही देता।

रामायण एवम् महाभारत जिन्हें हम भारतीय अपने धार्मिक ग्रन्थ मानते हैं इनमें सहस्त्रों कथावस्तुओं का उद्भव छिपा पड़ा है। आज का युग

इन्हें इतिहास कह ले, धार्मिक ग्रन्थ कह ले अथवा कुछ और पर यह तो निश्चय ही सत्य है कि रामायण तथा महाभारत की वृहद् कथायें हमें तत्कालीन लोक की सांस्कृतिक झाँकियों का प्रदर्शन कराती है। लोक-परम्परायें, लोकोपमायें, लोक-संस्कृति, लोक-इतिहास, लोक-कलायें एवम् तत्कालीन लोक-रीतियों का स्पष्ट एवम् गहन अध्ययन करने के लिये हमें इन लोकप्रिय ग्रन्थों की सहायता निश्चय ही लेनी होगी।

रामायण, महाभारत के साथ-साथ ही भारतीय पुराणों में तो असंख्य लोक-कथायें संनिहित है। हमारे ये पुराण लोक-परम्परा के द्योतक ग्रन्थ माने जाने चाहिये। तत्कालीन लोक ने जिन आपदाओं का सामना किया, प्रकृति के जिन तत्त्वों ने तत्कालीन लोक को सहायता पहुँचाई अथवा अपने अद्वितीय चमत्कारों द्वारा लोकहित किया वे उस काल के लोक के लिये देवी, देवता अथवा महापुरुष हो गये। जिन तत्त्वों ने अथवा जिन विकारों ने उन्हें कष्ट पहुँचाया उनकी प्रगति में वाधक हुये वे असुर अथवा राक्षस की श्रेणी में रखे जाकर अवहेलना के पात्र माने गये। तत्कालीन लोक ने अपने विभिन्न संस्कारों की कथाओं को इन पुराणों में संकलित करके निश्चय ही बड़ा भारी ऐतिहासिक एवम् श्रद्धा योग्य कार्य किया है। पुराणों में संकलित विभिन्न कथाओं में लोकोपमायें, लोक-परम्परायें, लोक द्वारा प्रचलित मंत्र-तंत्र, जादू-टोने आदि विभिन्न मात्रा में उपलब्ध होते हैं। उपरोक्त समस्त साहित्य का रचनाकाल सम्भवतः ईसा से ४-५ हजार वर्ष पूर्व से लेकर ईसा की छठी अथवा सातवीं शताब्दी तक रहा है। इतने बड़े लम्बे काल का लोक-इतिहास, लोक-परम्परायें तथा लोक का जीवन-दर्शन हमें इन्हीं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों से प्राप्त होता है। वर्तमानकालीन लोक-साहित्य का पर्यवेक्षक हमारे इन पुरातन रचनाकारों के प्रति न केवल आभारी ही है वरन् वह स्पष्ट शब्दों में यह निर्णय दे सकता है कि उसका प्रागैतिहासिक काल के लोक का ज्ञान अथवा

अनुमान इसी बृहद् साहित्य से प्राप्त हो पाता है। युगों का आवर्तन-परिवर्तन इस महान साहित्य के अन्तस में ही संकलित एवम् संनिहित है।

इन सभी के अतिरिक्त पाली ग्रन्थों में, त्रिपिटकों में तथा जातक कथाओं में भी हमें असंख्य लोक-साहित्य का स्पष्ट दिग्दर्शन हो जाता है। जातक कथाओं, पाली ग्रन्थों एवम् त्रिपिटकों में जैन एवम् बौद्ध कालीन लोक, उनके रीति-रिवाज, संस्कार, उनकी परम्परायें एवम् उनका लोकपक्ष स्पष्ट होकर हमारे सामने उभर आता है। हमारे विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों के समान ये धार्मिक ग्रन्थ भले ही लोक-साहित्य न माने जायें परन्तु इनमें लोकोन्मुखी परम्परा तो स्पष्ट सामने आ उपस्थित होती है। सम्भवतः ही ऐसा कोई ग्रन्थ हो जिसमें हमें तत्कालीन लोक-धर्मी परम्परा का दर्शन न हो सके। परन्तु अधिकतर साहित्य में हमें लोक का दर्शन मिलता है। वास्तव में देखा जाये तो साहित्य का कोई भी अंग लोक-पक्ष से अछूता नहीं। प्रत्येक साहित्य का प्रत्येक अंग-प्रत्यंग ही लोक-पक्ष से आलोड़ित है परन्तु जिस साहित्य में स्पष्ट रूप से लोकधर्मी परम्परायें निहित हों वही लोक-साहित्य का विशुद्ध अंग माना जाना चाहिये। आज का युग वैज्ञानिक अर्थपोषण का युग कहा जा सकता है जिसमें लोक-पक्ष पूर्णरूपेण उभरा हुआ है। लोक-साहित्य एवम् संस्कृति के विभिन्न अंगों के पर्यवेक्षक आज के युग में विभिन्न रीतिनीतियों से अपने-अपने ढंग से पर्यवेक्षण कर रहे हैं। किस पर्यवेक्षक का ढंग अधिक वैज्ञानिक अथवा सर्वाधिक रूप से समृद्ध है इसका लेखा जोखा देना यहाँ हमारा दृष्टिकोण नहीं, यहाँ हमारा दृष्टिकोण तो केवल इस साहित्य की संकलन-परम्परा को किन महामानवों ने उत्तरोत्तर प्रगति दी है यह देखना अवश्य है।

ईसा की सातवीं शताब्दी के लगभग रस शास्त्र के चौदहवें आचार्य नागार्जुन ने अपने विभिन्न पदों में लोक-शैली की परिचर्या का उल्लेख किया

है। लोक-शैली की यह परिचर्या जिसे आज हम सम्मोहन, उच्चाटन, जादू-टोना अथवा इसी प्रकार के तंत्र-मंत्र मानते है —का प्रादुर्भाव इन्हीं विभिन्न सिद्धाचार्यों द्वारा हुआ है। नागार्जुन, गोरख, चरपट, चोरंगी, तंतिपा, जालन्धर एवम् तिलोपा आदि नाथ-सिद्ध-सम्प्रदाय के विभिन्न महायोगियों ने अपनी वाणी को तत्कालीन लोक-भाषा प्रदान कर एवम् उसमें विभिन्न लोक-साहित्य का सृजन कर देश एवम् राष्ट्र को समृद्धि प्रदान की जिनके कारण आज भी हम उनके विभिन्न पदों को लोक में लोकोक्तियों की भाँति प्रचलित पाते हैं और यदाकदा लोक के कण्ठ द्वारा उच्चारित होते देखते-सुनते हैं। इन नाथ-सिद्धों में गोरख सबसे अग्रणी एवम् लोकप्रिय माने गये हैं। उनका साहित्य विभिन्न भाषाओं में रूपांतरित भी मिलता है। गोरख स्वयं मराठी, गुजराती, पंजाबी अथवा मैथिली जानते थे या नहीं यह कह पाना तो कठिन है परन्तु उनकी वाणी विभिन्न लोक-भाषाओं का शृंगार बनी तथा विभिन्न प्रदेशों में लोक के कण्ठ का शृंगार बन मुखरित हुई। गोरख ने लोकहित के लिये यदि एक स्थान पर गूगा की माँ वांछल को गूगल देकर जीवन प्रदान किया तो लोक में प्रचलित हो गया कि यह उसका चमत्कार है परन्तु वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यदि देखा जाये तो यह एक लोकोपचार है क्योंकि गूगल के प्रभाव से ऋतु अवरोध समाप्त हो जाता है। इस प्रकार ये महापुरुष जो लोक द्वारा एक स्वर से महान मान लिये गये वास्तव में महान तो थे ही परन्तु अवतार नहीं। लोक में प्रत्येक महापुरुष को अवतार मान लेने की एक परम्परा रही है उसका ही यह प्रभाव कहा जा सकता है। गोरख की भाँति चरपट ने भी अपनी वाणी में विभिन्न लोकोपचारों का वर्णन किया है। कौन कह सकता है कि यह लोक में प्रचलित विभिन्न उपचार इन्हीं महानात्माओं की अद्वितीय देन हों।

फ़रीद, नानक, बुल्लेशाह, तुलसी, सूर, कबीर तथा मीरा आदि विभिन्न संत सूफी कवि हुये जो लोक में इतने लोकप्रिय हुये कि इनके विभिन्न काव्यांगों को लोक ने अपनी शैली में ढाल कर अपनी ही निजी वस्तु बना ली। फरीद शकरगंज का काव्य लोक की जिव्हा पर अठखेलियाँ करता हुआ विभिन्न नदी, घाटी, झील वन, पर्वत, एवम् रेगिस्तानों को पार करता हुआ राजस्थान में जा पहुँचेगा एवम् वहाँ के लोक के कण्ठ का सुगम श्रृंगार बनेगा यह कौन कह सकता है—

"कागा सब तन खाइयो चुन चुन खाइयो मास।
ये दो नैना मत खाइयो, पिया मिलन की आस।"

राजस्थान के लोक की जिह्वा इन पंक्तियों को जिस स्नेह एवम् अनुराग के साथ गाती है उसी स्नेह, अनुराग, एवम् भक्ति के साथ पंजाब का लोक फरीद की निम्न पंक्तियों का गुरु ग्रन्थ साहब में नित्य प्रति पाठ करता है—

'कागा कुरंग ढंडोलिया, चुरण-चुरण खाइयो मासु
यह दो नैना मत छोइयो, पिर देखरण की आसु।'

फरीद की भाँति नानक, कबीर, तुलसी, सूर, मीरा तथा बुल्लेशाह आदि सभी के काव्य को लोक ने रूपान्तरित कर लोक-काव्य में परिणित किया। इन संत कवियों की वाणी लोक के अन्तस की वाणी बन कर रही। वास्तव में इनके काव्य में तत्कालीन लोक-भावना का सही दिग्दर्शन हुआ जिसके कारण ये कवि लोकप्रिय हुये। इन महाकवियों ने विभिन्न लोक-छन्दों की भी सहायता ली। तत्कालीन लोक-गीतों की ही शैली में रचना की। विशेषतयः नानक ने तो सोहले, अलाहुणियाँ, बारहमाह, घोड़ी, सोहाग तथा काफी आदि विभिन्न लोक-छन्दों का उपयोग करके स्वयं को लोक के अन्तस्तल का कवि बना लिया था। बावन-अक्षरी तथा पट्टी आदि नानक की अपनी लोकोपयोगी विशेषता थी। नानक ने अपने इस लोक-काव्य के

प्रचार एवम् प्रसार का भी अत्यन्त ही लोकप्रिय ढंग अपनाया। भाई बाला तथा मर्दाना जो उनके साथ सदैव ही रहे उनकी वाणी को अत्यन्त ही रोचक ढंग से लोक-संगीत की स्वर लहरियों में आबद्ध करते थे तथा लोक में प्रचलित विभिन्न साजों पर उनकी वाणी को जन-जन के हृदय में पैठने देने का अवसर देते थे। लोक का हृदय नानक की सुगम लोक-वाणी को सुन गद्‌गद् हो जाता था और लोक उसे अपना ही स्वर एवम् भावना मानकर यदाकदा गुनगुना लिया करता था। कौन कह सकता है कि नानक की कमनीय लोकभावना का प्रतिपादन एवम् उनके स्वरों की सरल-तरल मन्दाकिनी का रसास्वादन करते हुये लोक-मानस अपनी सुधि-बुधि नहीं खो बैठता होगा। नानक ने अपने जीवन में विभिन्न यात्रायें की लोकभावनाओं का गहन एवम् आन्तरिक अध्ययन किया और सदैव ही उसने पाया कि लोक-मानस उसकी भावनाओं मे अपना स्वर मिला आलापने को उद्विग्न है। नानक मक्का गये जहाँ बड़े-बड़े मुल्लाओं से भेंट हुई, उनके साथ 'सिद्ध-गोष्टि' हुई और नानक ने उन्हें भी अपने ही रंग में रंग लिया, जिधर भी नानक गये उधर ही लोक-भावना की चर्चा उन्होंने की और वे एक स्वर से जन-जन के अन्तस के गायक,नायक बन बहुचर्चित एवम् लोक के परम श्रद्धास्पद बने। नानक की भाँति कबीर ने भी लोक-भाषा में एवम् लोक-शैली में अपनी काव्य-रचना की जिसके परिणाम स्वरूप कबीर भी लोक-कवि बन तत्कालीन लोक पर छा गये। आज भी होली के अवसर पर 'कबीर' का रंग अपनी निराली ही छटा बिखेरता है। रात्रि के ठण्डे प्रहर में जब कबीर के पदों की रागिनी अपनी भैरवी आलापती है तो लोक का अन्तस उल्लसित हो झूम उठता है। लोक की बात को अत्यंत ही सादे ढंग से कहकर उसमें रहस्यमयी चमत्कारिकता का दिग्दर्शन करा देना कबीर जैसे ही महा-पुरुष का कार्य था। कबीर की उलटबासियाँ आज भी जन-जन की जिह्वा

का श्रृंगार बनी हुई हैं। भिक्षुकों के गीतों में कबीर के गीत प्रायः अपना विशिष्ट स्थान रखते है। सीधे सादे शब्दों मे लोकमानस में तरंगित भावनाओं को लोक तक पहुँचा कर उसके रहस्य मे विचित्र ही सौन्दर्य उपस्थित कर देना कबीर जैसे ही लोक-कवि का कार्य था।

कबीर की भाँति अमीर खुसरो ने भी विभिन्न बोलियो एवम् भाषाओं में अपनी काव्य रचना की। हिन्दी, उर्दू तथा पंजाबी का प्रथम प्रणेता खुसरो आज भी जन-जन की जिह्वा पर, आबाल, वृद्ध. नर-नारी के कण्ठ पर तिरोहित है। उत्तर मे दक्षिण तक तथा पूर्व से पश्चिम तक खुसरो की पहेलियाँ, बुझारतें अथवा बुझौवल विभिन्न रूपों में रूपान्तरित हो प्रचलित हैं। खुसरो स्वयं भी यदि आज आ जाये तो उसे देखकर आश्चर्य होगा कि जिस पहेली की रचना उसने पंजाबी में की थी वही आज मराठी, बंगाली एवम् तामिल में किस प्रकार अनुवादित हो पहुँच गई है। मेरा विश्वास है कि बिना अनुवाद किये स्वयं ही लोक द्वारा अनुवादित हो जाने वाला महापुरुष यह खुसरो ही है। पहेलियों के अतिरिक्त खुसरो के सरल-तरल लोक गीत आज भी महिलाओं की महफ़िलों के श्रृंगार बने हुये हैं। श्रावण के झूले झूलती हुई महिलायें, आँगन में खेलते हुए बच्चे एवम् शिक्षा देते हुए वृद्धजन आज भी खुसरो की विभिन्न पंक्तियों को उल्लिखित किये बिना नहीं रह पाते।

चन्द बरदाई 'रासो' का लेखक यदि अपनी भाषा डिंगल न रखता तो सम्भवतः इतना लोकप्रिय न हो पाता, उसने जिस छन्द का उपयोग अपने काव्य में किया वह पंजाब का सर्वत्र प्रचलित लोक छन्द ही तो था। बरदाई की भाँति ही विभिन्न ऐसे कवि एवम् पंडित हुए जिन्होंने लोक-पक्ष को प्रश्रय दिया और लोक की जिह्वा का श्रृंगार बने।

गुरु अर्जुन देव सिखों के पंचम् गुरु को लोक - साहित्य के प्रथम संकलन कर्ता के रूप में देखकर किसे हर्ष न होगा। विभिन्न गुरुओं की गुरुवाणी, वभिन्न लोकप्रिय संतों की संतवाणी, विभिन्न सूफ़ी फ़कीरों के कलाम तथा विभिन्न लोक-कवियों के काव्य को सग्रहीत कर उसका सम्पादन करना तथा उसे क्रम देना गुरु अर्जुन का ही का ' था। सम्पादक गुरु अर्जुन देव जी ने सम्पूर्ण काव्य को संगीत के स्वरों में भी बांधा और जिस पदावली का जिस स्थान पर जैसा महत्त्व था उसके अनुसार उसे संगीत की पयस्विनी में प्रवाहित किया, जिस लोक कवि की जैसी लोक भावना थी उसके अनुसार उसकी भावना को तिरोहित करने में गुरु अर्जुन देव ने कोई कसर नहीं उठा रखी। लोक छन्दों में उन्होंने स्वयं भी रचना की तथा विभिन्न लोक-काव्यों का उन्नयन किया। गुरु ग्रन्थ साहब को यदि हम धार्मिक ग्रन्थ न मानें तो यह निश्चय ही कहा जा सकता है कि यह विभिन्न लोककवियों द्वारा प्रणीत लोक-काव्य का प्रथम लोक संगीतमय संकलन है। गुरु ग्रन्थ साहब का लोक-पक्ष अत्यन्त ही सबल एवम् भावना प्रधान है। सम्भवतः ही कोई ऐसा भारतीय होगा जो गुरु ग्रन्थ साहब में संकलित लोक-साहित्य के विभिन्न अंगों से परिचित न होगा। गुरु ग्रन्थ साहब में हमें घोड़ी, सोहले, लावां, बारह-माह, काफ़ियाँ, दोहड़े, अलाहुणियां, सबद, सबदी, लोकाख्यान तथा लोकोक्तियां इत्यादि सभी प्राप्त होती हैं। ग्रन्थ साहब संगीत बद्ध होने के कारण स्पष्ट प्रमाण है कि यह तत्कालीन लोक में प्रायः गाया जाता था। फ़रीद, कबीर, नामदेव, पीपा, रामानन्द, रविदास, धन्ना, जयदेव तथा सूरदास जैसे विभिन्न लोककवि ग्रन्थ साहब में एक ही स्थान पर संकलित हैं। ऐसे महान कवियों की लोक में प्रचलित वाणी को संकलित करने के लिए गुरु अर्जुन देव को न जाने कहां-कहां जाना पड़ा होगा और न जाने

कितना प्रयत्न करना पड़ा होगा। वे लोक-साहित्य के उन्नायक थे, यह उनके इस महत्कार्य से स्वयंसिद्ध है।

पंजाब में दामोदर नामक कवि ने सर्वप्रथम 'हीर' नामक लोक-काव्य की रचना की। हीर एक प्रीति कथा है जो पजाब में सर्वाधिक प्रचलित है। एवम् विभिन्न लोक कवियों ने अपने-अपने ढंग से इस लोक कथा को काव्य-बद्ध किया। कौन कह सकता है कि दामोदर की आंखों देखी यह घटना लोक में इतनी प्रचलित हो जायेगी कि दामोदर के अतिरिक्त वारिस शाह, मुकबल, गोकुलचन्द, कान्हसिंह, शादीराम, कालीदास एवम् अन्य बीसयों लोक कवि इस लोक कथा को अपने-अपने काव्य सौष्ठव द्वारा शृंगारेंगे। कहीं बैंत, कहीं काफ़ी, कहीं दोहे, कहीं बोलियां, कहीं लड़ीदार बलियों में हीर-रांझा की यह कथा सर्वत्र पंजाब में बिखरी पड़ी है। असंख्य पंक्तियां इन दो स्नेहियों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित कर चुकी हैं और न जानें कितने पृष्ठ और इसके प्रति अपना अभिनन्दन प्रस्तुत करेंगे।

हीर रांझा की भाँति ही सस्सी-पुन्नू, सोहनी-महीवाल, मिरज़ा-साहिबाँ, कीमा-मलकी, पूरण भगत, परतापी-किरपाल सिंह तथा बुग्गा.बसन्ती आदि विभिन्न प्रीति-कथायें लोक-कवियों का शृंगार बनी हैं। इनके अतिरिक्त भी विभिन्न लोक-कथायें विभिन्न लोक-कवियों का शृंगार बन अवतरित हुई।

लोक-साहित्य के पर्यवेक्षण का कार्य १९वीं शताब्दी के आरम्भ में अंग्रेज़ विद्वानों द्वारा प्रारम्भ हुआ। इन विद्वानों ने विभिन्न प्रकार से प्रर्यवे-क्षण कर इनकी मीसांसा की। इबट्सन, ईलियट, ग्राह्म बेली, क्रुक, कैरी, ग्रीयर्सन, ग्रोवर, टिसडल, टैम्पल, थौरेण्टन, न्यूटन, पेरी, फैगन, बर्टन, ब्लॉक, ज्वेल्ज़, ब्रिग्ज़, बीम्ज़, मैकेन्ज़ी, मैकोनेकी, राबर्ट मेजर, रेयर्स, रोज़, लाइटनर, स्टार्की, स्टील, स्विन्नरटन, तथा हेनपाल आदि विभिन्न विदेशी

विद्वानों ने इस क्षेत्र में कार्य किये है। भारतीय विद्वानों में मौलाना अब्दुल गफूर, गंगादत्त उप्रेती, प्रोफेसर पी. डी. गुने, तारा दत्त गैरोला, सुनीति कुमार चटर्जी, डा० बनारसी दास जैन, कृष्णगोपाल भण्डारकर, एम. एस. रन्धावा, सन्तराम बी. ए., डा० उदयनारायण तिवारी, वासुदेव शरण अग्रवाल, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, अगर चन्द नाहटा, बैजनाथ सिंह विनोद, डा० श्याम परमार, डा० चिन्तामणि उपाध्याय, लक्ष्मी बाई चूड़ावत, शिव सहाय चतुर्वेदी, डा० श्यामाचरण दुबे, डा० सत्येन्द्र, सूर्यकरण पारीख, सूर्य नारायण व्यास, डा० सुरेश अवस्थी, तथा इन पंक्तियों के लेखक ने इस दिशा में विशिष्ट कार्य किया है।

लोक-साहित्य के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवम् उसका पर्यवेक्षण कार्य करने मे गुजरात के श्री झवेरचन्द मेघाणी, याग्निक पण्डया, मधुभाई पटेल, रणजीत राय मेहता, एस. एन. शाह, आदि का विशेष कार्य है। इसी प्रकार बंगला के आफ़ताबउद्दीन, आसुतोष भट्टाचार्य, कांगाल हरिनाथ, गुरुप्रसाद दत्त, गिरीशचन्द्र सैन, कालिचरण चक्रवर्ती, जासिमुद्दीन, अवनीन्द्र ठाकुर, रवीन्द्र ठाकुर, अक्षय कुमार दत्त, भोलानाथ दत्त, सुशील कुमार देव, नरेन्द्र मजुमदार, हरिदास पालित, मोहित लाल मजुमदार, मनसूरुद्दीन, मणीन्द्र बसु दक्षिणारजन मजुमदार, दुर्गावति मुखोपाध्याय, चारुचन्द बन्धोपाध्याय, राखालदास, मणिलाल, नीलकांत सरस्वती, पवित्र सरकार, दिनेशचन्द्र सैन, सुकुमार सैन, क्षितिमोहन सैन, तथा एनामुल हक आदि ने विशिष्ट कार्य किया है। मराठी में अनुसुईया भागवत, कमला बाई देशपाण्डे, काका कालेलकर, पा. श्र. गोरे, मालती दांडेकर, बि. वा. जोशी, साने गुरु, तथा नारायण मोरेश्वर खरे का कार्य विशिष्ट है। उर्दू में भी लोक-साहित्य का कार्य कम नहीं हुआ। श्री संन्त राम बी. ए., रामसरण दास एडवोकेट, होतू राम, तथा देवेन्द्र सत्यार्थी का कार्य उल्लेखनीय है। केरल में प्रेमनाथवैट्टियर, तथा

मद्रास के ई. कृष्ण अय्यर, आन्ध्र, के श्री के. एस. कारन्त, मणिपुर की श्रीमती विमला रेना, उडीसा के भवग्राही मित्र, गंगाधर मोहन्ती आदि का कार्य प्रशंसनीय एवम् सराहनीय है।

पिछले कुछ वर्षो मे अखिल भारतीय लोक-संस्कृति सम्मेलन को डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय ने इलाहाबाद में संयोजित किया, जिसके तीन अधिवेशन १९५८ इलाहाबाद, १९५९ बम्बई, १९६१ उज्जैन में हुए। किन्तु तीनों अधिवेशनों में सिवा विद्वानों के पत्र-पठन एवम् रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के प्रदर्शन के अतिरिक्त कोई भी ठोस कदम इस दिशा मे नही उठाया गया।

लोक-साहित्य के पर्यवेक्षण का कार्य मात्र उसके संकलन से ही पूरा नहीं हो जाता वरन् इसके लिए विद्वानों मे परिचर्चा, काल निर्णय, इतिहास-आकलन, तथा तत्कालीन भाषा एवम् रीति-रिवाज एवम् परम्पराओं का शोधकार्य आवश्यक है। इस कार्य के लिए शासन का सहयोग सर्वाधिक वांच्छनीय है। इन पंक्तियों के लेखक ने जनवरी १९५७ में शासन को एक योजना अखिल भारतीय स्तर पर फ़ोक-लोर-अकादमी के निर्माण के लिए एवम् भाषायी पर्यवेक्षण के लिए प्रस्तुत की थी। शासन ने संगीत नाटक अकादमी को तत्संबंधी एक संगोष्टि करने के लिए भी कहा। किन्तु यह संगोष्टि आज तक भी शासकीय स्तर पर संभव न हो सकी। पिछले दिनों उज्जैन में जब अधिवेशन हुआ तो वहाँ विद्वानों द्वारा यह एकमत से स्वीकार किया गया कि इस प्रकार की संस्था अथवा अकादमी राजधानी में होना परमावश्यक है। बिना इसके किसी प्रकार का भी ठोस शोधकार्य संभव नहीं होगा।

अब वह समय आ गया है जब भारतीय विद्वानों को संकलित लोक-साहित्य अथवा लोक-सामग्री से उसे नये परिधान देकर संजोना चाहिये एवम् इसे लोकोपकारी बनाना चाहिये। जिससे कि इस वृहद् संकलित सामग्री का सदुपयोग हो सके।

प्रयोग के रूप में भारतीय नाट्य संघ, नई दिल्ली के तत्वावधान में इन पंक्तियों के लेखक तथा श्री मोहन जी उप्रेती ने लोक-नाटकों पर एक नया प्रयोग किया, जिसमें इसका रिवाईवल करने का यत्न किया। बगाल की यात्रा, उत्तर प्रदेश की नौटंकी और मध्य प्रदेश के माच में एक नया अध्याय इस प्रयोग से जुड़ा है। इसी प्रकार भारतीय नाट्य संघ के तत्वावधान में एक नया प्रयोग 'थियेटर क्राफ्ट्स वर्क शाप' स्थापित करके किया जा रहा है जिसमें भारतीय लोकनाट्य सम्बन्धी सामग्री—कठपुतलियाँ, मुखौटे, वस्त्रा-भूषण, पुतले, आदि का आधुनिक ढंग से पुर्ननिर्माण किया जा रहा है। इस कार्य में श्री इन्दर राज़दान प्रयत्नशील हैं। इन सभी प्रयोगों के पीछे श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय की आशिष एवम् डॉ० सुरेश अवस्थी का मार्गदर्शन विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

केन्द्रीय फ़ोकलोर अकादमी की आवश्यकता

सर्व-विदित है कि गत कुछ समय से भारतीय जनपदों में लोक-साहित्य-पर्यवेक्षण का कार्य गति-शील हुआ है। यह कार्य वास्तव मे अत्यावश्यक एवं महत्त्वशील है, परन्तु इस कार्य को प्रायः फुटकर रूप से ही किया गया है। यदि इस कार्य को फुटकर या व्यक्तिगत रूप से न करके योजना-बद्ध रूप से किया जाये तो निश्चय ही हम अपने साहित्य, संस्कृति, इतिहास एवं समाज की अतीव सेवा कर सकेंगे। आज का युग हमसे माँग करता है कि हम अपने लोक के अन्तस की पीड़ा, वेदना एवं उसकी अर्न्तनिहित भावनाओं को भली-भाँति समझें, उनका प्रतिपादन करें, उनका निस्तार करें और अन्ततः उसे दूर कर सही और सच्चे अर्थों में लोक-राज की स्थापना में साहित्यिक के कर्त्तव्यों को पहचान कर जन-जन में और लोक-अन्तस में पैठ जाने वाले लोक-गीतों, लोक-नृत्यों, लोक-कथाओं, लोक-कलाओं, लोक-नाट्यों तथा उनके

भेदों में आधुनिक लोक-रंग देकर उसे वर्तमान लोक-समाज एवं लोक-राज की स्थापना के योग्य बनायें। हमारा कर्त्तव्य केवल लोक-साहित्य संग्रह करने से ही पूरा नहीं हो जाता, केवल उस पर लेखादि लिखने पर ही सम्पूर्ण नहीं होता, वरन् हमें उनकी उत्पत्ति, उनके प्रकार, उनका वर्गीकरण, उनकी ध्वनियें उनका काल निर्णय और उनका सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा साहित्यिक महत्त्व देखते हुए नये साँचे में ढालना चाहिये जिससे वे आज के युग के लिये लाभकारी एवं लोक-राज तथा स्वस्थ्य समाज की पुनर्स्थापना में सहायक हो सकें तथा राष्ट्र के लिये हितकारी सिद्ध होकर स्वस्थ्य विचार प्रदान कर सकें। लोक-साहित्य-संग्रह, उसके पर्यवेक्षण एवं उन पर कार्य करने के सम्बन्ध में विद्वानों के अनेक मत पठनीय हैं, जिन्हें यहाँ दिये बिना हम आगे नहीं बढ़ पायेंगे। कुछ विचार देखिये :—

"मुझे मध्यभारत का इतिहास लिखने में राजस्थानी लोक-गीतों से पर्याप्त सहायता मिली"

—सर जॉन मालकम

श्री० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा जी ने भी उपरोक्त मत की पुष्टि की है, उन्हें भी इतिहास की पर्याप्त कड़ियाँ लोक-साहित्य से ही प्राप्त हुईं। राजस्थानी, बुन्देली तथा भोजपुरी में तो कुछ वीरगाथायें भी प्राप्त हुई हैं। हाल ही में मालवी की भी एक पद्य-बद्ध वीरगाथा प्राप्त हुई है जिससे यहाँ के इतिहास पर एक विशेष प्रभाव पड़ा। लोक-साहित्य का अध्ययन यों आवश्यक है कि इतिहास के अध्ययन का वह प्राण है। धार्मिक और सांस्कृतिक धारणायें, व्यवहारिक-पारिवारिक-सामाजिक रीति-रिवाज, पहनावे, मान्यतायें धारणायें तथा कई ऐसी बातें हैं जो मानी गई हैं—वे लोक-साहित्य में ही भरी पड़ी हैं। यही नहीं, शब्दों की उत्पत्ति तथा उनके भेदोपभेदों को जानने के लिये लोक-साहित्य का संग्रहित होकर उन पर सुन्दर ठोस कार्य किया

जाना इसलिये भी आवश्यक है क्योंकि इससे भाषाओं के व्युत्पत्ति कोषों की रचना हो सकेगी। श्री टर्नर के "ए कम्परेटिव इटिमॉलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ नेपालीज़ लेंगुएज" जैसे कोष तय्यार करने का अब युग आगया है।

दक्खिनी हिन्दी पर पर्याप्त प्रकाश डालना आवश्यक मान कर श्री विनयमोहन शर्मा ने अपने एक लेख में लोक-साहित्य संग्रह को तथा उस पर ठोस कार्य करने को आवश्यक माना है। यही नहीं आर्य और द्रविड़ भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन करते समय श्री विनय मोहन शर्मा ने अनेक ऐसे शब्द दिये हैं जो आर्य भाषाओं और द्रविड़ भाषाओं में एक से हैं; अन्त में वे कहते हैं—"इससे यह सन्देह होता है कि कहीं इस भाषा को शुद्ध तामिल वंश की मान कर भूल तो नहीं की गई, इसीलिये नये सिरे से भारतीय भाषाओं का सर्वे का कार्य प्रारम्भ करना आवश्यक है।

उपरोक्त विभिन्न मतों के प्रकाश में हम यह निर्णय तो निश्चय दे सकते है कि लोक-साहित्य-पर्यवेक्षण का कार्य भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् अब पूर्ण-रूपेण आवश्यक होगया है। हमें इसका पर्यवेक्षण कर इसे गति देनी चाहिये जिससे आधुनिक समाज को, संस्कृति को तथा नवीन योजनाओं को बल मिले एवं उन्हें पूर्ण करने में लोक की जिव्हा का परम्परागत सहयोग प्राप्त हो सके।

आवश्यक है कि शासन तथा विद्वज्जन इस कार्य को पूर्ण करने में पूरा-पूरा सहयोग प्रदान करें। शासन का सहयोग एवं कर्त्तव्य केवल अर्थ प्रदान करने से ही पूर्ण नहीं होता वरन् हम शासन से यह भी कामना करते हैं कि वह इस दिशा में अपनी पूरी-पूरी रुचि भी प्रदर्शित करे जिससे पर्यवेक्षकों को उत्साह प्राप्त होता रहे और वे इस परमावश्यक कार्य को भली-भांति पूर्ण भी कर सकें।

पर्यवेक्षण—नवीन योजना

मैं इस कार्य के हेतु निम्न योजना प्रस्तुत करता हूँ :—

१. लोक-गीत—१. संग्रह २. वर्गीकरण ३. उत्पत्ति ४. काल-निर्णय ५. स्वर-लिपि ६. ध्वनि-आलेखन ७. आधुनिकरण ८. गायक का चित्र ९. गीत के वाद्य १० तुलनात्मक अध्ययन ११. प्रदर्शन।

२. लोक-कथा—१. संग्रह २. वर्गीकरण ३. उत्पत्ति ४. काल-निर्णय ५. आधुनिकरण ६. नाटकीकरण ७. चित्र ८. तुलनात्मक अध्ययन ९. प्रदर्शन।

३. लोकोक्ति— १. संग्रह २. वर्गीकरण ३. उत्पत्ति ४. काल-निर्णय ५. आधुनिक उपयोग ६. चित्र ७. तुलनात्मक अध्ययन ८. प्रदर्शन।

४. लोक-नृत्य—१. नृत्यों में प्रयुक्त गीतों का संग्रह २. नृत्यों का वर्गीकरण ३. उत्पत्ति ४. काल-निर्णय ५. स्वरलिपि ६. नृत्य का ढंग ७. ध्वनि-आलेखन ८. प्रतिबिम्वालेखन ९. नृत्यकों के चित्र १०. चल-चित्र ११. महत्त्व १२. आधुनिकरण १३. तुलनात्मक अध्ययन १४. प्रदर्शन।

५. लोक-कला—१. संग्रह २. वर्गीकरण ३. उत्पत्ति ४. काल-निर्णय ५. चित्रालेखन ६. प्रतिबिम्बालेखन ७. महत्त्व ८. आधुनिकरण ९. प्रदर्शन १०. तुलनात्मक अध्ययन।

६. लोक-वाद्य—१. संग्रह २. वर्गीकरण ३. उत्पत्ति ४. काल-निर्णय ५. चित्रालेखन ६. ध्वनि-आलेखन ७. महत्त्व ८. स्वरलिपि ९. तुलनात्मक अध्ययन १०. वादक का

चित्र ११. आधुनिकरण १२. प्रदर्शन ।

७. लोक-परंपरायें—१. संग्रह २. वर्गीकरण ३. उत्पत्ति ४. काल-निर्णय ५. महत्त्व ६. आधुनिकरण ७. तुलनात्मक अध्ययन ८. प्रदर्शन ।

८. लोकोत्सव—१. संग्रह २. वर्गीकरण ३. उत्पत्ति ४ काल-निर्णय ५. महत्त्व ६; आधुनिकरण ७. तुलनात्मक अध्ययन ८. चित्रा-लेखन ९. चलचित्रालेखन १०. प्रदर्शन ।

९. लोक-नाट्य—१. संग्रह २. वर्गीकरण ३. उत्पत्ति ४. कालनिर्णय ५. स्वरलिपि ६. नाट्य परंपरा ७. ध्वनि-अलेखन ८. चित्रालेखन ९. आधुनिकरण १०. तुलनात्मक अध्ययन ११. प्रदर्शन ।

१०. लोक-कवि अथवा—१. संग्रह २. वर्गीकरण ३. उत्पत्ति ४. काल-
लोक-काव्य [छपित] निर्णय ५. आधुनिकरण ६. चित्रा-लेखन ७. तुलनात्मक अध्ययन ८. प्रदर्शन ।

११. लोक-इतिहास—प्रदेश, ग्राम्य, भिन्न स्थानों के अथवा लोक-सम्बन्धी भिन्न-भिन्न इतिहास का संग्रह तथा उसका पर्यवेक्षणीय निर्णय एवम् आधुनिक दशा ।

उपरोक्त पर्यवेक्षण के वे अंग हैं जिन पर हमें भविष्य में कार्य करना है। इस कार्य को पूर्ण करने में प्रत्येक भारतीय जनपद को पाँच वर्ष का समय लगेगा। पाँच वर्ष के पश्चात् हमारे समक्ष बोली, लिपि, साहित्य, संस्कृति तथा परंपराओं आदि की सम्पूर्ण खोज-पूर्ण रिपोर्ट तैयार हो जायेगी और हमें यह भी ज्ञात हो जायेगा कि राष्ट्रीय भावनाओं से पूरित निर्माणात्मक योजनाओं को फलीभूत करने में हम अपने इस लोक-साहित्य द्वारा कितने सफल हो सकते है। विदेश में इस प्रकार का कार्य पर्याप्त मात्रा में हो चुका है। हमें अपने देश में इस कार्य को पूर्ण करने की परमावश्यकता है।

उपरोक्त योजना वृहद् एवम् महत्त्वशील है, अतएव हमारे लिये सर्वाधिक आवश्यक है कि हम शासन से माँग करें कि वह "संगीत-नाटक-अकादमी", "ललित-कला-अकादमी" तथा "साहित्य-अकादमी" की भाँति ही "फ़ोक-लोर अकादमी" की स्थापना केन्द्र में करे तथा अपने तत्वावधान में भारतीय जन-पदों का पर्यवेक्षण कार्य करे। यह पर्यवेक्षण कार्य केवल इसलिये ही आवश्यक नहीं है कि हमें इससे भाषागत अनुसंधान का नया दृष्टिकोण मिलता है, वरन् इसलिये भी आवश्यक है कि इस प्रकार की योजनायें तथा पर्यवेक्षण हमें एक नई दिशा प्रदान करेंगे।

केन्द्रीय फ़ोक-लोर-अकादमी : संगठन विधान

विभिन्न जनपदीय संयोजक

प्रत्येक जनपद के लिये आवश्यक सामग्री

१. मूवी कैमरा, २. स्टिल कैमरा (रोली-कार्ड अथवा रोली फ्लेक्स) ३. टेपी-रिकार्डर, ४. स्टेशनरी, ५. टाइप-राइटर

जनपदीय योजना पूरक

१. संयोजक, २. सहकारी पर्यवेक्षक ८. (अ. सँगीतज्ञ, ब. मंच विशेषज्ञ स. नृत्यकार, द. संग्रहकार ५) ३. फोटोग्राफर-कम-टेक्नीशियन ४. तूलिका-कार ५. रसोईया, भृत्य।

प्रत्येक जनपद के लिए पर्यवेक्षण-काल

२॥ वर्ष में प्राथमिक साहित्य का संग्रह

२॥ वर्ष में संपादन लेखन तथा शोध कार्य

जनपदीप व्यय-पत्रक

संयोजक	५००) रु. प्रतिमास		६००० रु. प्रति वर्ष
सहकारी पर्यवेक्षक	४००) रु. ,,	८	३८४०० रु०. ,,
फोटोग्राफरकम-टेक्नीशियन	३००) रु. ,,		३६०० रु. ,,
तूलिकाकार	३००) रु. ,,		३६०० रु. ,,
रसोइया व भृत्य	१००) रु. ,,		१२०० रु. ,,
			योग ५२८०० रु. प्रतिवर्ष
आवश्यक सामग्री			३७०० रु. ,,
अन्य			३५०० रु. ,,
			कुल योग ६०००० रु. प्रतिवर्ष
पांच वर्ष मे प्रत्येक जनपद पर व्यय			३००००० रु.

कुल मिलाकर हम भारत को विभिन्न बारह जनपदों में विभाजित कर सकते हैं। इन सभी जनपदों पर लोक-साहित्य सम्बन्धी शोध होने पर हमें विभिन्न भाषायी समस्याओं का समाधान प्राप्त होगा और हमें लगभग सम्पूर्ण भारत में अनेकता में एकरूपता स्पष्ट परिलक्षित होगी। इस एक-रूपता के द्वारा ही हम राष्ट्रीय एकीकरण में पूर्णरूपेण सफल हो पायेंगे, जिससे हमारा भविष्य ज्वाजल्यमान होगा और हम आने वाले युग में स्वयं को सांस्कृतिक एवम् साहित्यिक रूप से न केवल सम्पन्न ही पायेंगे वरन् यह भी अनुभव कर पायेंगे कि जहां हमारा अतीत गौरवशाली था वहां हमारा भविष्य भी परमोज्वल है।

मैं केन्द्रीय सांस्कृतिक मंत्रालय से एवम् उसके शासन से अनुरोध करूँगा कि वे इस योजना पर ध्यान दे शीघ्रातिशीघ्र ध्यान देकर योजना को कार्यान्वित करने में ठोस कदम उठायें तथा देश को अपने सांस्कृतिक इतिहास में एक नए एवम् परमोज्वल अध्याय की वृद्धि करने दें।

अंग्रेजी में हुये पंजाबी सम्बन्धी कार्य की सूची

पंजाब एवम् पंजाबी लोक भाषा तथा लोक साहित्य का संकलन काल पर्याप्त लम्बा है, जिसका हमने विस्तृत वर्णन पहले किया है। नीचे हम उन महानुभावों की सूची देना उपयुक्त समझते हैं जिन्होंने पंजाबी सम्बन्धी विभिन्न पर्यवेक्षण एवम् सम्पादन आदि किये हैं। अंग्रेजी में पंजाबी सम्बन्धी हुये कार्य की सूची निम्न है—

अब्दुलगफूर, मौलाना	ए कम्प्लीट डिक्शनरी आफ दी टर्म्स बाय दी क्रिमिनल ट्राइब्ज आफ दी पंजाब, १८७९.
इबट्सन	पंजाब कास्ट्स १९१६.
ईलियट, एच० एम०	मैमोरीज आफ दी हिस्ट्री, फोक लोर एण्ड दी डिस्ट्रीब्यूशन आफ दी रेसेज आफ नार्थ वेस्ट फ्रण्टियर प्राविन्सेज आफ इण्डिया, १८६९,
उपरेत्ती, गंगादत्त	प्रावर्ब्स एण्ड फोक-लोर आफ कुमायूं एण्ड गढ़वाल १८९२.
	मार्शल राइम्स आफ कुमाऊं,
	मुलतानी ग्लासरी, १९२१
कमिंग, टी० एफ० तथा ग्राहम बेली	पंजाबी मैन्यूअल ग्रामर, १९१२
क्रुक, डब्ल्यू,	रिलीजन एण्ड फोकलोर आफ नार्दर्न इण्डिया १९२६
	ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स आफ नार्थ वेस्ट फ्रण्टियर प्राविन्सेज आफ इण्डिया, १९३०.

केरी	ए ग्रामर आफ पंजाबी लैंग्वेज, १८१२
ग्राहम बेली	पंजाबी ग्रामर १९०४.
	ए पंजाबी फोनेटिक रीडर, १९१४.
ग्रीअर्सन, जी० ए०	टू वर्जन्स आफ दी साँग्स आफ गोपीचन्द, १८८५.
	ऑन फोनोलॉजी आफ मॉडर्न इण्डो आर्यन वर्नेक्यूलर्स १९९५-९६
	दी पापूलर लिटरेचर आफ नार्दर्न इण्डिया, बुलेटिन आफ दी स्कूल आफ आरियण्टल स्टडीज, लन्दन, १९२०.
ग्रीअर्सन	लिग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया, ११ भाग, पंजाबी सम्बन्धी ९ वां भाग, प्रथम अध्याय, १८९४-१९२७.
	माडर्न इण्डोआर्यन वर्नेक्यूलर्स, १९३१.
गुने, प्रो० पी० डी०	इण्ट्रोडक्शन टू कम्परेटिव फिलालाजी, १९१८.
गैरोला, तारादत्त	फोकलोर आफ गढ़वाल, विश्वभारती त्रैमासिक, अंक ४, १९२६.
गोवर, जी०	हिमालियन विलेज,
चटर्जी, सुनीतिकुमार	इण्डो आर्यन एण्ड हिन्दी, १९४२.
जवाहरसिंह, मुन्शी	ए वाक्यूबलरी आफ टू थाउजण्ड वर्ड्स फ्राम इंग्लिश इण्टू पंजाबी.
जैन, डा० बनारसीदास	लुधियाना, फोनेटिक रीडर, १९३४.
,, ,,	फोनोलाजी आफ़ पंजाबी, १९३४.
टिजडल, मेजर	दी पंजाबी लैंग्वेज, १८८९.
टेम्पल, आर० सी०	दी लीजेण्ड्स आफ दी पंजाब, १८८५.

थारेण्टन, [टी० एस०	ए हैण्डबुक आफ लाहौर, १८२७.
धीर, नरेन्द्र	न्यू पाथ टू लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया, १९५७, तथा विभिन्न लेख आदि,
	इवाल्यूशन आफ पंजाबी लैंग्वेज, १९६०
	एन इण्ट्रोडक्शन टु स्वाँग: ए पजाबी फोक ड्रामा, १९६२.
न्यूटन, जान	ए ग्रामर आफ दी पंजाबी लैंग्वेज, १८५१,
न्यूटन, ई० पी०	पंजाबी ग्रामर, १८९८.
,, ,,	ए गाइड टू पंजाबी, १८९६.
नीडहमसट, राबर्ट	लिंग्विस्टिक एण्ड आरियण्टल ऐसेज,१८४६.
पेरी	हिन्दुस्तानी बोलियों पर अंग्रेजी में लेख, १८५३.
फैगन	हिसार गिजेटियर, १८९८.
बहेल, परमानन्द	इजेक्टिव आफ मुलतानी, १९२४.
बर्टन, आर० एफ०	सिन्ध एण्ड रेसेज दैट इनहैबिट इन दी वैली आफ इण्डस, १८५१.
बर्टन,	सिन्ध रीविजिटेड, १८५१.
ब्लाक, ज्वेल्ज	इण्डोआर्यन
ब्रिग्ज, जी० डब्ल्यू०	गोरखनाथ एण्ड कनफटा योगीज, १९३८.
बीम्ज, जान	ए कम्परेटिव ग्रामर आफ दी माडर्न एरियन लैंग्वेजेज आफ इण्डिया
भण्डारकर, कृष्णगोपाल	विलसन फिलालाजीकल लैक्चर्स, १८७७-१९१४.
भण्डारी, एन० एस०	स्नो बालज आफ गढ़वाल
माहियासिंह	दी पंजाबी डिक्शनरी, १८९५.

मेकजी, डोनाल्ड. ए०	इण्डियन ऐग्रीकल्चर प्रावर्ब्स आफ पंजाब, १८६०.
मोहनसिंह, डाक्टर	गोरखनाथ एण्ड मिडियेवल हिन्दू मिस्टिसीज्म, १६३८.
	ए शार्ट हिस्ट्री आफ पंजाबी लिटरेचर, १६३८.
राबर्ट, मेजर	ए ग्रामर आफ पंजाबी लैंग्वेज, १८३८.
रामकृष्ण, लाला	पंजाबी सूफी पोयट्स,
रन्धावा, एम० एस०	कांगड़ा फोक सांग्स, १६५२.
	हरियाना फोक साँग्स, १६५२.
	काँगडा वैली पेंटिंग्ज
	कुलूवैली फोक साँग्स
रेयर्ज, एम०	इंग्लिश पंजाबी डिक्शनरी, १८२६
रोज, एच० ए०	ए ग्लासरी आफ दी ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स आफ दी पंजाब एण्ड नार्थ वैस्ट फ्रण्टियर प्राविन्सेज आफ इण्डिया, १६१६.
लाइटनर	हिस्ट्री आफ इण्डोजीनस एजूकेशन इन दी पंजाब.
वर्मा, सिद्धेश्वर	लहिंदी प्रोनाउन्सियेशन्स.
शालिगराम	एग्लो गुरुमुखी डिक्शनरी, १८६७
सत्यार्थी, देवेन्द्र	मीट माई प्यूपल, १६५२
	तथा माडर्न रिव्यू, काण्टेम्परेरी इण्डिया, एवम् ट्रिब्यून मे प्रकाशित विभिन्न लेखादि
स्टारकी, कैप्टन	डिक्शनरी आफ इंगलिश एण्ड पंजाबी, १८४६
स्टील, एफ० ए०	टेल्स आफ दी पंजाब, १८६४
स्विन्नरटन, सी०	रोमाण्टिक टेल्स फ्राम दी पंजाब, १६०३
सेठ, प्राणनाथ	कुरुक्षेत्र एवम् विभिन्न पत्रो में लेखादि

हेनप्राल, आर० सी० दी लीजेण्ड्स आफ दी पंजाब, १८४५

हिन्दी-पंजाबी में हुये पंजाबी सम्बंधी कार्य की सूची

ऊपर हमने अंग्रेजी में हुये पंजाबी सम्बन्धी शोधकार्य की संक्षिप्त सूची दी है। अब पंजाबी, उर्दू तथा हिन्दा में हुये विभिन्न पंजाबी लोक साहित्य सम्बन्धी शोध-ग्रन्थों की सूची दी जाती है:—

अजायब चित्रकार	फुल्लां भरी चुंगेर, १९५९, पंजाबी, रूरल पब्लिशर्ज लुधियाना तथा विभिन्न लेखादि।
	'साहित्य समाचार', पंजाबी मासिक, लुधियाना,
अमृता प्रीतम	'पंजाब दी आवाज', पंजाबी, नवयुग पब्लीशर्ज, दिल्ली १९५२,
	मौली ते मेंहदी, पंजाबी, नवयुग पब्लीशर्ज, दिल्ली १९५५
अवतारसिंह दिलेर	अड्डी-टप्पा, १९५२, पंजाबी, पंजाबी लोक-गीत वणतर ते विकास, पंजाबी, ५४
इन्द्रसिंह चक्रवर्ती	'जागृति' चण्डीगढ़ हिन्दी पंजाबी में छपित विभिन्न लेख
उत्तमसिंह तेज	रंगरंगीले गीत अमृतसर, हिन्दी, १९४९; पंजाबी १९४८
करतारसिंह सम्पादक	'जागृति' पंजाबी चण्डीगढ़
करतार सिंह दाखा	पंजाबी हिन्दी दा टाकरा, पंजाबी, १९५२
करतार सिंह दुग्गल	विभिन्न हिन्दी-पंजाबी पत्रों में प्रकाशित लेख
करतारसिंह समशेर	नीली ते रावी, पंजाबी, पंजाबी साहित्य एकादमी, लुधियाना; १९५९
	जीऊंदी दुनियां; १९४१; पंजाबी

करतारसिंह शमशेर	पंजाबी लोकगीत, हिन्दी, १९४३
	नचदी जवानी, पंजाबी, १९५९
किशन चन्द मोंगा	रंगबिरंगे गीत, हिन्दी, १९४६, अमृतसर
गुरुदित्त सिंह ज्ञानी	पंजाबी दे विकास दा इतिहास, पंजाबी
गोपालसिंह दर्दी	पंजाबी साहित्य दा इतिहास, उर्दू, १९४६
गंडासिंह प्रो०	पंजाबी लिपी दी समर्था, पंजाबी, १९५१
जी० बी० सिंह	गुरुमुखी लिपी दा जनम ते विकास, पंजाबी
जी० बी० सिंह	गुरुमुखी लिपी दे जनम ते विचार, पंजाबी
जोधसिंह प्रिंसीपल	गुरुमुखी लिपी, पंजाबी, १९५२
दुनीचन्द लला	हिन्दी-पंजाबी, भाषा-विज्ञान, पंजाबी, १९२५
देवेन्द्र सत्यार्थी	गिद्धा, पजाबी, १९३६, जनता, जनता लाहौर
	दीवा बले सारी रात, पंजाबी, १९४१, लाहौर बुक शौप
	मैं हूं खानाबदोश, उर्दू १९४१
	चट्टान से पूछ लो, उर्दू
	गाये जा हिन्दुस्तान उर्दू १९४६
	धीरे बहो गंगा, हिन्दी, १९४८
	धरती गाती है, हिन्दी, १९४८
	बेला फूले आधीरात, हिन्दी, १९४९
नरेन्द्र धीर	मैं धरती पंजाब की, हिन्दी, १९५४ द्वि० सं० १९५६ तृतीय संस्करण, १९५८, साहित्य संगम लुधियाना,
	मैं धरती पंजाब दी, पंजाबी . लाहौर बुक लुधियाना, १९५९
	धरती मेरी बोलती, हिन्दी, हिन्दी सदन, दिल्ली १९५९

नरेन्द्र धीर	धरती मेरी बोलदी, पंजाबी, लाहौर बुक शाप, लुधियाना
	मैं धरती पंजाब की, उर्दू, जमा ए-तुल-उलेमा-ए-हिन्द, १९६०
	नाथ-सिद्ध-साहित्य, हिन्दी, १९५९
	नाथ-सिद्ध साहित्त, पंजाबी, १९६१
	फोक लोर अकादमी द्वारा प्रकाशित विभिन्न परिपत्र १९५७ और उसके बाद
	हिमानी लोक-साहित्य, हिन्दी, नीरजा प्रकाशन, लुधियाना १९६१
	भारतीय लोक-नाट्य, हिन्दी, १९६२
	अन्तर्राष्ट्रीय लोकयानी अनुसन्धाता, हिन्दी-अंग्रेजी, फोक-लोर अकादमी, नई दिल्ली
प्यारासिंह पद्म संपादन	'पंजाबी दुनिया, पंजाबी, पटियाला, का सम्पादन।
	मांझे दीआं वारां, १९४९ पंजाबी
प्रीतमसिंह प्रोफेसर	खरोशनी लिपी, पंजाबी
बाबा बुद्धसिंह	हंसचोग, पंजाबी
बिहारी लाल	पंजाबी व्याकरण, १८६७, पंजाबी
मदनमोहन गोस्वामी (सम्पादन)	'जागृति' मासिक, चण्डीगढ़, हिन्दी तथा विभिन्न लेखादि
महेन्द्रपाल (सम्पादन)	'सप्तसिन्धु' हिन्दी, पटियाला, भाषा विभाग
मोहनसिंह डाक्टर	साहित्य सरोवर, पंजाबी १९३२
रामशरणदास एडवोकेट	पंजाब दे गीत, पंजाबी १९३०
विर्क कुलवन्तसिंह तथा नौरंग सिंह	

रन्धावा, महेन्द्र सिंह — पंजाब दे लोक-गीत, पंजाबी, १९५५

रन्धावा महेन्द्रसिंह — कुल्लू दे लोक-गीत, पंजाबी, १९५६

हरियाणा दे लोक-गीत', पंजाबी, १९५६.

काँगड़ा दे लोक-गीत, पंजाबी, १९५६.

(सम्पादन) प्रीत कहाणियाँ, पंजाबी, १९५७.

वणजारा बेदी — लोक आखदे हन पंजाबी, १९५९, पंजाबी साहित्य अकाडेमी, लुधियाना, तथा विभिन्न पंजाबी पत्रों में प्रकाशित लेखादि.

सुखदेव मादपुरी — जरी दा टोटा, पंजाबी, १९५८.

गाऊंदा पंजाब पंजाबी, १९५८

सुरिन्दर सिंह कोहली — पंजाब, दे गीत, पंजाबी, १९४४

संतराम बी. ए. — पंजाबी लोकगीत, हिन्दी,१९२५

संतसिंह सेखों (सम्पादन) 'आलोचना' पंजाबी मासिक, पंजाबी साहित्य अकाडेमी, लुधियाना

सन्तोखसिंह धीर (सम्पादन) लोक-गीतां बारे, पंजाबी, १९५६

पंजाबी लोक-कहाणियां, पंजाबी, १९५६

शमशेरसिंह 'अशोक', — पेप्सू में हिन्दी का लोक-साहित्य अंश, हिन्दी, १९५७

'सप्तसिन्धु' 'जागृति' एवम् 'पंजाबी दुनिया' में प्रकाशित विभिन्न लेखादि

शमशेरसिंह अशोक — प्राचीन जंगनामे

शरधाराम फिलौरी — पंजाबी बातचीत, पंजाबी, १८८३,

'शान' हरनामसिंह — सस्सी हाशम, पंजाबी, १९५७

शाकिर पुरुषार्थी	'जागृति', 'सप्तसिन्धु,' 'पंजाबी दुनिया' आदि में प्रकाशित विभिन्न लेखादि
शालिगराम	एंग्लो गुरुमुखी बोलचाल, पंजाबी, १९००
शेरसिंह प्रोफेसर	बार दे ढोले पंजाबी, १९५४
हजारा सिंह (सम्पादन)	'साहित्य समाचार' पंजाबी मासिक, विभिन्न लेख।
हरजीत सिंह	नै झनाँ, पजाबी, १९४३
हरनामसिंह 'नाज़'	विभिन्न पत्रों से प्रकाशित सामग्री
हरभजन सिंह ज्ञानी	पंजाबण दे गीत, पंजाबी-हिन्दी, १९४२, १९५०.

ऊपर हमने पंजाबी लोक-साहित्य संकलन, सम्पादन तथा शोध कार्य की विस्तृत सूची दी हैं। भारत की विभिन्न भाषाओं में हुये लोक-साहित्य सम्बन्धी कार्य की सूची देना यहाँ असंगत नहीं होगा। इस सूची के निर्माण करने में डा० महादेव साहा (लोक-साहित्य सम्बन्धी भारतीय साहित्य की संक्षिप्त सूची, सम्मेलन पत्रिका, पोष शुक्ल प्रतिपदा, सम्वत् २०१०, भाग ४०, संख्या १), डा० श्याम परमार (भारतीय लोक साहित्य—१९५४), डा० कृष्णदेव उपाध्याय (लोक साहित्य की भूमिका, १९५७) श्रीकृष्णदास (लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या) मन्सूरउद्दीन ('हारामणि' बंगला १९४२), पंडित राम नरेश त्रिपाठी, कविता कोमुदी ५वां भाग, की विभिन्न सूचियों का हमने उपयोग किया है। उनकी विवृस्त सूची में हम अपनी जानकारी में आई अन्य विभिन्न पुस्तकों का भी उल्लेख कर रहे हैं। पंजाबी सम्बन्धी पुस्तकों का पुनः इस सूची में लगाना उचित प्रतीत नहीं होता। पाठक गण पंजाबी की सूची पिछले पृष्ठों में देख ही चुके हैं :—

हिंदीलिपि में प्रकाशित पुस्तकें

अगर चन्द नाहटा	'राजस्थान भारती' तथा 'वारदा' के विभिन्न अंक,
अमृता प्रीतम	पंजाबी और उसका साहित्य, राजकमल प्रकाशन,

अजितकुमार मुकर्जी	भारतीय लोक-कला, १९५३, कल्पना, हैदराबाद ।
आर्थर डबल्यू. जे. तथा संकटा प्रसाद	भोजपुरी ग्राम्य-गीत, लहरिया सराय, पटना ।
आदर्श कुमारी यशपाल	बृज की लोक-कथायें, १९५५, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ।
आनन्द प्रकाश जैन	तेलंगाना की लोककथाएं, १९५५, आत्मा राम एण्ड सन्स, दिल्ली ।
	भारतीय गौरव की लोक-कथाएं, १९५६, आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली ।
ईश्वर बराल	नेपाली और उसका साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
उत्तम सिंह तेज	रंग-रंगीले गीत, १९४६, उत्तमसिंह गुरुबचनसिंह, अमृतसर ।
उदयनारायण तिवारी	भोजपुरी भाषा और साहित्य, राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
	भोजपुरी लोकोक्तियां, १९३९, हिन्दुस्तानी, प्रयाग
	भोजपुरी मुहावरे, १९४०-४१ हिन्दुस्तानी, प्रयाग ।
	भोजपुरी पहेलियाँ, १९४२, हिन्दुस्तानी, प्रयाग ।
उमादेवी यादव	भोजपुरी लोक-गीतों मे नारी, १९५४, पाटल, पटना ।
उमाशंकर शुक्ल	बुन्देलखण्ड के लोक-गीत, इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद ।
उमेश मिश्र	मैथिली और उसका साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
कमलकुमार श्रीवास्तव	होली के छत्तीस गढ़ी गीत, १९५४, प्रतिमा, नागपुर ।

करतारसिंह दुग्गल	पजाबी लोक-साहित्य १९५९, अजन्ता, हैदराबाद ।
कल्याण विन्दु नूरकर	आदिवासियों के प्रेमगीत, १९५२ अजन्ता हैदराबाद ।
कन्हैयालाल सहल	राजस्थानी कहावतें
कुसुम पाल नीहारिका	काठियावाड़, और गुजरात के गर्बा-गीत, १९५०, भारती, ग्वालियर ।
कुमार गंधर्व	भारतीय लोक संगीत, १९५२, सम्मेलन पत्रिका इलाहाबाद ।
डा० कृष्णदेव उपाध्याय	भोजपुरी लोकगीत, भाग १, १९५५ द्वितीय संस्करण, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ।
	भोजपुर लोकगीत, भाग २, १९४९, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ।
	लोकसाहित्य की भूमिका, १९५७, साहित्य भवन लि० प्रयाग ।
	भोजपुरी और साहित्य, १९५७, राजकमल प्रकाशन दिल्ली ।
	भोजपुरी लोकसाहित्य का अध्ययन, हिन्दी प्रचारक पुस्कालय काशी ।
	भोजपुरी लोकसंस्कृति का अध्ययन ।
	अवधी लोकगीत, भाग १ ।
कृष्णचन्द्र मौंगा	रंगबिरंगे गीत, १९४६, माधीराम संतराम, अमृतसर ।
कृष्णलाल हंस	निमाड़ी लोककथाएँ, भाग १, १९५२, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ।
	निमाड़ी लोककथाएँ भाग २, १९५४, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ।

कृष्ण लाल हंस	भारतीय लोकगीतों में नारी, १९५६, ४, अजंता, हैदराबाद।
कालिका प्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर'	राष्ट्रवाणी, हिन्दुस्तान, धर्मयुग में प्रकाशित लेख, १९५६ के बाद
कृष्णानन्द गुप्त	ईसुरी की फागें (सम्पादित), लोकवार्ता परिषद, टीकमगढ़।
	बुन्देलखण्डी और उसका साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
खंगबहादुर मानन	सुधाबूंदा, १८८४, बाकीपुर पटना।
खेताराम माली	मारवाडी गीतसंग्रह।
गोपाल कृष्ण कौल	अवध की लोककथाएं, १९५५, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली।
डा० गोविन्द चातक	गढवाल की लोककथाएं, १९५५, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली।
डा० गोविन्द चातक	नेपाल की लोककथाएं, १९५६, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।
गिरिधारी लाल शर्मा	राजस्थानी प्राचीन गीत, १९५७, साहित्य संस्थान, उदयपुर।
	राजस्थानी भीलगीत, १९५७, साहित्य संस्थान, उदयपुर।
चन्द्रकुमार अग्रवाल	छतीसगढ़ की लोककथाएं, १९५३, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

डा० चिन्तामणि उपाध्याय	मालवी लोकगीत (थीसिस) १९५७, ।
	मालवी एक भाषा शास्त्रीय अध्ययन, १९६०, मंगल प्रकाशन, जयपुर ।
	लोकयान, १९६१, मंगल प्रकाशन, जयपुर ।
	मालवीय ग्राम साहित्य की पहेलियाँ, १९४८' विक्रम उज्जैन ।
	लोकसाहित्य की 'मीरा' चन्द्रसखी, १९४९, 'विक्रम' उज्जैन ।
जगदीश चतुर्वेदी	बघेली लोकसाहित्य, १९५८, शलभ साहित्य प्रकाशन, उज्जैन ।
जगदीश चतुर्वेदी	भारत के नृत्य तथा भारत की शिल्प कलायें, १९५८,
डा० जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी	'जनपद' त्रैमासिक, १९५२, अ० भा० ज० परिषद, काशी ।
जगन्नाथ शर्मा	आबू की लोककथाएं, १९५२, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ।
	जर्मनी की लोककथाएं, १९५४, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ।
	काजल रेखा, १९५७, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
जगदीश सिंह गहलोत	मारवाड़ी ग्राम गीत ।
जगदीश त्रिगुणायत	बांसुरी बज रही और उसका साहित्य, १९५६, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना ।
जीतेन्द्र चन्द्र चौधरी	असमिया और उसका साहित्य ।

जनक अरविंद	भारत के आदिवासी, १९५८, इंडियन पब्लीकेशन, अम्बाला।
ठाकुर राम सिंह	चारणी गीत।
तारा चन्द ओझा	मारवाड़ी स्त्री-संग्रह।
तिलक	भारतीय लोक-साहित्य का विकास, १९५४, अजन्ता हैदराबाद।
तेजकुमार बम	कालिदास की लोक-कथाएं, १९५४, हिन्दी सदन, दिल्ली।
	विक्रम की लोक-कथाएं, १९५४, हिन्दी सदन, दिल्ली।
	ग्रामीण कहावतें, १९६०, पंचायत एवं समाज सेवा मध्य प्रदेश, इन्दौर।
	भोजराज की लोक-कथाएं, १९६१, किताब महल, इलाहाबाद।
	मध्यप्रदेश की लोक-कथाएं, बालसदन, दिल्ली।
	मालवी लोक-कथाएं, बालसदन, दिल्ली।
दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह	भोजपुरी लोक-गीतों में करुण रस, १९५७, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
	भोजपुरी के कवि और काव्य, राष्ट्रभाषा परिषद् पटना।
देवी प्रसाद वर्मा	छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक गीत, १९५४, प्रतिभा नागपुर।

देवीशंकर अवस्थी	फागों का त्योहार, १९५४, प्रतिमा नागपुर।
देवीलाल सामर	राजस्थानी लोक-कला, ३ भाग, १९५२, लोक-कला मण्डल, उदयपुर।
	राजस्थान का लोक-सगीत, १९५३, लोक-कला मंडल उदयपुर।
	राजस्थान का लोकानुरंजन, १९५४, लोक-कला, मंडल, उदयपुर।
	राजस्थान के लोक-नृत्य, लोक-कला मण्डल, उदयपुर।
देवेन्द्र सत्यार्थी	दीवा बले सारी रात, १९४१।
	मैं हूँ खानाबदोश, १९४१।
	बाजत आवे ढोल, १९४४, एशिया प्रकाशन नई दिल्ली।
	चट्टान से पूछ लो, १९४५, एशिया प्रकाशन नई दिल्ली।
	गाये जा हिन्दुस्तान, १९४६।
	धीरे बहो गंगा, १९४८, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।
	धरती गाती है, १९४८, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।
	बेला फूले आधी रात, १९४९, राजहंस प्रकाशन दिल्ली।
	क्या गोरी क्या साँवरी, १९५२, एशिया प्रकाशन दिल्ली।
	आजकल आदिवासी अंक (सम्पादित), १९५३ इन्फर्मेशन एण्ड पब्ली० विभाग दिल्ली।
	आजकल लोक-कथा अंक (संपादित) १९५४ इन्फर्मेशन एण्ड पब्ली० विभाग, दिल्ली।

देवेन्द्र सत्यार्थी	लोक-साहित्य की यथार्थवादी परम्परा, १९५२, आलोचना दिल्ली।
	हमारे ग्राम-गीत, १९३६, 'हंस' बनारस।
द्रोणवीर कोहली	लोक-कथायें, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।
न० वी० कृष्ण वारियर	मलयालम और उसका साहित्य, राजकमल प्रकाशन।
नरसिंहराम शुक्ल	चैता—ग्रामसंगीत, १९४१, 'साधना' बम्बई।
नरेन्द्र धीर	मैं धरती पंजाब की, प्रथम तथा द्वितीय सं० १९५४-५५, क्रान्ति प्रकाशन।
	मैं धरती पंजाब की, तृतीय संस्करण १९५८, साहित्य संगम लुधियाना।
	धरती मेरी बोलती, १९५९, हिन्दी सदन दिल्ली।
	लोक-साहित्य पर्यवेक्षण एक योजना, १९५५, फोक-लोर अकादमी।
	नाथ-सिद्ध साहित्य, १९४९, साहित्य-संगम लुधियाना,
	ढोल के बोल, १९५९।
	हिमानी लोक-साहित्य, १९६१, नीरजा प्रकाशन, लुधियाना।
	नेहा जिनके हाड़ समाया।
	पंजाबी लोक-साहित्य अध्ययन एक विहंगम दृष्टि, 'समाज' काशी।
	लोक-साहित्य में नाथ परम्परा, १९५९, 'सप्तसिंधु' पटियाला।
नरेशचन्द्र	लोक-गीतों का सांस्कृतिक महत्व और कवित्व, १९४९, प्राच्य मानव वैज्ञानिक।

नरोत्तमदास स्वामी — राजस्थान रा दूहा, भाग १-२, १९३५, राजस्थान सीरीज पिलानी।

राजस्थानी और उसका साहित्य, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।

निहालचन्द्र वर्मा — मारवाड़ी गीत, १९५२।

नन्दलाल चत्ता — काश्मीर की लोक-कथायें, १-२, १९५२, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली।

मनोरंजक लोक-कथायें, १-२, १९५४, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली।

केसर क्यारी, १९५७, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' — गुजराती और उसका साहित्य, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।

पी० वेंकटाचलम — कन्नड़ और उसका साहित्य, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।

प्यारेलाल — उज्जैन की लोक-कथायें, १९५५, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली।

सिन्ध की लोक-कथायें, १९५७, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली।

विदर्भ की लोक-कथायें, १९५५, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली।

पुरुषोत्तम मेनरिया — राजस्थानी भाषा की रूपरेखा, १९५५, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी।

पुरुषोत्तम मेनरिया	राजस्थान की लोक-कथायें, १९५४, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली।
पूर्णचन्द्र जोशी	नया पथ, धर्मयुग तथा हिन्दुस्तान में छपित लेख, १९५५-६१, जनयुग, लखनऊ।
पूर्णसोम सुन्दरम	तामिल और उसका साहित्य, १९५८, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।
पृथ्वीनाथ चतुर्वेदी हीरा लाल सन्त	हमारे लोक-गीत, १९५४, फर्रुखाबाद।
पृथ्वीनाथ पुष्प	काश्मीर और उसका साहित्य, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।
प्रभाकर माचवे	मराठी और उसका साहित्य, १९५७, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
	लोक-साहित्य का अध्ययन, १९४४, 'नीरव' उज्जैन।
प्रभागचन्द्र शर्मा	मालव लोक-गीतों की नारी, १९४०, 'हंस' बनारस।
प्रवासी लाल वर्मा	सौराष्ट्र की लोक-कथायें, १९४९, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली।
प्रीतम सिंह पंछी	पंजाब की लोक-कथायें, आत्माराम एण्ड संस।
प्रेमी हरिकृष्ण	पंजाब की प्रीति कहानियां, १९५९
बंशी लाल	डोगरी लोक-कथा, १९५६, डोगरी संस्था, जम्मू।
बलदेव लाल कलंकिकर	भोजपुरी कहाउत, किंकर कुटीर, झंझिहट।
	मैथिली कहाउत
	मगधी कहाउत
	बिहारी कहाउत

बलदेव लाल कलकिकर	मैथिली लोक-गीत, २ खंड
	घरेलू जड़ी बूटियाँ ।
बसन्तालाल बम्	मालव की लोक-कथायें, सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली
	मध्यप्रदेशीय भाषा पर्यवेक्षण, मालव लोक-साहित्य परिषद् ।
	बाघ के भील भिलाले, १९५०, प्रतिभा निकेतन, उज्जैन ।
	भारतीय लोक-कथायें—उत्पत्ति विकास, (थीसिस) १९६१ अप्रकाशित ।
	मा० लो० सा० प० पंचवर्षीय कार्य विवरण, १९५८, मा० लो० सा० परिषद्, उज्जैन ।
बृजकिशोर वर्मा	मैथिली लोक-गीतों का अध्ययन
	लोरिक विजय
	सभौती राजा
	हिमिगिरि से लै गंगाधार
	दयाल सिंह का रोमांस
	मैथिली लोक-गीतों के हीरो
	मैथिली लोक-गीतों की हीरोइन
बैजनाथ सिंह विनोद	लोक-साहित्य की समस्यायें, १९५४, पाटल, पटना ।
मदनलाल वैद्य	मारवाड़ी गीतमाला ।
मन्मथराय	हमारे कुछ प्राचीन लोकोत्सव, १९५३, इलाहाबाद ।
मन्मथनाथ गुप्त	बंगाल की लोक-कथायें, १९५५, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ।
मन्मथनाथ गुप्त	फ्रांस की लोक-कथायें, १९५६, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ।

माधवजी — स्वर्ग पर चढ़ाई, १९५७, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

महेन्द्र मित्तल — ग्राम लोक-कथायें, १९५४, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

पूर्वी भारत की लोक-कथायें, १९५७, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

डॉ० माता प्रसाद — मुल्ला दाऊद की लोक-कथा, १९५७, आगरा वि० वि० मु० हि० विद्यापीठ, आगरा।

मार्कण्डेय — लोक-कला और लोक-साहित्य, १९५४, विंध्यभूमि, नागपुर।

मूलचन्द्र शौर्य — बनजारों के लोकगीत, १९४१, 'साधना' बम्बई।

मोहन प्रसाद सिंह — दक्षिण बिहार के लोक-गीत, १९४७, विश्वमित्र कलकत्ता।

मोहनलाल मेनरिया — राजस्थानी भीलों की कहावतें।

रमेश मटियानी शैलेश — कुमाऊँ की लोक-कथायें, १९५८, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

रतनलाल मेहता — मालवी कहावतें, राजस्थान शोध संस्थान, उदयपुर।

रमेशचन्द्र प्रेम — बर्मा की लोक-कथायें, १९५०, किताब महल इलाहाबाद।

रहबर — जापान की लोक-कथायें, १९५६, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली।

चीन की लोक-कथायें १९५६, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली।

रहबर	रूस की लोक-कथायें, १९५७, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली।
रहबर और पंछी	हमारी लोक-कथायें, १-२, १९५५, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।
राधाकृष्ण चौधरी	मैथिली के संस्कार गीत
	डोम और उनकी जातें, उनके देवता एवम् पूजा।
राधावल्लभ शर्मा	कृषि कोष, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्।
	मगही संस्कार-गीत, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद।
राधा सुधा	बोल बोल बांसुरी, भिक्षा मिलेगी तथा मूँग और मोठ, १९५६, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
राम इकबाल सिंह राकेश	मैथिली लोकगीत, १९४८, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।
	लोक-नृत्य और गीत, १९४९, 'समाज' दिल्ली।
राम किशोरी श्रीवास्तव	लोक-गीत एक अध्ययन, १९४०, 'हंस' बनारस।
	मैथिली लोक-गीत, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
	हिन्दी लोक-गीत, १९४६, साहित्य भवन लि०, प्रयाग।
रामनरेश त्रिपाठी	मारवाड़ के मनोहर गीत, १९३२, हिन्दी मन्दिर, प्रयाग।
	कविता कौमुदी भाग ५, ग्राम गीत, १९३१, हिन्दी मन्दिर, प्रयाग।
	हमारा ग्राम साहित्य, १९४०, हिन्दी मन्दिर प्रयाग।
	ग्राम साहित्य, भाग १, १९५१, आत्मा राम एण्ड संस, दिल्ली।

रामनरेश त्रिपाठी	ग्राम साहित्य भाग २, १९५२, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।
	ग्राम साहित्य, भाग ३, १९५२, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली।
	सोहर १९४०, हिन्दी मन्दिर प्रयाग।
रामनाथ शास्त्री	इक हा राजा, १९५६, डोगरी संस्था, जम्मू।
राजबहादुर सिंह	देवताओं की कहानियां, सांस्कृतिक कहानियां, भागवत की कहानियां १९६० आत्माराम एण्ड संस।
राजाराम शास्त्री	हरियाना की लोक-कथायें, १९५४, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।
राजशेषगिरि राव	आंध्र की लोक-कथायें, १९५५, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली।
राजेन्द्र अवस्थी	बिहार की लोककथायें, १९६०, आत्माराम एण्ड संस दिल्ली।
रामचन्द्र प्रसाद	मगही लोक-गीत, १९५९, पटना।
रामनारायण उपाध्याय	निमाड़ी और उसका साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
	निमाड़ी लोक-गीत, १९४९, हिन्दी साहित्य सम्मेलन
	निमाड़ी लोक-कहावतें और उनका सौन्दर्य, १९५३, सम्मेलन पत्रिका, प्रयाग।
राममूर्ति रेणु	गंगा गौरी सम्वाद सौन्दर्य, १९५१, राष्ट्र भारती।
राजेन्द्र सिंह	मेरठ के आसपास के क्षेत्र वाले मुहाविरे, १९५५, नागरी प्रचारिणी, सभा।

राहुल सांकृत्यायन	आदि हिन्दी के गीत और कहानियाँ, १९५२, पटना।
	किन्नर देश में, किताब महल, इलाहाबाद।
	हिमालय परिचय, गढ़वाल, किताब महल, इलाहाबाद।
	लोक-भाषा और साहित्य, १९५३, नयापथ, लखनऊ।
	मातृभाषाओं का प्रश्न, १९४३, हंस, बनारस।
लखन प्रताप 'उरगेश'	बाघेली लोक-गीत, १९५४, कटिया, वि० प्रदेश।
लक्ष्मीबाई चूड़ावत	राजस्थान का हृदय।
	माँझल रात।
	भूमल।
	दूँकारो दोसा।
	राजस्थानी लोकगीत।
	राजस्थानी प्रवाद।
	राजस्थानी हरजस।
	कारणो चरित्र।
ल० जोशी	मेवाड़ की कहावतें, उदयपुर।
लक्ष्मीनारायण पचीसिया	दो मारवाड़ी गीत। १९२९, विशाल भारत कलकत्ता।
	लोक भारती दो भाग, राष्ट्र भाषा भवन, पूना।
डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	पृथ्वी पुत्र, १९४९, दिल्ली।
	जनपद त्रैमासिक, सम्पादित, १९५२-५३, जनपद परिषद, काशी।

विद्यावती सिन्हा	सोहाग के गीत, १९५३, प्रयाग ।
वेंकटेश्वर शास्त्रालु	आन्ध्र प्रदेश की कविता और लोक-गीतों से उसका विकास, १९५४, अजन्ता, हैदराबाद ।
शालिगराम वैष्णव	गढ़वाली भाषा के पाखाणा, १९५१, नागरी प्रचारिणी पत्रिका ।
शाकिर पुरुषार्थी	जागृति, सप्तसिंधु में छपित विभिन्न लेख, जगराँव ।
शमशेर सिंह 'अशोक'	पेप्सू का प्राचीन हिन्दी साहित्य, १९५६, पेप्सू में हिन्दी की प्रगति की भूमिका, पेप्सू प्रा० हि० सा० स० द्वारा प्रकाशित ।
शिवसहाय चतुर्वेदी	जैसी करनी वैसी भरनी, १९५७, सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली ।
	बुन्देलखण्ड की ग्राम्य कहानियाँ ।
	पाषाण नगरी, १९५१, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
	गोने की विदा, १९५३, पटना ।
	वर्षा और स्वास्थ्य विज्ञान, १९५२ 'सुमित्रा' इलाहाबाद ।
शिवनन्दन प्रसाद एम. ए.	हिन्दी साहित्य के इतिहास में लोक-साहित्य, १९५३ 'अवन्तिका' पटना ।
शिवदान सिंह चौहान	जनपदीय भाषाओं का प्रश्न प्रगतिवाद ।
शिवमूर्ति सिंह वत्स्य	अवध की कोक-कथायें, १९५०, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ।
	भोजपुर की लोक-कथायें १९५०, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ।

शिवदान सिंह शांडिल्य — फारस की लोक-कथायें, १९५५, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ।

डॉ० श्यामचारण दुबे — छत्तीसगढ़ी लोक-गीतों का परिचय, १९४० ।

छत्तीसगढ़ी और उसका साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

छत्तीसगढ़ी ग्राम्य कथायें, १९४०, 'हंस', बनारस ।

डॉ० श्याम परमार — मालवी लोक-गीत, १९५१, म० भा० सा० समिति इन्दौर ।

मालवी और उसका साहित्य, १९५४, राजकमल प्रकाशन दिल्ली ।

मालवा की लोक-कथायें, १९५४ आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली ।

भारतीय लोक-साहित्य, १९५४ राजकमल प्रकाशन दिल्ली ।

लोक-धर्मी नाट्य-परम्परा १९५९, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय बनारस ।

मालवी लोक-साहित्य, थीसिस १९५८, अप्रकाशित

महाराष्ट्र के लोक-नाट्य, १९५४, दक्षिण भारत

श्रीचन्द्र जैन — विंध्य प्रदेश के लोक-गीत, १९५३, आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली ।

विंध्य भूमि की लोक-कथायें, १९५४, आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली ।

आदि वासियों की लोक-कथायें, १९५६, आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली ।

श्री चन्द्र जैन	मोरी धरती मैया, १९५६, गया प्रसाद एण्ड सन्स आगरा ।
	बघेलखण्डी और बुन्देलखण्डी कहावतें, १९५७, म. प्र. प्रकाशन समिति, भूपाल ।
श्री कान्त व्यास	महाराष्ट्र की लोक-कथायें, १९५०, आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली ।
	गुजरात की लोक-कथायें, १९५०, आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली ।
	आसाम की लोक-कथायें, १९५२, आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली ।
श्रीकृष्ण-रमेश कुमार महेश्वरी	तिब्बत की लोक-कथायें. १९५४, आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली ।
श्रीकृष्ण दास	लोक-गीतों की सामाजिक व्याख्या, १९५५
	हमारी नाट्य परम्परा, १९५८ साहित्यकार संसद प्रयाग ।
संतराम बी. ए.	पंजाबी गीत, १९२५, जातपाँत तोड़क मंडल लाहौर ।
संतराम वत्स्य	हिमाचल की लोक-कथायें, १९५५, आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली ।
	बाहर कहाँ खोजे बन्दे, १९५६, नेशनल पब्लीशिंग हाउस, दिल्ली ।
सावित्री देवी वर्मा	उत्तर भारत की लोक-कथायें, १-३, १९४४-४५, आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली ।
सत्यप्रिय शांत	मुलतानी लोक-कथायें, १९५७, आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली ।

सत्यव्रत अवस्थी — बिहाग रागिनी ।

डॉ० सत्यव्रत सिन्हा — भोजपुरी लोक-गाथा, १९५८, हिन्दुस्तानी एकेडेमी अलाहबाद ।

डॉ० सत्येन्द्र — बृज लोक-साहित्य का अध्ययन, १९४९, साहित्य रत्न भंडार आगरा ।

बृज की लोक-कहानियाँ, १९४७, बृज साहित्य मंडल मथुरा ।

जाहर पीर गुग्गा, १९५७ आगरा विश्वविद्यालय कन्हैयालाल मुन्शी विद्यापीठ आगरा ।

बृज लोक-संस्कृति, बृज साहित्य मंडल मथुरा ।

बृज ग्राम-साहित्य का विवरण, बृज साहित्य मंडल मथुरा ।

बृज भाषा एवम् उसका साहित्य, राजकमल प्रकाशन दिल्ली ।

बृज का लोक-साहित्य, पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ ।

सत्यपाल गुप्त — पेप्सू में हिन्दी की प्रगति, १९५६, पेप्सू प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन ।

सुशीला सलाथिया — खारे मिट्ठे अत्थरु, १९५४, डोगरी संस्था, जम्मू ।

सुकुमार पगारे — संत सिंगा जी, १९४६, खण्डवा

सुरेन्द्र महन्थी — उडिया और उसका साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

सूर्यकरण, रामसिंह तथा नरोत्तम स्वामी — राजस्थान के लोक गीत, प्रथम भाग, १९३८, राजस्थान रिसर्च सोसायटी कलकत्ता

सूर्यकरण पारीख, नरोत्तम दास स्वामी तथा ठाकुर रामसिंह — ढोला मारूरा दोहा, १९३४, नागरी प्रचारिणी सभा काशी

सूर्य कारण पारीख	राजस्थानी लोक-गीत, १९४२, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग
सूर्यकरण पारीख एवं गणपति स्वामी	राजस्थानी बातां, कलकत्ता।
सूर्यकरण पारीख, ठाकुर रामसिंह तथा नरोत्तम दास स्वामी	राजस्थान के लोक-गीत, भाग २, कलकत्ता।
सूर्यकरण पारीख एवं गणपति स्वामी	राजस्थान के ग्राम गीत, १९४०, दिल्ली।
पद्मभूषण सूर्यनारायण व्यास	मालव जनपद एवं उसका क्षेत्र-विस्तार १९५३, मालव लोक-साहित्य परिषद, उज्जैन।
	मालवा की संगीत साधना, १९५५, आजकल दिल्ली।
	विक्रम के लगभग सभी अंक, १९४२-५४, भारती भवन, उज्जैन।
	मालवी मेघदूत, भारती भवन, उज्जैन।
हर प्रसाद शर्मा	बुन्देलखण्डी लोक-गीत ।
डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी	लोक-भाषा में सम्प्रदाय के नैतिक उपदेश, नाथ सम्प्रदाय १९५०, हिन्दुस्तानी अकादमी, प्रयाग।
हरिहर निवास द्विवेदी	मध्यदेशीय भाषा ग्वालियरी, १९५५, विद्यामंदिर प्रकाशन ग्वालियर।
हरिमोहन लाल	राजनातिक लोक-कथायें, १९५५, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।
हनुमच्छास्त्री अयाचित	तेलगू और उसका साहित्य, १९५५, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।

हंसकुमार तिवारी	बंगला और उसका साहित्य, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।
त्रिवेणी प्रसाद सिंह	हिन्दू धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ, १९५७, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना।
डॉ० त्रिलोकी नारायण दीक्षित	अवधी और उसका साहित्य, १९५६, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
	संतों के लोक-गीत, संत दर्शन पुस्तक में पृष्ठ २२९-२४२।

हिन्दी की विविध पत्रिकायें जिनमें लोक-साहित्य सम्बन्धी सामग्री प्रकाशित है।

आजकल	आदिवासी अंक, १९५३, इ० वि० दिल्ली।
	लोक-कथा अंक, १९५४
कल्पना	फरवरी अंक, सम्पादकीय, १९५१, हैदराबाद।
जनपद	सम्पूर्ण अंक, १९५२-५४, जनपद परिषद, काशी।
जागृति	विभिन्न अंक १९४८-६१, चण्डीगढ़।
नई धारा	जंगल गाता है, पटना।
प्रदीप	विभिन्न अंक, १९४५-४८, शिमला।
बृज भारती	सभी अंक, बृज साहित्य मंडल, मथुरा।
भोजपुरी	लोक-साहित्य तथा अन्य अंक, पटना।
मधुकर	सम्पूर्ण अंक, १९४०-४५, वीरेन्द्र केशव सा० प० टीकमगढ़।
राजस्थान	सम्पूर्ण अंक, १९३६, राजस्थान रि० सो०, कलकत्ता।
राजस्थान भारती	सम्पूर्ण अंक, १९५१ से, सादुल राजस्थानी रि० ई० बीकानेर।

लोकवार्ता	सम्पूर्ण अंक, १९४५-४६, लोकवार्ता परिषद टीकमगढ़ ।
विक्रम	सम्पूर्ण अंक, १९४२-५४, भारती भवन, उज्जैन ।
सम्मेलन पत्रिका	लोक-संस्कृति विशेषांक, १९५४, हि० सा० स० प्रयाग ।
साप्ताहिक हिन्दुस्तान	लोक-साहित्य विशेषांक, १९५४, दिल्ली ।
सप्तसिन्धु	विभिन्न अंक, १९५२-६१, हिन्दी विभाग पटियाला ।

गुजराती में प्रकाशित लोक-साहित्य-सम्बन्धी पुस्तकें

आचार्य	चंडीपथ ना गर्बा, १९३८, सौराष्ट्र साहित्य सभा, राजकोट ।
कान्तिलाल शाह	काश्मीर नी लोक-कथाओ, १९५०, ।
गुजराती विद्या सभा	रासमाला, अहमदाबाद ।
सम्पादित	छेल्लु प्रयाण ।
जोशी, गजानन	भील प्रदेश ना गीतो ।
झवेर चन्द मेघाणी	रढ़ियाली रात, भाग ३-४, गुर्जर ग्रन्थ रत्न कार्यालय, अहमदाबाद ।
	चूँदड़ी, भाग १-२, गुर्जर ग्रन्थ रत्न कार्यालय, अहमदाबाद ।
	ऋतु गीतो, गुर्जर ग्रन्थ रत्न कार्यालय, अहमदाबाद ।
	हालर डाँ, गुर्जर ग्रन्थ रत्न कार्यालय, अहमदाबाद ।

झवेरचन्द मेघाणी	सौराष्ट्र नी रसधार, भाग १-५, गुर्जर ग्रन्थ-रत्न कार्यालय, अहमदाबाद ।
	सोरठी बहार बटिया, भाग १-३, गुर्जर ग्रन्थ रत्न कार्यालय, अहमदाबाद ।
	सोरठी गीत कथाओ, गुर्जर ग्रन्थ रत्न कार्यालय, अहमदाबाद ।
	दादजू नी वातो, गुर्जर ग्रन्थ रत्न कार्यालय, अहमदाबाद ।
	डोशी मा नी वातो, गुर्जर ग्रन्थ रत्न कार्यालय, अहमदाबाद ।
	धरती नू धावन, भाग १-२, गुर्जर ग्रन्थ रत्न कार्यालय, अहमदाबाद ।
	लोक-साहित्य पगदण्डी नूँ पंथ, गुर्जर ग्रन्थ रत्न कार्यालय, अहमदाबाद ।
	चारणो अने चारणी साहित्य, गुर्जर ग्रन्थ रत्न कार्यालय, अहमदाबाद ।
	वतन नो साद, गुर्जर ग्रन्थ रत्न कार्यालय, अहमदाबाद ।
	लोक-साहित्य नूँ समालोचना, बम्बई विश्वविद्यालय ।
	कंकावटी भाग, १-२, गु० ग्रं० रत्न कार्यालय, अमहदाबाद ।
	सौराष्ट्र ना खण्डेरो माँ, गु० ग्रं० रत्न कार्यालय, अहमदाबाद ।

झवेरचन्द मेघाणी	सोरठ ना तीरे तीरे, गु० ग्रं० रत्न कार्यालय, अहमदाबाद।
दलाल	प्राचीन गुर्जर काव्य-संग्रह, १९११।
नर्मदाशंकर लाल शंकर	नागर स्त्रियो माँ गावता गीत, १९१०, गुजराती प्रि० प्रेस।
	परकम्मा
	परिभ्रमण
शिक्षा विभाग बड़ौदा	पाटीदार जाति ना सांसारिक रीति-रिवाज नो एकीकरण
पटेल, मधुभाई	गुजरात ना लोक-गीतो, १९५४
पांड्या याज्ञनिक	श्री नडियाद व दनगर नागर ब्राह्मण जातिक ना रीति रिवाज
बुच, एम० ए०	उदासी पंथ ना नीति वचनो
भोज भंगत	प्राचीन काव्य माला, १८९०
मेहता, आर० सी०	गुजराती गेय कविता
रणजीत राय मेहता	लोक-गीत
रणजीत राम बाबाभाई	गुजरात ना लोक-गीतो
शाह एस० एन०	ढोला मारू, १९५४, बम्बई

बंगला लोक-साहित्य-सम्बन्धी ग्रन्थ सूची

आफताबुद्दीन	मलया मनमोहन
अशरफ	हासेनेर ग्रन्थावली
आशुतोष भट्टाचार्य	बाँगलार मंगल काव्येर इतिहास
कर, महेन्द्रनाथ	खनार वचन संग्रहीत १९५२
कलकत्ता विश्वविद्यालय	सांगीतकी

काव्यतीर्थ वीरेश्वर	व्रत माला विधान, १९२६
	काशकुल कालिमी
काशीनाथ तर्कवागीश	व्रत माला
कागाल, हरिनाथ	बाउल गान
	बारमासेर पुंथि
	हिन्दुस्थानी ग्राम गीत
	हिन्दुस्थानी लोक-गीत
	हासान उदास
कांजिलाल अनिल	बाँगलार प्राचीन काव्य, १९५०
गुरुप्रसाद दत्त	पटुआ संगीत
गुप्तराम प्राण	व्रत माला,१९३०
गिरीशचन्द्र सैन	तापसमाला
चक्रवर्ती, कालीचरण	राधक राजमोहन
चौधरी	लौकिक धर्म ओ देवा देवी
जासिमुद्दीन	नक्सी कांथार माठ
	रंगला नायरे माझि
ठाकुर अवनीन्द्रनाथ	बंगलार व्रत
	मौन चेतन, बंगीय साहित्य परिषद
ठाकुर रवीन्द्रनाथ	लोक-साहित्य, १९३०
	छन्द
	शिक्षा
दत्त, अक्षय कुमार	भारतीय साधक सम्प्रदाय भाग २
	महा निर्वाण तन्त्र, बंगवासी संस्करण ।

दत्त, भोलानाथ	डाकेर कथा, १-७ खण्ड, १९२० ।
दे, सुशील कुमार	बाँगला प्रवाद, १९५२ ।
नरेन्द्रनाथ मजुमदार	व्रत कथा ।
पालित, हरिदास	आद्येर गम्भीरा, १९३५ ।
बंगीय साहित्य परिषद	बंग भाषाओ साहित्य, अष्टम संस्करण, १९५० ।
	गोरक्ष विजय
	प्राचीन पुंथीर विवरण ।
मोहितलाल मजुमदार	हेमन्त गोधूलि ।
मनसूरुद्दीन	हारामणि, खण्ड १, १९३० ।
	हारामणि, लोक-संगीत-संग्रह, १९४२ ।
मणीन्द्रनाथ बसु	सहजिया साहित्य ।
	मारफती संगीत ।
मित्र, दक्षिणा रंजन	ठाकुर दादार झुलि ।
	ठाकुर मार झुलि ।
मुखोपाध्याय, दुर्गागति	डाक पुरुषेर कथा, १९२७ ।
राधागोविन्द नाथ	चैतन्य चरितामृत ।
	तारिकत दर्पण ।
वन्द्योपाध्याय, चारुचन्द्र	वंग वीणा ।
वन्द्योपाध्याय, राखाल दास	बाँगलार इतिहास, १-२ भाग, १९३७-४० ।
वन्द्योपाध्याय, मणिलाल	व्रत उद्यापन, १९२८ ।
शरच्चन्द्रनाथ	बाउल गान ।
सरस्वती नीलकान्त	व्रत कथासार ।
सरकार, पवित्र	बाउल गान ।

साहू लक्ष्मीनारायण	दण्डनाथ ।
सेन, दिनेश चन्द्र	मयमनसिंह गीतिका, पूर्व बंग गीतिका ।
	गोपीचन्देर गान ।
सेन, सुकुमार	बंगला साहित्येर इतिहास, प्रथमखण्ड
सेन,क्षिति मोहन	मध्यम युगे भारतीय साधना-धारा ।
	दादू
	कबीर
हक, एनामुल	बंगे सूफ़ी प्रभाव ।

मराठी में प्रकाशित लोक-साहित्य

अनुसूया भागवत	जानपद गीतें
कमलाबाई देशपाण्डे	अपौरुषेय वाङ्मय अर्थात् स्त्री गीतें, १९४८, पूना
काका कालेलकर व चोरघड़े	साहित्या चें मूलधन ।
गोरे, पा. श्र.	वह्राड़ी लोक-गीतें, यवतमाल ।
मालती दाण्डेकर	लोक-साहित्याचें लेणें, बुधगाँव, सतारा, १९५३
वि. बा. जोशी	लोक-कथा व लोक-गीतें ।
साने गुरु	स्त्री जीवन, दो भाग ।
नारायण मोरेश्वर खरे	लोक-संगीत ।

उर्दू में प्रकाशित लोक-साहित्य

संतराम बी. ए.	पंजाबी गीत ।
राम शरण दास एडवोकेट	पंजाब दे गीत ।
होतू राम	बिलोच नामा, लाहौर १ ८१

देवेन्द्र सत्यार्थी	मैं हूं ख़ानाबदोश ।
	नये देवता
	गाये जा हिन्दुस्तान ।
	और बंसरी बजती रही ।
	रथ के पहिये ।
नरेन्द्रधीर	मैं धरती पंजाब की, १९५९
जियालाल साज	'पास बाँ', चण्डीगढ़ ।
शाकिर पुरुषार्थी	विभिन्न पत्रों में प्रकाशित लेखादि ।

बँगला पत्रिकाओं में बिखरी सामग्री की सूची

१३०१

छेल भुला न छड़ा	रवीन्द्रनाथ ठाकुर, १०१-१९२ ।
कलिकातार संगृहीत	रवीन्द्रनाथ ठाकुर, १९३-२०२ ।

१३०२

छेले भुला न छडा	बसन्त रंजन राय, ३६७-३७१ ।
सांओताल परगना छडा	बसन्तरंजन राय, ३७१-३७४ ।
मेयेलि छड़ा	रवीन्द्रनाथ ठाकुर, ३७४-३८१ ।

१३०३

छड़ा (वर्द्धमान)	कुंजलाल राय, ५६-६१ ।
छड़ा (हुगली)	अम्बिकाचरण राय, ६१-६४ ।

१३०६

गोविन्द चन्द्रेर गीत	शिवचन्द्र शील, २६७-२७२ ।

१३०८

दक्षिण पथे प्रचलित पूजा ओ वृत — दीनानाथ वंद्योपाध्याय, १५-२२ ।

१३०९

चट्टग्रामी छेले भुला नो — अब्दुल करीम, ७६-९१ ।

वृत विवरण — राम प्राण गुप्त, १०८-१२०

१३१०

चट्टग्रामी छेले भुला नो छड़ा — अब्दुल करीम, ११३-११६ ।

१३११

चट्टग्रामी छेले भुला नो — अब्दुल करीम, १०७-११४

१३१२

चट्टग्रामी छेले भुलानो छड़ा — अब्दुल करीम, १७७-१८८ ।

निरक्षर कवियो ग्राम्य कविता — मोक्षदाचरण भट्टाचार्य, ४०-४७ ।

१३१३

ग्राम-गीति — दक्षिणारंजन मित्र मजुमदार, १२९-१४५ ।

बंगाली मेयेर वृत कथा — अक्षयचन्द्र सरकार, २३-२४ ।

१३१४

ग्राम्यदेवता — रामेन्द्र सुन्दर त्रिवेदी, ३५-४४ ।

बरिशालेर ग्राम्यगीत — राजेन्द्र कुमार मजुमदार, १२४-१२८ ।

आद्येर गम्भीरा	हरिदास पालित, ४-७६ ।

१३१६

साँओताली गान	सरसीलाल सरकार, २४६-२५२ ।
बाधाइयेर बरात	योगेन्द्रचन्द्र भौमिक, १६७-१७० ।

१३१६

आनभूम जेलार ग्राम्य-संगीत	हरिनाथ घोष, २४०-२५४ ।

१३२२

निमाइ सन्यासेर पाला	शचीन्द्र नाथ मुखोपाध्याय, २४६-२६४ ।

प्रवासी

१३०७

मैथेली साहित्य ओ वारवृत	अघोरनाथ चट्टोपाध्याय, २२५-२२७, २६५-२६७ ।
भूतेर बाप	गिरिजाकुमार घोष, २३७-२४२ ।
बिहु	अन्नदा प्रसाद चट्टोपाध्याय २६३- ६५ ।
चैत्र पूजा	रसिकचन्द्र बसु, ४२६-४३५ ।

१३१०

होली गीत	नगेन्द्र नाथ गुप्त, ४७२-४७४ ।
काजली परब	कोई प्रवासिनी, ३६०-३६५ ।
पूर्व बंगेर मेयेलि वृत	कोई प्रवासिनी ५१६-५२० ।

१३१४

वंगे हिन्दू ओ मुसलमान	एक बंगाली, १६१-२०३ ।

१३१६

गोपी चान्देर माता	विश्वेश्वर भट्टाचार्य ४१३-४१९ ।

१३३३

रूपकथा ओ इतिहास	शचीन्द्रलाल राय, ३२८-३३२ ।
'तुषु' पूजा	शिशिर सेन, ३८६-३८७ ।
वंग भाषाय बौद्ध-स्मृति	रमेशचन्द्र वसु, ४९८-५०६ ।

१३३४

ग्राम्य गोति ओ कविताय वाराषे	हिरन्मय मुन्सी, ५०४-५०५ ।
धर्मेरगान कलकालेर	योगेशचन्द्र राय, ६३९-६४५ ।

१३३५

लालन शाह	वसन्त कुमार पाल, ३८-४२ ।
बाउल गान	महम्मद मनसूरउद्दीन, ३१४ ।
मैमनसिहेर पल्ली कवि कंक	चन्द्रकुमार दे, ५१३-५३२ ।
इन्द्राली पूजा	राजेन्द्र कुमार शास्त्री, ९०१-९०२ ।

१३३६

यमपुकुर बूतेर प्राचीनत्व	अनिलचन्द्र गुप्त, ५७ ।

गुजराटे गोपी चान्देर गान ननी गोपाल चौधरी, ६३६-६४० ।

१३३७

गुजराटी गरबा	पवित्र कुमार गंगोपाध्याय, ४०२-४०७ ।
हुगलीर पल्ली कवि रसिकलाल राय	मनमोहन नर सुन्दर, ६३७-६४१ ।

सावित्री व्रत	अनुरूपा देवी, ८०७-८१० ।

१३३८

पोलाण्डेर प्राचीन नृत्य-कला	लक्ष्मीश्वर सिंह, ७६२-७६५ ।

१३३९

बाँगलार रस-कला सम्पद	गुरुसदय दत्त, १०१-१०३ ।
पल्ली शिल्प	जसीमुद्दीन, ८०६-८१७ ।
बाँगलार लोक-नृत्य ओ लोक-शिल्प	गुरुसदय दत्त, ८

१३४०

लिंगोपासना	विधुशेखर भट्टाचार्य, ७४१-४२
राजघाटेर व्रत नृत्य	गुरुसदय दत्त, १०१-११२ ।
विद्यासागर उपाख्यानेर मुसलमानी रूप	चिन्ताहरण चक्रवर्ती, ५००-५०१

१३४१

नृत्यरता भारती	अजितकुमार मुखोपाध्याय
पूर्व बंगेर साहिर गान	प्रभात कुमार गोस्वामी, आनन्द बाजार पत्रिका, ६-११-४१
हारामणि	मनसूरुद्दीन, सत्यवार्ता, ईद अंक, १६४०
बाँगलार लोक-संगीत	जरीनकलम, विचित्रा मासिक
साँओताल पल्ली गीति	चारुलाल मुखोपाध्याय, देश साप्ताहिक, १६३१
श्री हट्टेर पल्ली गीति	आब्दर रज्जाक, आ० बा० प०, २६-४-४१
लालन फकीर	विश्वनाथ मजुमदार, आ० बा० प०, २६-४-४१

कलिकाता विश्वविद्यालये क० वि० कलकत्ता, आ० बा० प०, १६-३-४१
प्रवेशिका परीक्षार संगीत
प्रश्न-पत्र

छेले भुला न छड़ा तारकनाथ वन्द्योपाध्याय, आ० बा० प०, १६-३-४१
वर्द्धमान जेलापल्ली साहित्य सम्मेलन, आ० बा० प०, १८-४-४१
लोक-साहित्य-संग्रह सुरेन्द्रनाथ दास, युगान्तर दैनिक, १४-१०-४१
निखिल वंगपल्ली साहित्य सम्मेलन, आ० बा० प०, ३१-३-४१
बाजनाय आपत्ति आ. बा. प., २७-४-४०
शिलचरे शोचनीय हत्या-मनमोहन घोष आ. बा. प., १२-३-३७
काण्ड
बाँगलाय पल्ली गान विचित्रा मासिक
सम्बन्धे आलोचना यत्किंचित
कविगान पूर्णचन्द्र भट्टाचार्य, आ. बा. प., १४ श्रावण १४६
कविगान पूर्णचन्द्र भट्टाचार्य आ. बा. प. ३१ श्रावण १३४६
उत्तर वंगे चोरेर छड़ा ताराप्रसन्न मुखोपाध्याय, आ. बा. प., १५-६-३६
बाउल ओ मुर्शिदी गान यतीन्द्रसेन, आ. बा. प., १९४०
रंगपुरेर भायेया गान यतीन्द्रसेन, आ. बा. प., ७-१-१९४०
जारी गान ओ पागला माधव भट्टाचार्य, आ. बा. प., ११-१२-३
कानाई
पश्चिम वंगेर भादो फाल्गुनी मुखोपाध्याय, आ. बा. प. ६ वैशाख १३४६
जागरण गान
मुर्शिदी गीति यतीन्द्र सेन, आ. बा. प., १०-१२-३६
मेघदूत बिजली, नव शक्ति साहित्य, २६-१-३२
बाँगलार पल्ली सम्पद गुरु सदयदत्त, बंगलक्ष्मी, फाल्गुण १९३७

प्राचीन बंगला साहित्य	यतीन्द्रसेन, आ. बा. प., ९-७-३९
बाउलेर धर्म	बंगवाणी, ७ माघ १३३८

मराठी पत्रिकाओं में बिखरी सामग्री

अनुसूया लिमये	सहा महा रा वग, सत्यकथा, दीवाली अंक, नवम्बर, ५२
उ. भा. कोठारी	स्त्री हृदय, अहमदनगर कॉलेज, त्रैमासिक अगस्त, ५१
	पंढरीया विट्ठल, अहमदनगर कॉलेज, त्रैमासिक, फरवरी, ५२
कमलाबाई देशपाण्डे	महाराष्ट्रांतील कोटुम्बिक जीवन, प्रसाद, अप्रैल, ५३
	महाराष्ट्रांतील अपोरुषेय वाङ्मय वाङ्मय शोभा, जुलाई, ४६
कर्वे, चि. ग.	मुम्बई चा लोक-गीतें, प्रसाद, अप्रैल, ५२
	कहाण्यां च्या शास्त्रीय अभ्यास ची दिशा, प्रसाद, जनवरी, ५२
	आसरा अर्थात् जलदेवता सम्प्रदाय, प्रसाद, जून, ५२
	कोकणातील भुतें, प्रसाद, जुलाई, ५२
काले, डी. एन.	आगरी लोकांची गीतें (Agris: A Socio—Economic Survey निबन्ध का परिशिष्ट) १९५२ .
दुर्गा, भागवत	हृदयाचीं व भोडल्याचीं गाणी, सत्यकथा, फरवरी, १९५२
	वणजारी ओव्या व गीतें, साहित्य सहकार, सित.-अक्टू., १९५२
	कृष्ण देवता सीता. सत्य कथा, सितम्बर, १९५२
	तुलशीच्या कथा, सत्य कथा, अप्रैल, १९५२

दुर्गा भागवत	लोक-गीतां चा प्राचीन प्रचारक वररुचि, सह्याद्री, जनवरी, १९५३
	ट्यूटॉनिक लोक-साहित्य, केसरी, ४ जनवरी, १९५३
नरेश कवडी	लोक-विद्या आणि लोक-वाङ्मय, सत्य कथा, अक्टूबर, १९५२
चिपलूणकर, मो. वा	हवामान सम्बन्धीं चे वावय प्रचार, चित्रमय जगत, जुलाई, १९५२
मालती दाण्डेकर	ग्रामीण महिला वाङ्मय, वसन्त, जून, १९५२
वा. कृ. चोरघड़े	लोक-गीतें, साहित्य, अक्टूबर, १९४८
सरोजिनी बाबर	जुनी ठेव, मंदिर, १९५०
	जानपद ओवी, जनवाणी, दीवाली अंक, १९५०
	जानपद उखाणा, जनवाणी, दीवाली अंक, १९५१
	विरंगुल्या चीं गाणीं, लोक-वाङ्मय, दीवाली अंक, १९५२
	लोक-वाङ्मय, केवलानन्द सरस्वती सत्कार अंक, १९५२
	जात्यावरील गोड गाणीं, समाज शिक्षण माला पुष्प ६
	खडेयातील स्त्रियां चीं कविता, साहित्य पत्रिका, अप्रैल, मई, जून, ५०
सुलोचना सप्तर्षि	प्रेमाचा अथांग सागर, सगम, अक्टूबर, १९५२

अग्रेजी में लोकयानी साहित्य

Abbot, J. : The Keys of Power—A study of Indian Ritual and Beliefs, 1932

Afanassi Nikikin : A Pilgrimage Beyond Three Seas, 1469—1472.

Agarkar, A. J. : Folk—Dance of Maharashtra, Bombay.

Agarkar, A. J, : A Glossary of Castes, Tribes and Races in Baroda State, Bombay, 1912.

Aiyappan, A. : Anthropology of the Nayadis, Madras Govt. Museum Bulletins, N. S. Vol. II, No. 4, 1914.

Aiyanger, M.S. . Tamil Studies, Madras, 1914.

Aiyanger, M.S. : Allahabad University Studies, Vol. XI, 1935 , The original inhabitants of U.P.

Anand Coomarswami : Arts and Crafts of India.

Archer, W. G. : The Blue Groves, (George Allen and Unwin).

Archer, W. G. : Asiatic Society Monographs (Vol. IV, 1901).

Archar, W. G. : The Baloch Race.

Archer, W. G. : Indian Primitive Architecture.

Armfield, G. N. : General Phonetics.

Avalon, A, : Serpent Power, 1919.

Bake, A. : Indian Music, Baroda State Press.

Balmonts, K. : Collection of Budhist Legends, 1916.

Banerjee, B. : Ethnologic du Bengal.

Banerjee, U. K. : Hand book of Proverbs—English & Bengali, Calcutta, 1891.

Baring Cloud : Strange Survivals, 1892.

Barlett, F. C, : Psychology of Primitive Culture., Cambridge, 1923.

Basu, M.M. : Post Chaitanya Sahajiya Cult.

Beams, J. : A Comp. Grammar of Modern Aryan Languages, 1872.

Benoy Kumar Sarkar : Folk—Elements in Hindu Cultuıe.

Benoytosh Bhattacharya : Sadan Mata, Buddhist Gods, Iconography of Budha Gods.

Behel, P. : Ejective of Multani, 1924.

Benfey, J. : Panchtantra, 1859.

Belley, G. : Pb. Grammar 1904, Pb. Phonetic Reader. 1914.

Benerjee Shastri : Ethonography, Castes & Tribes With a list of the more important Works on Indian Ethonography by W. Seiglıng ın Gundrissder Indo-Arischen Philologie and Altertumskunde, II Band, Strassburg. 1912.

Bengal Districts Gazeteers

Bidpai : Fables of the Indian Philosopher, St. Petersberg, 1 7(2

Bhandri ,N.S. : Snow balls of Garhwal (Lucknow).

Bhargava, B.S. : Criminal Tribes.

Bhandarkar, K.G. : Wilson Philological Lectures 1877-1914.

Block, J. : Indo Aryan, 1934. Bombay Presidency Gazeteer (Vol IX), 1901, Guzerat population, Hindus.

Boyd ; Village Folk of India. 1924.

Briffault, R. : The Mothers : A study of the Origins of Sentiments and institutions, 3 Vols., London, 1927.

Briggs, G.W. The Chamars, R.L.I. Series.

Briggs, G.W. Gorakh Nath & Kanphata Yogis, Cal., 1938.

Burton, R.F. Sindh and the Races that inhabit the valley of Indus, 1851.

Burton, R.F. : Sindh Revisited, 1877.

Buck, C.H. : Faiths, Fairs and F ꝏ tivals of India, 1917.

Burne, C.S. : The Hand book of Folk lore, 1914. Bulletin of the Dec. College Research Institute, Vol. I No. 1, Dec. 1939 : Some Folk Songs of Maharashtra.

Boys. F. : Primitive Art.

Capt. Starckey : Dict. of Eng. & Pbi., 1849.

Carrey : A Grammer of Pbi. Language, 1812.

Chanda, R.P. : Non Vedic Eliments in Brahmanism, Varendra Research Society, Rajshahi, Bengal, East Pakistan.

Chatterji N. : Yatra.

Chatterji, S.K. : Origin and Development of Bengali Language, 2 Vol., 1927.

Chatterjee, S.K. : Indo-Aryan & Hindi, 1942.

Chelkesa, T. : Parallel Proverbs ; Tamil & English, Madras, 1869.

Christian, J. : Bihar Proverbs, London, 1891.

Coming, T.F. & Balley G. : Pbi. Manual Grammer, 1912.

Clodd : Myths & Dreams, 1885.

Cox, M.R. : Introduction to Folk-lore.

Crooke, W. : An Introduction to Popular Religion and Folk-lore of N. India.

Crooke, W. : Tribes and Castes of N.W.F.P. of India.

Dalton : Descriptive Ethnology of Bengal.

Das Gupta, S.B. : Obscure Religious Cults of Bengali Literature, Calcutta University, 1940.

Das, S. : History of Sakto.

Devendra Satyarthi : Meet my People, 1952.

Dey, L.B. : Bengal Peasant Life, London, 1878.

Dey : Music of Southern India.

Dhar, Som Nath : Folk Tales of Kashmere, Tales from Kash mere, Kashmere Eden & East, Hindkitabs, 1949.

Dinesh Chandra Sen : History of Bengali Language and Literature, 1911.

Divetia. N.B. : Gujrati Language & Literature, Vol. I-II, 1929.

Divetia, N.B. : Milestones in Gujerati Literature.

Donald A. Mackamzie : Indian Myth & Legend.

Dowson, J. : A classical Dictionary of Hindu Mythology and Religion, Geog., Hist. and Literature, 4th, Edition, 1903.

Dubois, L. : Hindu Manners, Customs & Ceremonies, 1906.

Dube, S. C. : The Kamars, Lucknow, 1912.

Dube, S. C. : Field songs of Chhatisgarh, Lucknow.

Dubash, Miss P.N. : Hindu Art in its social settings, 1936.

Ehrenfels, O.R. : Mother Right in India, Hyderabad (Dn.), 1941.

Elliot H.M. : Memoirs on the History, Folk-lore and Distribution of the Races of the N.W.F.P. of India, 1869.

Elwin, V. & Hivale : Songs of the Forest, Allen & Unwin.

Elwin, V. & Hivale : Folk-Songs of Maikal Hills, O. U. P., Bombay, 1944.

Elwin, V. : The Baiga, Murray, London, 1939.

Elwin, V. : The Agaria, O.U.P., Bombay, 1942.

Elwin, V. : Maria Murder & Sucide, O.U.P., Bombay, 1943.

Elwin, V. : The Maria and their Ghotul, Bombay, 1947.

Elwin, V. : Folk-Tales of Mahakaushal, Bombay, 1944.

Elwin, V. : Folk Tales of Chhatisgarh. Bombay, 1946.

Elwin, V. : The Tribal Art of Middle India, O.U.P., 1951.

Elwin, V. : Bondo High lender, O.U.P.

Elwin, V. : Myths of Middle India, O.U.P.

Elwin, V. : The Religion of the Hill Saora, O.U.P

Elwin, V. . Tribal Myths of Orissa, O. U. P.

Elwin. V. : The Aboriginals, O.U.P.

Elwin, V. : The Leaves from the Jungle, Murray, London.

Emeneau, M.B. : Kota Texts, California, 1944-46.

Enthoven, R.E. : Folk-lore of Bombay, Oxford, 1924.

Enthoven, R.E. ; Folk-lore, Notes, Tribes and Castes of Bombay.

Eunice Ticljens : The Poetry of the orient.

Encyclopaedia Britanica.

Faggon : Hissar Gazeteers

Fallan, S. W. : A Dictionery of Hindustani Proverbs.

Featherman, A. : Social History of the Races of Mankind, 7 Vols., 1881-19.

Fergussen, F. : History of Indian and Eastern Architecture, 1876, London.

Fiske : Myths & Myth Makers, 1873.

Fox Strangeway : Music of Hindustan.

Fitz Patrick, W. : Folk-lore of Birds & Beasts of India. J. Bom. Nat., Hist. Society, Vol. XXVIII, 1921-1922. P.P. 562-65.

Forsyth, J. : The High lands of Central India, London, 1871.

Furer-Haimendorf, C. Von : The Chenchus, Hyderabad, 1943.

Ganesh Narain Deshpande : Dictionery of Marathi Proverbs, Poona, 1900.

Ganga Dutta Upretti : Proverbs & folk-lore of Kumayun and Garhwal, 1892.

Gangouley, N. : Folk Tales of India, Hind Kitabs Ltd., 1953.

Gairola, T.D. : Psalms of Dadu.

Gairola, T.D. : Folklore of Garhwal, Vishwa Bharti, Quarterly Vol. IV, 1926.

Gerassim Lebedev : Europe's First Grammers of Colloquil Hindi, 1801.

Ghure, G. S : Race & Caste in India, Bombay, 1951.

Gover, C. E. : Folk Songs of Southern India, 1872.

Gover, G : Himalayan Village, London, 1938.

Gomme, G.L. : The Village Community, 1890.

Gomme, G.L. : Folk-lore Relice of Early Village life, 1885.

Gomme, G.L. : Ethonology in Folk-lore, 1892.

Gomme, G.L. : Folk-lore as an Historical Science, 1908.

Goswami, P.D. : The Bihu Songs of Assam.

Griffiths, W. G. : Folk-lore of the Kols, Man in India, Vol. XXIV, 1944.

Grierson, G.A. : Linguistic Survey of India, Vol. 11.

Grierson, G.A. : Bihar Peasant Life. Patna, 1918.

Grierson, G.A. : Some Bihari Folk-Songs, J.R.A.S., Vol, XVI 1884, P.P. 1076.

Griorson, G.A. . Some Bhojpuri Folk Songs, J.R.A.S., Vol., XVIII, 1886, P.P. 207.

Grierson, G. A : Folk-lore from Eastern Gorakhpur, J.A.S.B. Vol. Lii, 1813, P.P. 1

Grierson, G.A. : Two Versions of the Song of Gopichand, J.A.S.B., Vol. Liv, 1885, Part 1, P.P. 35

Grierson, G. A. : The Song of Bijai Mal J.A.S.B. Vol. Liii, 1884, Part III, P.P. 94

Grierson, G.A. : The Song of Alhas' marriage, Indian Antiquary Vol. XIV, 1885, P.P. 209.

Grierson, G.A. A Summary of the Alha Khand, I.A. Vol XIV. P.P. 255

Grierson, G.A. : Selected Specimens of The Behari Language, The Bhojpuri Dialect, The Git Naka Banjarwa, Z.D. M.G., Vol. XLiii, 1889, PP- 468

Grierson, G.A. : The Popular Literature of Northern India, Bulletin of the School of Oriental Studies London, Vol 1, Part III, 1922, P.P. 87

Grierson, G.A: The Lay of of Alha, O.U.P., 1923

Grierson, G.A: The Song of Manik Chandra, J. A. S. B., Vol. XIII, Part I, No. 3, 1818

G ierson, G.V. The Maria Gonds of Bastar Oxford, 1938

Grouse : A District Memoire of Mathura, 1800

Gumer : The begining of Poetry

Gurdon, P.R.T : The Khasis, 1914, London

Gurdon, P.R.T : Some Assamese Proverbs, 1896

Gune, P D. : Introduction to Comparative Philology, 1918

Haldar, S. : Ho Folk-lore, J. B. O. R. S. Vol. VIII, 1922.

Halliwell, J.C. : Popular Rhymes & Nursery Tales, 1849:

Har Prasad Shastri: Living Buddhism in Bengal

Henpal, R.C. The Legends of Punjab, 1845

Hislop, S. : Papers Relating to the Aboriginal Tribes of Central Provinces, Nagpur, 1866

Hivale, Shamrao : The Pardhans of Upper Narbada Valley, Bombay, 1946.

Hodson, T. C. : The Meitheis, 1908.

Hoffman, J. & Van Emelen, A. Encyclopaedia Munderica, Patna, 1930-31.

Houdonzestvena Samadeinast : Artistic Amateur Activities.

Hutton, J. H. : A primitive Philosophy of Life, Oxford, 1938.

Hutton, J.H. : A Angami Nagas, 1921.

Hutton, J.H. : The Soma Nagas, 1921.

Hunter, W. W. : Annals of Rural Bengal, 1868.

Hutchinson, H.N. : Marriage Customs in Many Lands.

Ibbetson, D. : Punjab castes, Lahore, 1916.

Indian Antiquary :

Iyer, L.A.K. : The Travancore Tribes and Castes, Trivandrum, 1937-41.

Iyer, L.A.K. : The Cochin Tribes and Castes, Madras, 1909-12.

Iyer and Nanjundayya, H. V. : The Mysore Tribes and Castes, Banglore, 1928.

Iyenger, M. V. : Popular Culture in Karnatak.

Jain, Banarsi Dass : Phonology of Punjabi, 1934.

Jain, Banarsi Dass : Ludhiana Phonetic Reader, 1934.

Jasimuddin : The Field of Embroidered Quilt.

Jamsetjee Petit : Collection of Gujrathi Proverbs, Bombay.

James Long : Eastern Proverbs and Emblems, London, 1881.

Jawaher Singh Munshi : A vocabulary of two thousand words from English in to Punjabi, 1895.

Jhaveri, Krishanlal Mohanlal : Mile Stones in Gujerathi Literature.

Jogendra Bhattacharya : Hindu Castes and Sects, Thacker & Sons, 1896.

Kabir Humayun (ed.) Green and Gold Stories and Poems, from Bengal, Chapmen & Hall.

Kalipada Mitra : Deities of Jalkar, B & O. Research Journal, 1925.

Kunjbehari Das : A study of Orissan Folk-lore, Vishwa-Bharti, 1953.

Koppers, W. : Bhagwan the Supreme Deity of the Bhils, Enthropes, 1940-41.

Leech : Sketch of the Bilochi Language, J. A. S. B., 1840.

Leifiner : Dardistan in 1866, 1886 & 1893, 1895.

Leitner : History of Indegenius Education in the Punjab, 1852.

Leitner, G. W. : Manners and Customs of the Dards.

Lewison, R. G. : Folk-lore of Assamese, J.A.S.B. Vol. V, 1939.

Lewie, R.H. : Culture and Ethonology, 1917.

Lewie, R.H. : Primitive Religion, London, 1925.

Logan, W. Malabar, Madras, 1887.

Longworth, D.M. : Popular Poetry of lhe Bilochas. The Folk-lore Society, London, 1925.

Luard, C.E. : Ethonological Survey of Central India Agency, Lucknow, 1909.

Mackenuzie, Donald A. : Indian Myth and Legend, The Gresham, Publishing Co , London.

Maconochie : Selected Agricultural Proverbs of the Punjab, 1890.

Majumdar, D.N. A Tribe in Transition, Calcutta, 1937.

Majumdar, D.N. Some Aspects of the Cultural life of Khasas of the Cis-Himalayan Region in J.R.A.S.B, Calcutta, 1940.

Majumdar, D.N. The Fortunes of Primitive Tribes.

Majumdar, D.N. Folk Songs of Mirzapur.

Majumdar, D.N. The Matrix of Indian Culture

Majumdar, D.N. The Affairs of a Tribe.

Mahiya Singh : The Punjabi Dictionary, 1895.

Martirengo : Essays in the Study of Folk Songs, 1886.

Maulana Abdulgafur : A Complete Dictionary of the terms by The Criminal Tribes of the Punjab.

Mc Theal, G. : Kafir Folk-lore, 1886.

Mills, J.P. : The Lhota Nagas, 1923.

Mills, I. P. : The Ao Nagas, 1926.

Minayev, J.P. : Essays on Ceylon and India.

Minayev, J.P. . Contemporary Indian Folk-lore, 1880.

Mohan Singh Gorakh Nath & Midieaval Hindu Mysticism, 1938.

Mohan Singh A Short History of Punjabi Literature, 1938.

Mouztalna Somodeinost : Music Amateur Activities.

Mukherjee, A. : Folk Art of Bengal.

Mukherjee, C. : The Santals, Calcutta, 1943.

Narendra Dhir Evolution of Punjabi Language, 1953.

Narendra Dhir Punjab Janpada, its Area and Culture, 1953.

Narendra Dhir Punjabi Dialects and its Growth, 1954.

Narendra Dhir Classifications of Punjabi Folk-lore, 1954.

Narendra Dhir A New Path to Linguistic Survey of India, 1957.

Narendra Dhir Several Bulletins of Folk-lore Akadem 1957-61.

Natesha Shastri Folk-lore in Southern India, 3 Parts.

Natesha Shastri Familiar Tamil Proverbs, Omens, and Superstitions of Southern India, 1912.

Nanjundayya, H. V. &] Anant Krishna Aiyer] L.K.] The Mysore Tribes and Castes, Mysore, 1928-35.

Newton, E. P. : A guide to Punjabi, 1896.

Neton, E.P. : Punjabi Grammar, 1898.

Newton, J : A gramer of the Punjabi Language, 1851

Neuld Hackumsutt, R. : Linguistic and Oriental essays, 1846.

Oubharain : Multani Glossary, 1921.

Pairry, N.E. : An Article on Indian Languages, 1853.

Pairry, N. E. : The Lakhers, 1932, London.

Pangtey, K.S. : Lonely Lurrows of the Borderland, Lucknow

Penzer, N.M : The Ocean of Story, London, 1924-28

Percival, P. : Tamil Proverbs with English Translations, Madras 1874.

Petrov, P. I. : The Song of Nala, 1835, Belinsky

Playfair, A : The Garos, London, 1909

Popley : Music of India

Patel, M. B. : Some Aspects of Gujrati Folk-Songs, 1958

Powell Vigfusson: Corpus Poeticum Boreal, 1883

Projesh Banerjee : The Folk Dance of India, Allahabad, 1944

Projesh Banerjee. Dance of India, Allahabad

Rafy, Mrs. :Folk Tales of Khasis, London, 1920

Raiyers, M. : English Punjabi Dictionary, 1829

Randhawa, M. S. : Kangra Folk Songs, 1952

Randhawa, M. S. : Hariana Folk Songs, 1952

Randhawa, M.S. : Kangra Valley Paintings, 1954

Randhawa, M.S. : Kulu Valley Folk Songs, 1956

Ram Krishna, L. : Punjabi Sufi Poets.

Ravipati Guruvaya Guru : A Collection of Telgu Proverbs, Madras, 1868

Rev Herman Tensen: A Collection of Tamil Proverbs, 1891, Report On The Census of Bengal, Bihar & Orrisa & Sikkim, Vol. VI, Census of India, 1901 Report on The Census of India, Vol: I of Census of India, 1931, Delhi, 1933

Rice, S. : Hindu Customs and their Origins, 1937

Risley, H.H. : The Tribes and Castes of Bengal, Calcutta, 1891

Rivers, G. H. R. : The Todas, London, 1906

Robert, M : A Grammar of Punjabi Language, 1838

Roberston, G.S. : The Kafirs of Hindukush, 1896

Rochiram, G : Hand book of Sindhi Proverbs, Karachi, 1845

Rodrigner, E.A. The Hindoo Castes, 1846

Rose, H. A : A Glossary of The Tribes and Castes of the Punjab and N. W. F. P. Of India, 1919

Roy, S. C. : The Mundas and their Country, Calcutta, 1912

Roy, S.C, ; The Oraons of Chota Nagpur, Ranchi, 1915

Roy, S. C. The Hill Bhuiyas of Orissa, Ranchi, 1935.

Roy, S. C. : The Kharias. Ranchi, 1937,

Roy, S.C. : The Birhors, Ranchi, 1925

Roy, S.C. : Oraon Religion and Customs, 1928,

Roy, S.C. : The Divine Myths of Mindas', J. B. O. R. S. Vol. II, 1916

Russel, R. V. and Hiralal : The Tribes and Castes of Central Provinces of India, 1916, London

Russetti, D.G. : Ballads of Fail Ladies

Ruth Sawyer : The Way of Story Teller

Sarat Chandra Mitra: A Note on the Nepalese Belief, Journal of B & O, R, S, Vol, XVII

Sarat Chandra Mitra: Styapira Legends in Santhali

Sapeker, G.G. : Marathi Proverbs, Poona 1872

Sarkar, B,K. : Folk Element in Hindu Culture

Save, K.G. : The Warlies, Bombay, 1945

Saligram, C. G. : The Veddas, Cambridge, 1911

Sen Gupta P.P. : Dictionary of Proverbs, Calcutta, 1899

Sen, D.C. : Folk literature of Bengal, 1920

Sen, D, C, : Glimpses of Bengal Life, 1925

Sen, D. C. History of Bengali Language and Literature, Calcutta University, 1911

Sen, D, C. : Eastern Bengal Ballads, My Men Sing, Vol. 1-6

Seth, Pran Nath, : Several Articles in Kurukshetra

Shahidullah : Les Chentes Mysteques

Shakesphere, J. : Lushei Kuki Clan, 1912

Shaligram : Anglo Gurumukhi Dictionary. 1897.

Sharma, Dunichand : Dewar Bhabi in Kangra Folk Songs, Delhi, 1954.

Shaiv, W. : Notes of the Thandon Kukis, Journal of A.S.B., Vol. XXIV, 1928, No. 1, Calcutta, 1929.

Sherreff A.G. : Hindi Folk Songs, Hindi Mandir, Allahabad.

Siddheshwer Varma : Lahindi Prononciations.

Slater, G. : Dravadian Elements in Indian Culture, 1924.

Smith, L.F. : Manners, Customs and Ideas of the Natives of India; Lucknow, 1870.

Stack, E. : The Mikirs, 1908.

Steel, F.A. : Tales of the Punjab, London, 1894.

Stein, A. : Hatim's Tales, London, 1923.

Stocks, C. : Folk Lore & Customs of Lepchas of Sikkim, J.A.S.B., Vol. XXI, 1925.

Struve, V.V. (ed) : Early Indus Civilizations, U. S. S. R. Academy of Sciences.

Swynnerton, C. : Romantic Tales from the Punjab, West Minister; 1903.

Tantsova Samodeinost : Dance Amateur Activities.

Teatralna Somodeinost : Dramatic Amateur Activities.

Temple, R.C. : The Legends of Punjab, 1885.

Tinlayev, S.A. : The Eastern Theatre & Indian Architecture; Leningrad, 1929 and Mascow, 1939.

Thoothi, N.A. : The Veshnavas of Guzerat, 1935.

Thomas, P. : The Story of the Cultural Empire of India; Joseph Thomson & Co. Ernaculam, Kerala.

Thorenton, T.S. : A Hand book of Lahore, 1827.

Thiselton Dyer : The Folk Lore of Plants, 1889.

Thurston, E. and Rangachari, K. : Castes & Tribes of Southern India, Madras, 1909.

Thurston, E. : Omens & Superstitions of Southern India in 7 Vols., Madras, 1909.

Thurston, E. : Ethnographical Notes on Southern India, Madras, 1906.

Tissdall, M. : A Simplified Grammar and Reading book of the Punjabi Language.

Tod : Annals and Antiquities of Rajasthan, Oxfrod, 1920.

Toru Dutta : Ancient Balladds& Legends of Hindusthan,1882.

Triele, C.P. : Origin of Religion.

Tylor, E.B. : Primitive Culture, 1903.

Tylor, E.B. : Early History of Mankind, 1865.

Vasu, N.N. ; Modern Buddhism in Orissa, Calcutta, 1911.

Venkatswami, M.N. : The Folk Tales of C.P. in Indian Antiquarry, Nos. 24, 25, 26, 28, 30, 31 and 32.

Vuy Pomosht na Naroduite Horove i Anasambli : In Aid of Folk Choirs & Ensembles.

Waddel, : Lamanism.

Wilson, H.H. : Religious Seats of the Hindus, Trubner, 1862.

Yusuf Hussain : Mystic India in Middle Ages.

Zhukovsky, V.A. . Nala Damayanti, 1844.

विदेशी लोक-साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें

Aarne Stith Thomson : The Types of the Folk-tale.

Adelaide Witham : English & Scottish Ballads, River side literature Series Houghton Miffin Co.

Afanassy Nikitin : A Pilgrimage Beyond 3 Seas, 1466 and 1472.

A.H. Upham : Typical Forms of English Literature, Article of Ballads, Oxford University Press, London, 1927.

A.K. Davis : Traditional Ballads of Virginia, Cambridge Mass., 1929.

Allan, Francis, D. : Allans Lone Star Ballads, Galveston, Texas, J.D. Sawyer, 1874.

Allan Lomax & R.U. Seeger : Folk Songs : U.S.A. New York, 1949.

Allen, De Witt Clinton: Old Ballad Days in Western Missouri, Glimpses of the past (Missouri Historical Society, St. Louis) Vol. 2, No. 12 (Nov. 1935) P.P. 133-150.

Allen William, F., Charles P. Ware and Lucy Mc Kim, Garrison : Slave Songs of United States, A. Simpson & Co. New York, 1867.

Ames, L D. : "The Missouri Play Party", Journal of American Folk Lore, Vol. 24, No. 93 (July-Sept. 1911) P.P. 295-318.

Anatoly Yar Kravchenko : Art By The People, Vokes Bulletin, No. 6(89), 1954, U.S.S.R. Society for Cultural Relations with foreign Countries, Mascow.

Anderson, Geneva : Additional English and Scottish Ballads Found in East Tennessee, Tennessee Folk Lore Society Bulletin Vol. 8, No. 3 (Sept. 1942) P.P. 59-78.

Andrew Lang : A collection of Ballads, Chapman & Hall.

,, : Article of Ballad, Encyclopaedia Britanica, 1910.

,, : Sir Walter Scott & Border Minotrelsy, Longmans' Green & Co. ; 1910.

,, : Chambers' Cyclopaedia of Engiish Literature, 1902 P.P. 520.

Archer Taylor : The Proverbs, Cambridge, Mass, 1951.

Arthur Quiller Couch : The Oxford Book of Ballads, Oxford University Press, London.

Ashton John : Modern Street Ballads, Chatto & Windus, London, 1888.

Atkins Laura : Some Play-party Games of South Texas, Texas Folk-Lore. Society Publications, No. 17, (1941) P.P. 98-107.

Aubrey, J. Remains of Gentilisme & Judaisme, Folk-Lore Society, 1880.

Babcock, William Henry : "Carols & Child-Lore at the Capital", Lippin-Cott's Magazine, Vol. 38, Sept., 1886, P.P. 320 342.

Babcook William Henry . "Games of Washington Children", American Anthropologist, Vol. 1, No. 3, July, 1888, P.P. 243-284.

,, ,, : "Song Games & Myth Dramas at Washington" Lippin Cott's Magazine, Vol. 37. March 1886, P.P. 239-257.

B.A. Botkin : A Handbook of American Folk Lore.

Backus Emma M. : "Early Songs from North Carolina", Journal of American Folk-lore, Vol. 14, No. 52, Oct.-Dec,, 1901, P.P. 286-294.

" : "Song Games from Connecticut", Journal of American Folk lore, Vol. 14, No. 55, Oct.-Dec. 1901, P.P. 295-299.

Ball, Leona Nessly : "The Play Party in Idaho", Journal of American Folk-lore, Vol. 44, No. 171, Jan.-Mar, 1931, P.P. 1-28.

Bancroft, Jessie H. : Games Macmillan Co., New York, 1921.

Barbour, Frances M. : "Some Fusions in Missouri Ballads," Journal of American Folk-lore. Vol. 49, No. 193, July-Sept. 1936, P.P. 207-214.

Baring Gould, S. : A Book of Nursery Songs & Rhymes, A. C. Mc Clurg & Co., Chicago, 1907.

Baring-Gould, S. & Cecil, J. Sharp } English Folk-Songs for Schools, J. Curwan & Sons, Landon, 1906.

Baring Gould, S. & H.F. Sheppard : A Garland of Country Songs, Methuen & Co., London, 1895.

Barnes, Ruth A. : I hear America Singing; An Anthology of Folk-Poetry, The John. C. Winston Co., Chicago, Philadelphia, 1937.

Barret, William Alexander : English Folk Songs, Novello & Co., London, 1891.

Barrows, Mary : "Some Half forgotten New England Songs", New England Magazine, N.S. Vol.1-2, No.1, March 1895, P.P. 472-475.

Barry, Phillips: "The Ballad of Lord Randall in New England" Journal of American Folk-lore, Vol. V, No. 13, Oct-Dec. 1903 P.P. 258-264.

Barry, Phillips : "American Folk Music" Southern Folk-Lore, Quarterly, Vol. 1, No. 2, June, 1937, PP. 29-47.

Barry Phillips : "The Ballad of the Cruel Brother" Journal of American Folk-Lore, Vol. 28, No. 109, July-Sept. 1915, PP. 300-301.

: "The Collection of Folk Songs" Journal of American Folk-Lore, Vol. 27, No. 103, Jan-March 1914, PP. 77-78.

: "The Folk Music in America" Journal of American Folk-Lore, Vol. 22, No. 83, Jan-March 1939, PP. 72-81.

: 'A Garland of Ballads' Journal of American Folk-Lore, Vol. 23, No. 90, Oct-Dec. 1911. PP. 446-454.

: "Irish Come-All Ye's" Journal of American Folk-Lore, Vol. 22, No. 86, Oct-Dec. 1909, PP. 374-388.

: "Native Balladry in America" Journal of American Folk-Lore, Vol. 22, No. 86, Oct-Dec., 1909, PP. 365-373.

: "Irish Folk Songs" Journal of American Folk-Lore, Vol. 24, No. 93, July-Sept. 1911, PP. 332-343.

: "The Origin of Folk-Melodies" Journal of American Folk-Lore, Vol. 23, No. 90, Oct-Dec. 1910, PP. 440-445.

: "Some Aspects of Folk Songs" Journal of American Folk-Lore, Vol. 25, No. 97, July-Sept. 1912, PP. 274-283.

: "Some Traditional Songs" Journal of American Folk-Lore. Vol. 18, No. 68, Jan-March 1905, PP. 49-59.

: "Traditional Ballads in New England, "Journal of American Folk-Lore, Vol. 18, No. 69, April-June. 1905, PP. 123-138.

: "The Transmission of Folk Songs", Journal of American Folk-Lore, Vol. 27, No. 103, Jan-March 94, PP. 1617-76.

Barry Phillips, **Fannil Eckstrom** & **Mary W. Smyth** : British Ballads from Maine, Yale University Press, New Haven, 1929.

Barton, **William Eleazar** : Old Plantation Hymns, Wolffe & Co., Boston, New York, 1899.

Bascom, **Louise Rand** : "Ballads & Songs of Western North Carolina", Journal of American Folk Lore, Vol. 22, No. 84, April-June 1909, PP. 238-250.

Beatty Arthur · "Some Ballads Varriants & Songs", Journal of American Folk-Lore, Vol. 22, No. 83, Jan-March 1909, PP. 63-72.

Beck, E.C. : "The Farmers' Curst Wife" (Child 278) in Michigan" Southern Folk-Lore, Quarterly, Vol. 4, No. 3 Sept. 1940, PP. 157-158.

Belden, H. M. : "Balladry in Missouri", Journal of American Folk-Lore, Vol. 25, No. 95, Jan-March 1912, PP. 1-23.

„ : (ed.) Ballads & Songs Collected by the Missouri Folk-Lore, Society, University of Missouri Studies, Columbia, Mo., Vol. 15, No. 1, Jan. 1, 1940.

„ : "Folk Songs in America-Some recent publications", Modern Language Notes, Vol. 34, No. 3, March 1919, PP. 139-145.

„ : "Old Country Ballads in Missouri", Journal of American Folk-Lore, Vol. 19, No. 74, July Sept. 1906, PP. 231-240 ; Vol. 29, No. 75, Oct.-Dec. 1906, PP. 281-299.

„ : A partial list of Song Ballads and other popular poetry known in Missouri, Missouri Folk-Lore Society, Columbia, Mo., 1910.

„ : "Popular Song in Missouri The returned lover", Archiv furdes Stadiumder neueren sprachen and Literaturen, Vol. 120, 1908. PP 62—71.

Belden, H.M. : "The Study of Folk Song in America", Modern Philologgy, Vol. 2. No. 4, April. 1905, PP. 573-579.

Bell, Robert (ed) : Early Ballads, John W. Parker & Sons, London, 1856.

Ben, C Lumpkin : Folk Songs on Records, Boulder, Colorado, 1948.

Ben, C. Clough : The American Imagination at work, Alfred, A. Knoff, New York, 1947.

Bidpai : In 1762 The Fables of The Indian Philosopher, St. Petersburg, 1762.

Billups, Edward W. · The Sweet Songster, Catlettsburg, Ky., 1854.

Bishop Tomas Percy (ed) : Reliques of Ancient English Poetry, 1765.

Black, G. B. : Folk Medicine, Folklore Society. London, 1883.

Blair, Kathryn : "Swing your Partner !" Journal of American Folk-Lore, Vol. 40, No. 155, Jan.-March, 1927, PP. 96-99,

Bond Donald, F. : 'English Virsions of The Carol of the twelve Numbers" Southern Folk-Lore Quarterly, Vol. 4, No. 4,Dec. 1940, PP. 247-250.

Bone, David William : Capstan Bars, Brace & Co., Horcourt, New York,1932.

Botkin, B.A. : The American Play-Party Song, The University Studies of the University of Nebraska, Lincoln, Neb., Vol. 37, Nos. 1-4, 1937.

Botkin, B.A. : "The Play Party in Oklahoma" Texas Folk-Lore Society Publications, Vol. 7. 1928, PP 7-24.

Botkin, B.A. (ed) : A Treasure of American Folk-Lore : Stories Ballads & Traditions of the People. Crown Publishers, New York, 1944.

Bradley, William Aspenwall : "Song-Ballets & Devils Ditties' Harpers' Magazine, Vol. 130, No. 780, May, 1915, PP. 901-914.

Brand, J. : Observations on popular Antiquities, London, 1877

Brewster, Paul G. : Ballads & Songs of Indiana, Indiana University. Bloomington, 1940.

" : "Game Songs from Southern Indiana" Journal of American Folk-Lore, Vol. 49, No. 193, July-Sept. 1936, Pp. 243-262.

" : "More Indiana Ballads & Songs" Southern Folk-Lore quarterly Vol. 5, No. 3. Sept. 1941, PP. 169-190.

" : "More Songs from Indiana" Southern Folk-Lore quarterly, Vol. 4, No. 4, Dec. 1940, PP. 175-203.

" : "Some Folk Songs from Indiana" Journal of American Folk-Lore, Vol. 57, No. 26, Oct.-Dec. 1944, PP. 282-287.

" : "Traditional Ballads from Indiana" Journal of American Folk-Lore, Vol. 48, No. 190, Oct.-Dec. 1935, PP. 295-317.

Brimlly Johnson, R. (ed) : "The Book of British Ballads", Everyman's Library; Dutton & Co.

Brockway, Howard : "The quest of the Lonesome tunes," Papers and proceedings of the music teacher's National Association, 41st Annual meeting, 1919, Series 14, 1920, PP. 59-67.

Brown, Florence & Neva, L. Boyd : Old English & American Games for School and playground, Saul Brothers, Chicago, 1915.

Brown, Frankclyde : "Ballad Literature in North Carolina." Proceedings and addresses of the fifteenth Annual Session of the Litrary and Historical Association of North Carolina, Raleigh, Dec. 1-2, 1914, PP. 92-102, North Carolina Historical Commission, Bulletin No. 18.

Brown, John Mason : "Songs of the Slave," Lippincott's Magazine, Vol. 2, Dec. 1868, PP. 617-623.

Bryant, Frank Egbert : A History of English Balladry and other Studies, R. G. Badger, Boston, 1913, Bullettin of the Folk-Song Society of the North-east 1930-1937.

Burchenal Elizabeth (ed.) : American Country Dances, G. Schirmer, New York, 1918.

Burlin, Natalie Curtis : Hampton Series Negro Folk Songs, 4 Vols., G. Schirmer, New York, 1918-1919.

Burton, R. : Anatomy of Melancholy, London, 1883,

Calkins, E. E. "Wonderful Words of Life", Atlantic Monthly, Vol. 159, No. 2. Feb. 1937, PP. 247-253.

Cambiare, Celestins Pierre : (Comp.) East Tennessee and Western Virginia Mountain Ballads, The Mitre Press. London. 1934.

Campbell, John C. : The Soutnern Highlander and his Home land, Russell Sage Foundation, New York, 1921.

Campbell, Marie : "Liquor Ballads from the Kentucky Mountains" Southern Folk-Lore quarterly, Vol. 2, No. 3, Sept. 1938, PP. 157-164.

Campbell, Olive Dame : Songs & Balladas of the Southern Mountains, Survey, Vol. 33, Jan. 2, 1915, PP. 371-374.

Campbell, Olive Dame & Cecil J. Sharp : English Folk Songs from the Southern Appalachians, G.P. Putnam's Sons, New York and London, 1917.

Campbell, J.S. : Notes on the Spirit basis of belief and customs, Bombay. 1885.

Carden, Allen (Comp.) . The Missouri Harmony, E. Morgan and Son, Cincinnati, 1835.

Carlisle, Irene : "......And Doodrs of Ivoree" Little Rock, Arkansasa Gazette, Sunday Magazine, May 3; and May 10, 1942.

Carlisle, Natalie Taylor : Old Time Daaky Plantation Melodies", Texas Folk-Lore Society Publications, Vol. 5, 1926, PP. 137-143

Carl Sandbury : The American Song-bag, Harcourt Brace and Co., New York, 1926.

Cecil Sharp & Karpels : English Folk Songs from the Southern Appalachians, New York, 1932.

Chambers, R. : Book of Days, Vol. I and II, London.

Chappell, Louis W. : Folk Songs of Roanoke and tha Albemarle, The Ballad Press, Morgantown, W. Va. 1939.

Chase Richard : Old Songs and Singing Games, The University of North Carolina Press, Chapel Hill, 1938 and "The Cherry-Tree Carol" Journal of American Folk-Lore, Vol. 29, No. 113, July-Sept. 1916, P. 417.

Chaunecy Sanders: An Introduction to Research in English Literary History. Article on Problems in Folk-Lore" by Stith Thomson. Macmillan & Co., New York.

C. H. Herford : The Warwick Liberary of English Literature, Volume on "Pastorals", Blackie & Sons; London.

Child, Francis James (ed.) : The English & Scottish Popular Ballads, 5 Vols., Mifflin & Co., Boston and New York, Houghton, 1882-1898.

Christie, W. : Traditional Ballads Airs, 2 Vols, Edmonston & Douglas, Edinburg, 1876-1881.

Clandiadelys : A Treasury of American Superstitions, Philosophical Library, New York, 1948.

Clarke, Marry Olmstead : "Song Games of Negro Children in Virginia," Journal of American Folk-Lore, Vol. 3, No. 11, Oct.-Dec. 1890, PP. 288-290.

Colcord, Joanna Carver (Comp) : Songs of American Sellermen, W. W. Norton & Co., New York, 1938.

Cole, Pamela Mc Arthur : "Fragments of Two American Ballads", Journal of American Folk-Lore, Vol. 14, No. 53, Apr-June 1901, PP. 139-142.

Coleman, Satis N. & Adolph Bergman : Songs of American Folks. The John Day Co., New York 1942.

Combs, Josiah H. : "Dialect of the Folk Song" Dialect Notes, Vol. 4, No. 5, 1916, PP. 311-318.

" : "Cornstalk Fiddle & Buckeye Bow" in Folk Say, A Regional Miscellany, edited by B.A. Botkin, University of Oklahoma Press, Norman, 1930.

" : Folk Songs du Midi des Etats-Unis, Les Presses Universitaires de France, Paris, 1925.

" : Folk Songs from the Kentucky Highlands, G. Schirmer New York, 1939.

" : "A Traditional Ballad from the Kentucky Mountains" Journal of American Folk-Lore, Vol. 23, No. 89, July-Sept. 1910, 381-382.

Conway, M. D. : Demonology and Devil-Lore, London, 1879.

Cooper, W.M. : Flagellation and the Flagellants, London, 1887.

Cox, G. W. : Introduction to the Science of Comparative Mythology and Folk-Lore, London, 1881.

" : Mythology of the Aryan Nation.

Cox, John Harrington (ed.) : Folk Songs of the South, Harvard University Press, Cambridge, 1925.

Cox, John Harrington (ed.) : "John Hardy", Journal of American Folk-Lore, Vol. 32, No. 126, Oct. Dec. 1919, PP. 505-520.

,, : "Singing Games", Southern Folk-Lore Quarterly, Vol. 6, No. 4, Dec. 1942, PP. 183-261.

,, : Traditional Ballads Mainly from West Virginia, National Service Bureau, New York, 1939.

Cox, M. R. : Introduction to Folk-Lore.

Craddock, J.R. : "The Cowboy Dance" Texas Folk-Lore Society Publications, Vol. 2, 1923, PP. 31-37.

Creighton, Helen (ed.) : Songs & Ballads from Nova Scottia, J. M. Dent & Sons, Tronto & Voncourier, 1932.

Damon, S. Fosteri : (ed.) Series of Old American Songs, Providence, R. I. Brown University Library, 1936.

Darkow, Martin : "Stephen C. Foster und des amerikansche Volkslied", Die Music Barlin, Johr 4 Heft 16, May 1905, PP. 268-280.

Davidson, Levette Jay : "Jack Leonard" Californea Folk-Lore quarterly, Vol. 2, No. 2, 1943, April, PP. 89-112.

Davidson, Nora Fontaine, M. : Cullings from the Confederacy The Rufus H. Darby Printing Co. Washington, D.C., 1903.

Davis, Arthur Kyle : "On the Collecting and Editing of Ballads" American Speech, Vol. 5, No. 6, Aug. 1930, PP. 452-455.

Davis, Arthur Kyle : "Some Problems of Ballad Publication," Musical quarterly, Vol. 14, No. 2, April, 1928, P.P. 283-296.

Davis, Arthur Kyle " Some Recent Trends in the Field of Folk Songs," Southern Folk-lore

quarterly, Vol. I. No. 2, June 1937, PP 1923

Davis, Arthur Kyle : Traditional Ballads of Virginia, Harvard University Press, Cambridge, 1929.

Davis, Henry C. : " Negro Folk-Lore in South Carolina" Journal of American Folk-Lore, Vol. 27, No. 105, July-Sept. 1914, PP 241-254

De Gubernatis, A. : Zoological Mythology or the Legends of Animals, London, 1873.

Dean Michael, C. :(Comp) The Flying Cloud and One Hundred and Fifty other Old time Songs & Ballads, The Quickprint, Virginia, 192

Dearmer, Percy and Martin Shaw . Song Time, J. Curwen & Sons, London, 1915

Dett, R. Nathaniel : (ed) Religious Folk-Songs of the Negro as sung on the Plantations, New York, 1926.

Dinon, James H. . Ancient Poems, Ballads and Songs of the Peasantry of England, Printed for the Percy Society by T. Richards, London 1846

Dixon : Oclanic Mythology, Boston, 1916

Dobie, J. Frank : The Cow boy and his Songs, Taxas Review, Austin Tex., Vol. 5 No. 2, Jan. 1920, PP 163-169.

Dobie, J. Frank : " Ballads & Songs of the Frontior Folk", Texas Folklore Society Publications, Vol. 6. 1927, PP. 121-183

Dobie, J. Frank : " More Ballads & Sons of the Frontier Folk" Texas Folklore Society Publications, Vol. 7, P.P. 155-181

Doering, J. Fredrick : Folk Songs of Corubelt" Journal of American Folklore, Vol. 57. No. 223, Jan-March 1944, PP 72-76

Dolph, Edward Arthur : (ed) " Sound off " Soldier Songs from Yankee Doodly to Parley Voo, Cosmopolitan Book Corporation, New York, 1929

Dudley, R. E. and L. W. Payne, Jr ; " Some Texas Playparty Songs " Publication of the Folk-Lore Society of Texas, Vol. 1916, PP7-34

Duncan, Edmondstoune: (ed) Lyrics from the old Song Books Brace & Co, Harcourt, New York, 1927

Duncen Ruby : " The Play. Party in Hamilton Country Tenessee Folk-Lore Society Bulletin, Vol. 6. No. 1, March 1940, P.P. 1-15

Edsworth, J. Woodfall : (ed.) Roxburghe Ballads, 9 Vols., Printed for the Ballad Society by S. Austin & Sons, Hertford, 1871-1899.

Eckstorm, Fannie Hardy and Mary Winslow Smith } Minstrelsy of Maine; Folk Songs and Ballads of the Words and the Coast, Houghton Mifflin Co., Boston and Newyork, 1927.

Eddy Mary, O : Ballads and Songs from Ohio, J. J. Augstine, New York, 1927.

Edmands, lila, W. : "Songs from the Mountains of North Carolina", journal of American Folk-lore, Vol. 6, No. 21, April-June, 1883, P. P. 131-134.

Ellinger, Esther Parker : The Southern War Poetry of The Civil War. The Hershey Press, Pa, Phildelphia, 1918.

Ellis, Annie Laurie : "Oh, Burry me not on the Lone Prairie— A Song of Texan Cowboys". Journal of American Folk-Lore, Vol. 14, No. 54, July-Sept. 1901, P. 186.

Entwistle : European Balladry, Oxford University Press, 1939.

Farrier, J.A. : Primitive Manners and Customs, London, 1879.

Farwell, Arthur : Folk Songs of the West & South, the Wa-wan Press, Newton Centre, Mass., 1905, Wa-wan Series of American Compositions, Vol. 4, No. 27

Fauset, Arthur Huff : (ed.) Folk-lore from Nova Scotia, The American Folk-lore Society, G. E. Stechert & Co., (Agents) Memoires of the American Folk-lore Society, Vol. 24, New York, 1931.

Fergusson, I.F. : History of Indian and Eastern Architecture, London, 1876.

Finger Charlse, J. : (Comp.) Frontier, Ballads, Page & Co., Double day, Garden City, N.Y. 1927.

Fisher William Arms : Ye olde New-England Psalm-Times. Volive Ditson Co., Boston,New York, 1930.

F. J. Child : Ballad Poetry, Universal Cyclopaedia, 1892.

Flanders, Helen Hartness : (ed.) A Garland of Green Mountain Song, North Field, Vt. Published as part of the publication programme of the Committee for the Conservation of Vermont traditions and ideals of the Vermont Commission on Country life, Arthur Wallace Peach(agent). 1934.

Flanders, Helen Hartness : (ed.) The New Green Mountain Songster, New Haven, Yale University Press 1939.

Flanders, Helen Hartness and George Brown Vermount Folk Songs and Ballads. Stephen Daye Press, Brattleboro (Vt.)

Ford, Corey : "Justa Good Old Fashioned Cry," Vanity Fair, V [illegible] No. 3, Nov. 1927, P P. 53, 128, 130, 136

Ford, Ira W. : (Comp.) Traditional Music of America, E. P. Dutton & Co., New York, 1940.

Francis James Child : (ed.) The English and Scottish Popular Ballads, Vols. 1-5., Houghton Miffin Co.

Frank Sidwick : The Ballad, The Arts & Crafts of Letters Series, G. H. Drar & Co., 1915.

Frazer, J. G. : The Golden Bough, 12 Vols.

,, ,, ,, : The Golden Bough, Abridged edition in one Volume.

,, ,, ,, : The Belief in Immortality and the Worship of the Dead, 3 Vols.

,, ,, ,, : The Worship of Nature, 2 Vols.

,, ,, : Folklore in the Old Testament, 3 Vols.

,, ,, ,, : Totemism and Exogamy, 4 Vols.

,, ,, ,, : Psyche's task.

Frye, Mary P. : "The Ballad of Bold Dickie," Journal of American Folklore, Vol. 8, No. 30. July-Sept., 1895, P.P. 256-257.

Fason, Harvey H : Ballads of the Kentucky Highlands, The Mitre Press, London, 1931.

Gardiner, George B. : Folk Songs from Hampshire, Novello & Co., London, 1909.

Gardner, Ella : Hand book for Recreation Leaders, Govt. Printing Office. Children's Bureau, Publication No. 231, Washington, U.S., 1936.

Gardner, Emelyn E. ; Folklore from the Schoharie Hills University of Michigan Press, Ann Arbor, New York, 1937.

Gardner, Emelyn E. . Some Play party Games in Michigan, Journal of American Folklore, Vol. 33, No. 127, Jan-March, 1910, P.P. 91-133.

Gardner Emelyn E. and Geraldine J. Chickering : Ballads and Songs of Southern Michigan, The University of Michigan Press, Ann Arbor, 1939.

Garin Mikhailovsky, N. G. : Korean Folk-Tales, Chinese Fairy Tales and others 50 Vols, Moscow, 1951.

Gerould, Gordon Hall : The Ballad of Tradition, The Claren don Press, Oxford, 1932.

George Borrow : The Ballad of All Nations, Alston Rivers Ltd., 181, York Buildings, Adelphi, W.C. 2, London.

Gerassim Lebedev : Europe's First Grammars of Colloquial Hindi, 1801.

Gibbon John. Murray : (edtr.) Canadian Folk Songs, E. P, Dutton & Co., New York, 1927.

Gilbert Douglas : Lost Cords, the Diverting Story of American Popular Songs, Doubleday Doran & Co., Garden City, New York, 1942.

Gomme Alice, B. : The Traditional Games of England, Scot-Land, 2 Vols., D. Nutt, London, 1894-1898.

Goldziher, J. : Mythology among the Hebrews, London, 1877.

Gordom, Cumming : From Hebrides to the Himalyas, Vols I & II London, 1876

Gorden Robert W "The Folk-Songs of America" New York Times Magazine, Jan. 2, 1927, Jan. 22, 1928.

,, ,, ,, : Folk Songs of America, National Service Bureau, New York, 1938.

,, ,, ,, : The Negro Spirituals, in The Carolina Low Country See Smythe, Augustine T,

,, ,, ,, : "Old Songs that men have sung", Adventure Magazine, July Nov. 10, 1927.

Grafar I. E. : (ed.) History of Russian Art, U.S.S.R. Academy of Scienees, 5 Vols., 1908-1915.

Grabar. I. : History of Russian Art, Academy of Sciences Publishing Housc. Moscow, 1955.

Graharn, John : Traditional Nursery Rhymes, J. Curwenand-sons, London, 1911.

Graingar, Percy : "Tribute to the Music of the America n Negro", Current Openion, Vol. 59, No. 2, Aug. 1915, PP. 100-101.

Gray Roland Palmer : Songs and Ballads of the Maine Lumberjacks with other Songs from Maine, Harvard University Press, 1924.

Greenleaf Elizabeth B. and Grace Yarrow Mansfield : Ballads and Seasongs of New found-land, Harvard University Press, Mass, Cambridge, 1933.

Gregor, W. : Notes of the Folklore of North-east of Scotland, Folk Lore Society, 1881.

Greig Gavin : Folk Songs of the North-East, Buchan Observer Works, Peterhad, Scotland, 1914.

Greig Gavin and Alexander Keith : Last Leaves of Traditional Ballads and Ballad Airs, Aberdeen University Studies, Aberdeen, No. 100, 1925.

Grimm : Tentomic Mythology, 4 Vols. London, 1880-88.

Grimm : House Hold Tales, 1884.

Guber I. : History of Musical Culture.

Gummere, F. B. : (ed.) Old English Ballads, Athenaeum Press Series, Ginn & Co., New York, 1894.

„ „ „ : The Beginings of Poetry, Macmillon & Co., 1901.

.. „ „ : The Popular Ballad, Archibold Constable & Co., Ltd., London & Houghton Miffin & Co., Boston and New York, 1907.

„ „ : (ed.) Chapter on "Ballads" in Cambridge History of English Literature, Vol. II, 1908.

Gummere Francis Burton : Democracy and Poetry, Houghton Miffin Co., Boston & New York, 1911.

Hales and Furniwall : Bishop Percy's Folio Manuscript, Vols. I-III and Suppliment, 1867-68.

Halliwell Phillipps James Orchard : The Nursery Rhymes of England, F. Warne & Co., London, New York, Scribner. Welford and Aurstsong, 1853.

Halliwell-Phillips, James Orchard : Popular Rhymes and Nursery Tales, J. R. Smith, London, 1849.

Halliwell. Emily : (comp.) Calhoun Plantations Songs, C.W. Thompson and Co., Boston, 1907

Halpert, Herbert : A Group of Indian Folk Songs, Hoosier Folklore Bulletine, Vol. 3., No. 1, March, 1944, P P 1-15

Halpert, Herbert ; "Some Ballad & Folk Songs from New Jersey", Journal of American Folklore, Vol. 52, No. 203, Jan-March 1939, P P 52—69

Hamilton, Goldy G. : The Play party in North East Missouri, Journal of American Folklore, Vol. 27, No. 105, July—Sept. 1914, P P 289—303

Handerson, T.F. : The Ballad in Literature, Cambridge University Press, 1912

Handerson, T.F. : Scottish Vernacular Literature, 1891, P. P. 355

Handerson, W : Notes on the Folklore of the Northern countries of England and Boarder

Handy, William C. : (ed.) Blues : An Anthology, with an Introduction by Abbe Niks, A. & C. Boni. New York, 1926

Handy, W. J. : "Some early California Songs,", Outwest Los Angeles, Vol. 29, No. 6, Dec. 1908, P P 430-437

Harrison, Katherine : "In the Great Meadow and the Lone Prairie, Southern Folklore quarterly, Vol. 2. No. 3, 1938, PP. 149-156

Hart Walter Morris : (ed.) English Popular Ballads, Chicago, Foresman & Co., 1922

Hart walter Morris : Pubicatiions of Modern Language Association XXI, 1906, PP. 755

Hart walter Morris : Ballad and Epic, Harvard Studies and Notes, Vol. XI, Ginn & Co, 1907

Hartland, S.E. : Science of Fairy Tales, London, 1891.

Harold W. Thompson : Body, Boots and Britches, Philadelphia, J.B. Lippioncott. Co.

Hauser, Blanca : Music In the Life of Soviet People, Vokes Bulletine 2(85), 1954.

Hearn, W. E. : The Aryan Household, London, 1879.

Helenchild Sargent and George L. Kittredge : English and Scottish Popular Bllads, Students, Cambridge edition in one Volume, Houghton Miffin Co.

Henry, Mellinger E. : A Bibliography for the Study of American Folk Songs, The Mittre Press, London, 1937.

" . "Brian O'Lynn", Journal of American Folklore, Vol. 54, Nos. 211-212 Jan-June, 1941, PP, 83-84.

" : (ed) Folk Songs from the Southern Highlands, J. J. Augustine, New York, 1938.

: (comp) Songs Sung in the Southern Appalachians, The Mittre Press, London, 1934.

Henry, Mellinger E. & Maurice Matteson : Songs from North Carolina, Southern Folklore Quarterly, Vol. 5, No. 3, Sept. 1941, PP. 137-149.

Herd, David : Ancient and Modern Scottish Songs, Heroic Ballads etc., Reprinted from the edition of 1776, Glasgow, Kerr and Richardson, 1869.

Herrick, Mrs. R.F. : Two Traditional Songs, Journal of American Folklore, Vol. 19, No. 72, Jan.-March, 1906, PP. 130-132.

Hobson Anne : In Old Alabarma, Page & Co., Doubleday, New York, 1903.

Hogue, Wayman : Back Yonder ; an Ozark Chronicle, Black & Co., Mintan, New York, 1932.

" " : "Onzark People" Scribner Magazine, Vol. 89, No. 5, May, 1931, PP. 509-520.

Holliday Carl : American Folk Songs, Sewanee Review, Vol. 27, No. 2, April, 1919. PP. 139-150.

" " : (Comp.) Three Centuries of Southern Poetry, 1607-1907, Publishing House of the M. E. Church South, Smith Lamer, agents, Tenn, Nashville, 1908.

Howard, John Tasker Jr. : Our Folk Music and its probable Impression on American Music of the Future, Musical Quarterly, Vol. 7, No. 2, April, 1921, PP. 167-171.

.. .. .. : Stephen Foster, America's Troubadour, Cromwell Co., Thomas Y., New York, 1934.

Hubbard, William Lines : "Popular Music", The American History & Encyclopaedia of Music, Vol. 4, Irving Squire, Ohio, Toledo, 1908.

Hudson, Arthur Palmer : Folk Songs of Mississippi and their background, The University of

North Carolina Press, Chapel Hill, 1936.

Hudson Arthur Palmer : (ed.) Specimens of Mississippi Folk-lore. Edward Brothers, Ann Arbor, Mich, 1928.

Hudson, Arthur Palmer and George Herzog : Folk Tunes from Mississippi, National Play Bureau, New York, 1937.

Hulbert Arther Butler : Forty Niners ; The Chronicle of the California Trail, Brown & Co. Boston, Little, 1931.

Hummel, L. E. : Ozark Folk Songs, M.A. Thesis. MS University of Missouri, 1936,

Hustvedt, Sigurd Bernhard : A Melodic Index of child's Ballad Tunes, Publications of the University of California at Los Angeles in Languages and Literatures, Vol. 1, No. 2, Jan. 16, 1936, PP. 51-71.

Irina Zhelozinova : Ukrainian Folk-Tales, Foreign Languages Publishing house, Mascow, 1953.

Isham, Coddie S. Games of Danville, Journal of American Folk lore, Vol. 34, No. 131, Jan-March, 1921, PP. 116-120.

Ives, Ronald L. : 'Folk lore of Eastern Middle Park, Colorado Journal of American Folk lore, Vol. 54, Nos. 211-212, Jan-June 1941, PP. 24 43.

Jackchen : Folk Arts of New China. Foreign Languages Publishing house, Peeking, 1955.

Jackchen Songs of New China, Foreign Languages Publishing House, Peeking, 1955.

Jackson, George Pullen (ed.) Down-East Spirituals and Others, J. J. Augustin, New York, 1943.

Jackson, George Pullen : Spiritual Folk Songs of Early America, J. J, Augustin, New York, 1937.

" " " : White Spirituals in the Southern Uplands, The University of North Carolina Press, Chapel Hill. 1933.

Jackson, George Stuyvesant ; Early Songs of Uncle Sam, Bruce Humphries, Boston, 1933.

Jamieson Robert · (ed.) Popular Ballads and Songs, 2, Vols. A. Constable & Co., Edinburgh, 1806.

J.C.H.R. Steenstrup : The Mediaeval Popular Ballad, Trasla-ted from the Danish by E.G. Cox, Ginn & Co., 1914.

Jacobs, J. : Celtic Fairy Tales.

" " : English Fairy Tales.

John : American Ballads & Folk Songs.

Johnson, Guy B. : John Henry; Tracking Down a Negro Legend, The University of North Carolina, Chapel Hill, 1929.

Johnson, Helen Kendrick : Our Familiar Songs and those who made Them, H. Holt & Co., Newyork, 1989.

Johnson, James Weldon and J. Rosamond Johnson. } The Book of American Negro Spirituals, The Viking Press, Newyork, 1925.

" " " : The Second Book of Negro Spirituals, The Viking Press. Newyork, 1926.

" " " : The Book of American Negro Spirituals, the Viking Press, Newyork, 1940.

Jones, Bertrand L. : Folklore in Michigan, in Kalamazoo, Normal Record, Western State Normal School, Kalamazoo, Mich, 1914.

Jones, W. : Finger Ring Lore, London, 1877.

Joseph Ritson : (ed) Ancient Songs & Ballads, 1790.

,, ,, : Robin Hood, 1795

Joyce, Patrick Weston : Ancient Irish Music, M.H. Gill & Son, Dublin, Longmans Green & Co., New York, 190o, Reissue of the edition of 1873.

,, ,, ,, ; Old Irish Folk Music and Songs, Longmans Green & Co., London, New York, 1909.

Kennedy, Robert Emmet : Mellows a Chronicle of Unknown Singers, A. & C. Boni, New York, 1925, Labelon Back; Mellows, Negro Work Songs, Street Cries and Spirituals.

,, ,, ,, . More Mellows, Dodd Mead & Co., New York, 1931.

Kidson, Frank : (comp. & ed.) Traditional Tunes, A Collection of Ballad Airs, C. Taphouse & Son, Oxford, 1891.

Kincaid, Bradley : My Favourite Mountain Ballads and Old Time Songs. Prairie Farmer Radio Station, Chicago, 1928.

Kingsley, Walter : Enigmatic Folk Songs of the Southern Under World, Current Openion, Vol. 67, No. 3, Sept. 1919, P. P. 165-166.

Kirkland, Edwin Capers & Mary Neal Kirkland : Popular Ballad Recorded in Knoxville, Tenn, Southern Folklore Quarterly, Vol. 2, No. 2, June 1938, P. P. 65-80.

Kirkland, Edwin Capers and Wynn Jones : Welsh Folk Songs, Tennessee Folk Lore Society Bulletin, Vol. 9, No. 4, Dec. 1943, P. P. 1-7.

Kitredge, George Layman : Ballads & Rhymes from Kentucky, Journal of American Folklore, Vol. 20, No. 79, Oct-Dec, 1907, PP 251-277

,, ,, ,, : Ballads & Songs, Journal of American Folk Lore, Vol. 30, No. 117, July-Sept. 1917, P. P. 283-369

Kolb A Treasury of Folk Songs.

Kolesayev, V : The Central Theatre for Children, Soviet Literature, No. 11, 1955.

Korson, George Gershon : Songs and Ballads of the Anthracite Miners, F. H. Hitchcock, Newyork, 1927.

Krehbiel, Henry Edward : Afro-American Folk Songs, G. Schirimer, Newyork & London, 1914.

,, ,, ,, Florida Song Games, Journal of American Folk Lore, Vol. 15, No. 58, July-Sept. 1902, P.P. 193-195.

,, ,, ,, The Jews Daughter. A Grewsome Ballad and its Variants, Newyork Tribune, Aug. 17, 1902.

,, ,, ,, Southern Song Games, Newyork Tribune, July 27, Aug. 3, 1902.

Lair, John L. : Swing your Partner, Wilmette III, 1931.

Lang Andrew : Custom and Myth.

,, ,, : Myth, Ritual and Religion, London, 1887.

Letourneau, C. : Sociology base on Ethnography.

Levette J. Davidson and Forrester Blake : Rocky Mountain Tales, University of Oklahama Press, 1947.

Lewis, Leo R. : American Folk Songs, Etude, Vol. 24, No. 12, Dec. 1906, P. 769.

Linscott, Eloise Hubbard : Folk Songs of Old New England, The Macmillan Co. Newyork, 1939,

Loesser Arthur : (ed.) Humor in American Songs, Soskin Pub., Howell, Newyork, 1942.

Lomax : American Ballads and Folk Songs, Newyork, 1942.

Lomax, Alan and Sidney Robertson Cowell : American Folk Song and Folk Lore, a Regional Bibliography, Progressive Education Association, Newyork, 1942.

Lomax, John Avery : (comp.) Cowboy Songs and other Frontier Ballads, Sturaist Walton Co., Newyork. 1910.

,, ,, ,, : Cowboy Songs of the Mexican Border, Sewanee Review, Vol. 19, No. 1, Jan. 1911, PP. 1-18.

,, ,, ,, Some Types of American Folk Song, Journal of American Folk, Vol. 28, No. 107, Jan-March 1915, PP. 1-17.

,, ,, ,, (Comp.) Songs of the Cattle Trail and Cow Camp, The Macmillan & Co., Newyork, 1934.

Lomax, John A. and Alan Lomax : American Ballads and Folk Songs, The Macmillan & Co., Newyork, 1934.

,, ,, ,, ,, Negro Folk Songs as Sung by Lead Belly, The Macmillan & Co., Newyork, 1936.

,, ,, ,, ,, Our Singing Country, The Macmillan & Co., Newyork, 1941.

Lomax, Mrs. John A : Trail Songs of the Cow Puncher, Overland Monthly, Vol. 59, No. 1., Jan. 1912, PP. 24-29.

Lomidze, G. : Through the Eyes of their own Peoples, Vokes Bulletin, 4 (87), 1954.

Lubbock, J : Origin of Civilization and Primitive Condition of Man, London, 1882.

Lunsford, Bacom Lamar and Lamar Stringfield : 30 and 1 Folk Songs from the Southern Mountains,Carl Fischer, Newyork, 1930.

Maria Leach : Funk and Wagnalls Standard Dictionary of Folk Lore, Mythology and legend, Vol. I-II, Newyork, 1949-50.

Mc Collum, Catherine Ann & Kenneth WigginsPorter : Winter Evening in Iowa, 1873-1880, Journal of American Folk lore, Vol 56, No. 220, April-June, 1943, PP. 97-112.

Mac Donald. A B. : After 63 years The True Origin of a Cowboy Song is Traced, Kansas City Star, Oct. 25, 1936.

Mackenzie, W. Roy : Ballads and Sea Songs from Nova Scottia. Harvard University Press, Cambridge. 1928.

Mackenzie, W. Roy : The Quest of the Ballad, Princeton-University Press, Princeton, 1919.

Mackenzie, Donald A. : Teytonic Myth & Legend, Gresham Publishing Co., London

Mackenzie, Donald A. : Egypton Myth and Legend, Gresham Publishing Co., London.

Mackenzie, Donald A. : Myths of Baby Lonia and Assyria, Gresham Publishing Co., London.

Mackenzie, Donald A. : Myths of Crete & Pre-Hellenic Europe, Gresham Publishing Co., London.

Mackenzie, Donald A. : Myths of China & Japan, Gresham Publishing Co., London.

Mackenzie Donald A. : Myths of Pre-Colurrian America, Gresham Publishing Co., London.

Mc Dowell, Lucien L. : Songs of the Old Comp. Ground, Edwards Brothers, Ann Arbor, Mich., 1937

Mc Dowell, Lucien L, and Flora Lassiter Mc Dowell : Folk Dances of Tennessee, Edward Brothers Ann Arbor, Mich. 1938.

Mc Gill, Josephine : (Comp.) Folk Songs of the Kentucky Mountains, Boosey & Co, New York, 1917.

„ „ „ : Following Music in a Mountain land, Musical Quarterly, Vol. 3, No. 3, July, 1917, P.P. 364-384.

, „ „ : Old Ballad Burthens, Musical Quarterly, Vol. 4, No. 2, April, 1918, PP 293-306

Mc Ilhenny, Edward Avery : (Comp) Befo'de War Spirituals, The Christopher Publishing House, Boston, 1933

Mc Iutosh, David Senneth : Some Representative Folk Songs of Southern Illinois, M. A. Thesis, M. S. University of Iowa, 1935

Mc Lendon, Altha Leo : A Finding list of Play Party Games, Southern Folk Lore Quarterly, Vol. 8, No. 3, Sept. 1944, PP 201-234

Mackay, E : Early Indus Civilizations, edtd. by V. V. Struve, U. S. S. R. Academy of Sciences.

Marks, Edward Bennet. . They All Song, The Vinking Press, New York, 1934

Marsh, J. B. T. : The Story of the Jubillee Singers, Houghton Miffin Co., Boston, 1880

Marrian Vallet Emarich & George Korson : The Childs

Book of Folk Lore, The Dial Press, New York, 1947.

Martin, Roxie : Songs of Bygone Days, Arcadian Magazine, Eminence, Mo., Vol. 1, No. 9, Oct. 1931, P 39.

Mason, Danier Gregory : Folk Song in America, Mr. Howard Brockways Settings, Arts & Decorations, Vol. 14, No. 2, Dec. 1920, PP 122-168,

Mason Redferu : The Songlore of Ireland, Wessels and Bissell Co., 1910

Masterson, James R : Tall Tales of Arkansaw, Chapman and Grimes, Boston, 1943.

Matteson, Maurice and Melinger, E. Henry : Beech Mountain Folk Songs and Ballads, G. Schirner, Newyork, 1936.

Mattfield, Julius : The Folk Music of Western Hemisphere; A list of References in the New York Public. Library, New York, New York Public Bulletin, 1925

Mercer, H. C. : On the Track of The Arkansas Traveller, Century Magazine, Vol. 51, No. 5, March 1896, P P 707- 712

Metfessel, M.F. : Phonophotography in Folk Music, The University of North Carolina Press, Chapell Hill, 1928

Milburn, George : (Comp) The Hobos' Hornbook, 1, Washburn, New York 1930

Miles, Emma Bell : Some Real American Music, Harpers Magazine, Vol. 109, No. 649, June, 1904, PP 118-123.

Miles, Emma Bell : The Spirit of the Mountains, J. Pott & Co., New York, 1905.

Milton. Rugoff : A Harvest of World Folk Lore, New York, 1949.

Minayev, I. P. : Essays on Ceylon and India.

Moncrieff, A. R. Hope : Classic Myth & Legend, Gresham Publishing Co., London.

Moncrieff A. R. Hope : Romance & Legend of Chivalry

Moore, John Robert : A Missouri Variant of the False Lover Won Back, Journal of American Folk, Lore, Vol. 34, No. 134, Oct-Dec. 1921, PP 395-397.

Morris, Alton C. : Mrs. Griffin of Newberry, Southern Folk lore Quarterly, Vol. 8, No. 2, June, 1944. PP. 133-198.

Morris Lucile : The Old Songs, Sunday News & Leader Springfield, Mo. Aug. 26, 1934, March 3, 1935.

Morrison, D. H. : Songs We Love, Monarch Book Co., Chicago, 1907.

" " : Treasury of Songs for the Home Circle, Hubbard Bros., Philadelphia, 1882.

Motherwell, William : (ed.) Mintrelsey-Ancient and Modern, W.D. Ticknor & Co., Boston, 1827, II edition, 1846,

Murphy, Jeannette Robinson : Must the True Negro Music Become Obsolete ? Kunkel's Musical Review, St. Louis Vol. 30, No. 305, 1905, P: 10.

" " " : The Survival of African Music in America, Popular Science Monthly, Vol. 55, Sept. 1899, PP 660-672.

" " : The True Negro Music and Its Decline, The Independent, Vol. 55. No. 2851, July 23, 1903, PP- 1723-1730.

cely Charles : Four British Ballads in Southern Illinois, Journal of American Folk Lore, Vol. 52, No. 203, Jan-March, 1939, PP. 75-81.

Nevin, Robert P. : Stephen C· Foster and, Negro Mintrelsy, Atlantic Monthly, Vol 20, No. 12, Nov. 1867, PP. 608-616.

Newcomb Lydia Bolles : Songs and Ballads of the Revolution, New England Magazine, Vol. 13, No. 4, Dec. 1895, PP. 501-513.

Newell, William Wells : Early American Ballads, Journal of Amercian Folk Lore, Vol, 12, No. 47, Oct-Dec., 1899, PP. 241-254, Vol. 13, No. 49, April-June, 1900 PP. 105-123.

„ „ „ : Games and Songs of American Children, Harper & Brothers, Newyork, 1883, 1903.

„ „ „ : Old English Songs in American Virsions, Journal of American Folk Lore Vol. 15, No. 17, Oct-Dec., 1892, PP. 325-326.

Nikolai Gorchakov : The Vakhtankov School of Stage Art.

Niles, John J. : (Comp.) More Songs of the Hill Folk, G. Schirmer, New York, 1936.

„ „ : Singing Soldiers, Charles Scribners Sons, Newyork, 1927.

„ „ : (ed.) Songs of the Hill Folk, G. Schirmer, Newyork, 1934.

„ „ : A Woman... On a Good Man's Mind, The Mentor, Vol. 18, No. 2, March, 1930, PP. 12-15, 70-71.

Niles, John J. , Douglas S. Moore and A. A. Wallgren : Songs my Mother Never Taught Me, The Macanlay Co., Newyork, 1929.

Norman Loyd & M. Bradford Boni : Fireside Book of Folk-Songs, Simon and Shuster, Newyork, 1947.

Northall G.F. : (Comp.) English Folk Rhymes, K. Paul, Trubner & Co., London, 1892.

O'conor Manus : Old Time Songs and Ballads of Ireland, The Popular Publishing Co., Newyork, 1901.

Odum Anna, Kraz : Some Negro Folk Songs from Tennessee, Journal of American Folklore, Vol. 27, No. 105, July-Sept., 1914, PP. 255-265.

Odum, Howard W. : Down that Lonesome Road, Country Gentleman, Vol. 96, May, 1926, PP. 18-19, 79.

" : Folk Songs & Folk Poetry as Found in the Secular Songs of the Southern Negroes, Journal of American Folklore, Vol. 24, No. 93, July-Sept., 1911, PP. 255-294, No. 94, Oct.-Dec. 1911, PP. 351-396.

" : Religious Folk Songs of the Southern Negroes, American Journal of Religious Psychology Vol, 3, No. 3, July, 1909, PP. 265-365.

Odum, Howard W. & Guy B. Johnson The Negro & His Songs, The University of North Carolino Press, Chapel Hill, 1925.

Negro Workaday Songs, the University of North Carolina Press, Chapel Hill, H. Milford, Oxford, London, 1926.

Oline Downs & Elie Siegmeister : A Treasury of American Songs, Alfred A. Knoff, Newyork, 1943.

Oliphant Smeaton : Channels of English Literature, Vol. on Heroic Poetry, Dent Sons, London.

Ord, John : (ed) The Bothy Songs and Ballads of Aberdeen, Banff & Moray, Angus and the Mearns, Paisley, A. Gardner, 19:0.

Owens, Bess Alice Songs of the Cumberlands, Journal of American Folklore, Vol. 49, No. 193, July-Sept. 1936, PP. 215-242.

Owens, William A. : Swing & Turn—Texas Play Party Games, Tardy Publishing Co., Dallas, Tex., 1936.

Paskman, Dailey Sigmund Spaeth : Gentlemen, Be Seated ! Doubleday, Dordan & Co., Garden City, Newyork, 1928.

Payne, L. W. Jr. Finding List of Texas Play Party Songs, Publications of Folk lore Society of Texas, Vol. 1, 1946, PP. 35-38.

" " " " One Evening as I sat Courting, Texas Folk Lore Society Publications, Vol. 2. 1923, PP 6-7

" " " : Some Texas Versions of the Frog's Courting, Texas Folk Lore Society Publications, Vol. 5, 1926, PP 5-48

" " " : Songs & Ballads—Grave and Gay, Texas-Folk-lore Society Publications, Vol. 6, 1927, P.P. 209-237

Peabody, Charles : A Texas Version of the White Captive, Journal of American Folk-lore, Vol. 25, No. 96, April-June, 1912, P.P. 169 170.

Percy, Thomas : Reliques of Ancient English Poetry, ed. by Henry B. Wheatley, 3 Vols., S. Sonnenschein & Co., London, 1889

Perkins, A.E. : Negro Spirituals from the Far South, Journal of American Folk-lore, Vol. 35, No. 137, July-Sept-1922, P.P. 223-249.

Perrow, E. C. : Songs and Rhymes from the South, Journal of American Folk-lore, Vol. 25, No. 96, April-June, 1912, P. P. 137-155, Vol. 26, No. 100, April-June 1913, P. P. 123-173, Vol. 28, No. 108, April-June, 1915, P.P. 129-190.

Peter C. Swann : An Introduction to the arts of Japan, Pub., Bruno Cassirer, Oxford

Pike, Gustavus D. : The Jubilee Singers, Lee Shepard, Boston, Lee Shepard and Dillingham, Newyork, 1873

Pike, Robert E. : Amanda and Captive, Journal of American Folk-lore, Vol. 56, No. 220, April-June, 1943, P.P. 137-139.

Piper, Edwin Ford : Some Play Party Games of the Middle West, Journal of American Folk-lore, Vol. 28, No. 109, July-Sept. 1915, P. P. 262-289.

Popov, Innokenty : An Opera About A Popular Hero, Vokes Bulletine, 4 (87). 1954.

Porter John E. and Bertrand H. Bronson : Wobbly and Other Songs, California Folklore, Quarterly, Vol. 2, No. 1, Jan. 1943, P.P. 42-44.

Porter, Kenneth Wiggins : Childrens' Songs & Rhymes of the Porter Family. Journal of American Folk-lore, Vol. 54, No. 213, 214, July-Dec. 1941. P.P. 167-175.

Pound, Louise : (ed.) American Ballads & Songs, C. Scribner's Sons, Newyork etc., 1922

„ „ : Folk Songs of Nebraska and the Central West. a Syllabus. Nebraska Academy of Science Publications, Vol. 9, No. 3, Oct. 1, 1915, P. P. 1-89.

Pound, Louise : Oral Literature in America, in Cambridge History of American Literature, Vol. 4, G.P. Putnam's Sons, Newyork, 1921.

,, ,, : Poetic Origins and the Ballad, The Macmillan Co., Newyork, 1921.

,, ,, : The South Western Cow boy Songs and the English and Scottish Popular Ballads, Modern Philology, Vol. 11, No. 2, Oct. 1913, P.P. 195-207.

,, ,, : Traditional Ballads in Nebraska, Journal of American Folk-lore, Vol. 26, No. 102, Oct.-Dec., 1913, P.P. 351-366.

Preece, Harold Folk Music of the South, The New South, a Journal of Progressive Opinion, Vol. 3, March, 1938, P.P. 13-14.

Quiller-Couch, A. T. : (ed.) The Oxford Book of Balla ds, The Clarendon Press, Oxford, 1910.

Raine, James Watt : The Land of Saddle-Bags, Newyork, Pub. Jointly by Council of Women for Home Missions and Missionary Education Movement of the United States and Canada, 1924.

,, ,, ,, : Mountain Ballads for Social Singing, Berea College Press, Berea. Ky., 1923.

Ralph; S. Boggs : Folk-lore Bibliography for 1937, Southern Folk-lore Quarterly, March, 1938.

Randolph, Vance : Folk Song Department, Ozark life Magazine, Kingston, Ark., Vol. 5, Nos. 1-7, Dec., 1929-Sept., 1930.

,, ,, : Ozark Mountain folks, The Vanguard Press, Newyork, 1932.

,, ,, : The Ozark Play-Party, Journal of American Folk-lore, Vol. 42, No. 165, July-Sept., 1929, P.P. 201-232.

,, ,, . The Ozarks; An American Survival of Primitive Society, The Vanguard Press, Newyork, 1931.

Randolph Vance : The Songs Grand Father Sang, Pinevile; Mo., Democrates, Feb., 18, 1927, May, 6, 1927.

,, ,, : Ozark Superstitions, Columbia University Press, Newyork, 1947.

,, ,, : Ozark Folk Songs, 4 Volumes, ed. for The State Historical Society of Missouri, by Floyde. Sholemaker, Secretary and Francis, G. Emberson, Research Associate, The State HIstorical Society of Missorie, Columbia, Missouri, 1946-1950.

,, ,, : From an Ozark Holler, Columbia University Press, Newyork.

,, ,, : An Ozark Anthology, Columbia University Press, Newyork.

Rawn, Isobel Nauton & Charles Peabody : More Songs and Ballads from The Southern Appalachians, Journal of American Folk-lore, Vol. 29, No. 112,April-June, 1916, P.P. 198-202.

Rayburn, Otto Earnest : The Magic Formula in The Ballads, Arcadian Life Sulphur Springs, Texas, Vol. 1, No. 2, June, 1935, P. 12.

,, ,, ,, : Ozark Country, Sloan & Pearce, Duell, Newyork, 1941.

Read, Opie Percival : The Arkansas Traveller's Songster, Dick and Fitzgerald, Newyork, 1864.

Richard Chose : The Jack Tales and Grandfather Tales, Boston, 1948.

Richardson, Anna Davis : Old Songs from Clarksburg, W. Va., 1918, Journal of American Folk-lore, Vol. 32, No 126, Oct.-Dec., 1919. P.P. 497-504.

Richardson, Ethel Park : (Comp.) American Mountain Songs, Greenberg, Newyork, 1927.

Richardson, Mrs. H.G. : Buy me a Milking-Pail and Songs of The Civil War, Journal of American Folk-lore, Vol. 31, No. 120, April-June, 1918, P.P. 275-277.

Rickaby, Franzlee Ballads and Songs of the Shanty Boy, Harvard University Press, Cambridge, 1926.

Rimbault, Edwaad Francis : Nursery Rhymes, Wood and Co., Cramer, London, 1860.

Ritson, Joseph : (Comp.) Ancient Songs and Ballads, 3rd. ed., rev. by W. Carew Hazlitt,Reeves and Turner, London, 1877

Robertson, Smith W. : Kinship and Marriage in Early Arabia, Cambridge, 1883.

Robinson. Frances : Folk Music, Current Literature, Vol. 30, No. 3, March, 1901, P.P. 350-351.

Robinson, Carson J. : Hill Country Songs and Ballads, New-york, 1929

Roe, Charlie and Jim Schwenck ; The Home Bartender's Guide and Song Book, Experimenter Publica-tions, Newyork, 1930

Rollins, Hyder Edward Analytical Index to the Balled Ente-ries, 1557-1709, in the Register of the Company of Stationers of London, Uuniversity of North Carolina Press. Chapel Hill 1924

: (ed.) The Pepys Ballads, Vols. 1 and 2, Harvard University Press, Mass., Cambridge, 1929

Roth Crawford Seeger American Folk Songs for Childern in Home. School and Nursery School, United States of America, 1948

Roth Grawford Seeger : Our Singing Country, Macbmillan Co., Newyork, 1941

Saerchinger, Ceasar : The Folk Elements in American Music. in the Art of Music, Edited by Daniel Gregory. Mason, Vol. 4, Newyork, National Society of Music, 1915.

Sandburg Carl : The American Songbag, Brace & Co., Harcourt, Newyork, 1927

Sargent, Helen Child and George Layman Kittredge : English & Scottish Popular Ballads, Students' Cambridge Edition, Houghton Miffin Co., Cambridge. 1904.

Scarborough, Dorothy : The Blues as Folk Songs, Texas Folk Lore Society Publications, Vol. 2, 1923, PP. 52-66.

,, ,, : On the Trail of Negro Folk Songs, Harvard University Press, Cambridge.

,, ,, : A song Catcher in Southern Mountains, American Folk Songs of British Ancestry, Columbia University Press, Newyork.

Scott, Sir Walter : (ed) Ministerlsy of the Scottish Border, 2 Vols., Kelso, Printed by J. Ballantyne for T. Cadell, Jun & W. Davices, London, 1802. Ed. by T. F. Hunderson, 4 Vols., Black Wood & Sons, Edinburgh.

,, ,, ,, : Letters on Demonology and Witch Craft, London, 1884.

,, ,, ,, : Minsterlsy, 1902, Introduction Portion.

Seward, Theodore Frelinghuysen : (comp.) Jubilee Songs as Sung by the Jubilee Singers, Binglow and Main, Chicago, New York, 1872.

Sharp Cecil J. : (Comp.) American English Folk Songs, G. Schirmer, New York, 1918.

Sharp Cecil J. : English Folk Songs, Some Conclusions, Simkin & Co., London, 1907.

,, ,, : (Comp.) English Folk Songs from the Southern Appalachians, ed. by Maud Karpeles, 2 Vols., Oxford University Press, H. Milford, London, 1932.

,, ,, : Nursery Songs from the Appalachians Mountains, 2 Vols., London, Novello & Co., 1921-1923.

,, ,, : (ed.) One Hundred English Folk Songs, Oliver Ditson Co., Boston, C. H. Ditson Co., Newyork, 1916.

Sharp, Cecil J. and Herbert C. Macilwaine : The Morris Book, 5 Vols., Novello & Co., London, 1907-1913.

Sharp, Cecil J. and Charles L. Marson : Folk Songs from Somerset, Kemp & Co., London, Simkin, Marshall Hemilton, 1904.

Shaw, Martin and Percy Dearmer : (ed. and comp.) The English Carol Book, Young Churchman Co., Milwankee, Wis, 1925.

Shay, Frank : (comp.) Drawn from the Wood, The Macaulay Co., Newyork, 1929.

,, ,, : (ed.) Iron Men and Wooden Ships, Deep Sea Chanties, Doubleday, Page & Co., Garden City, Newyork, 1925.

,, ,, : More Pious Friends and Drunken Companions, The Macmillan Co., Newyork, 1928.

,, ,, : My Pious Friends and Drunken Companions, The Macaulay Co., Newyork, 1927.

Shearin, Hubert G. : British Ballads in the Cumberland Mountains, The University Press at the University of the South, Sewanee, Tenn, 1911. Reprinted from the Sewanee Review, July, 1911.

Shearin' Hubert G. and Josiah Combs : A Syllabus of Kentucky Folk Songs, Transylvania University Studies in English, Lexington, Ky., Vol. 2, 1911.

Shell, Lilith : Folk Songs-Mountain Entertainment, Little Rock, Arkansas Gazette, March, 11,1928

Sheppard Muriel Earlly : Cabins in the Laurel, The University of North Carolina Press, Chapel Hill, 1935

Sherwin, Sterling, Louis Katzman and B. Moore : Songs of the Gold Miners, Carl Fischer, Newyork, 1932

Shoemaker, Henry W. (Comp.) Mountain Minsterlsy of Pennsylvania, Philadelphia, N. F. Meljirr, 1931

,, North Pennsylvania Minsterlsy, Times Tribune Co., Altoona, Pa 1919, 1923

Sinclair, John Scenes and Stories of The North of Scotland, Simkin & Co. London, 1890

Slonevsky, N. : Art that Never Ages, Vokes Bulletine, 4 (87), 1954

Sophia Jewett : (Tr.) Folk Ballad of Southern Europe, J. P. Putnom's Sons.

Smith, C. Alphonso : Ballads Surviving in the United States, Musical Quarterly, Vol. 2, No. 1, Jan., 1916. PP 109-129

Smith, Grace P, : A Note on Springfield Mountain, Journal of American Folk Lore, Vol. 49, No. 193 July-Sept., 1936, PP 263-265

Smith, Reed . A glance at the Ballad and Folk Song Field, Southern Folk Lore Quarterly, Vol. 1, No. 2, June, 1937, P.P. 7-18

South Carolina Ballads with a Study of the Traditional Ballad Today, Harvard University Press, Cambridge, 1928

Smith Reed : The Traditional Ballad in the South During. 1914, Journal of American Folk Lore, Vol. 28 No. 108, April-June. 1915, PP 199-203

Smith, Reed and Holton Rufty : Anthology of Old-World Ballads, J. Fischer and Bro., Newyork, 1937

Smythe, Angustine T. and others : The Carolina Low Country, The Macmillan Co., Newyork, 1931

Spaeth, Sigmuud : Read 'Em and Weep' The Songs you Forgot to Remember, Doubleday, Page & Co., Garden City, Newyork, 1927

,, ,, Weep Some More, My Lady ! Doubleday Page & Co., Garden City, Newyork, 1927

Spaulding, H. G. : Under tne Palmetto, Continental Monthly, Vol. 4, No. 2. Aug. 1863, PP. 188-203

Spencer H. : Principles of Sociology, Vols I-II, London, 1885

Spenny, Susan Dix : Riddles and Ring Games from Raleigh, N. C., Journal of American Folklore, Vol. 34, No. 131, Jan.-March, 1921, PP. 113-115

Squire Charles : Caltic Myth & Legend, Poetry and Romance, Gresham Publishing Co., London.

Starcke, C. N. : The Primitive Family, London, 1889

Stith Thompson : The Folk Tale, The Dryden Press, Newyork, 1946

,, ,, Motif Index of Folk-literature

,, ,, Tales of North American Indians, Cambridge, Mass., 1929

Stockard, Sallie Walker : The History of Lawrence, Jockson Independence and Stone Countries of the Third Judicial District of Arkansas, Arkansas Democrate Co., Little Rock, 1904

Stout, Earl J. : (ed.) Folk Lore from Iowa, The American Folk Lore Society, Newyork, G. E. Stechert & Co., agents, 1936, Memories of The American Folk Lore Society, Vol 29

Sturgis Edith Barnes and Robert Houghes } Songs from The Hills of Vermout, G. Schermer, Newyork

Sylvia and John Kolb : A Treasury of Folk Songs, Bantom Books, Newyork, 1948

Talley, Thomas W. : (Comp.) Negro Folk Rhymes, The Macmillan & Co., Newyork, 1922

Taylor, Archer : The Carol of the twelve Numbers Once More, Southern Folk Lore Quarterly, Vol 4, No. 3, Sept. 1940, P. 161

Taylar, E. B. Primitive Calture, 2 Vols.

" " Researches into the Early History ef Mankind.

Terry, R. R. The Shanty Book, 2 Vols., J. Curwen & Sons, London, 1921-1926.

Thomas E. D. A New and Choice Selection of Hymns and Spiritual Songs for the use of the Regular Baptist Church and All Lovers of Song, Catlettsburg, Ky., 1871.

Thomas, Jean Ballad Makin, in the Mountains of Kentucky, H. Holt & Co., Newyork, 1939

" " Big Sandy, H. Holt & Co. Newyork, 1940

" " Devil's Dities, W. W. Hotfield, Chicago, 1931

" " The Sun Shines Bright, Prentice Hall, Newyork, 1940

Thomas, Jean and Joseph A. Leader : The Singin 'Gatharin' Silver Burdett Co., Newyork etc., 1939

Thomas, Will H. : Some Current Folk Songs of the Negro, Folk Lore Society of Texas, Austin, Texas, 1912

Tiulayev, S. A. : The Eastern Theatre, Leningrad, 1929

Thorp, N. Howard : Songs of the Cowboys, Houghton Miffin Co., Boston, 1921

Todd Charles and Robert Sonkin : Ballads of the Okies, Newyork Times Magazine, Nov. 17, 1940

Tolman Albert H. : Some Songs Traditional in the United States, Journal of American Folk Lore, Vol. 29, No. 112. April - June, 1916, PP. 155-197

Tolman, Albert H. and Mary O. Eddy Traditional Texts & Tunes, Journal of American Folk Lore, Vol. 35, No. 138, Oet. - Dec., 1922, PP. 335-432

Treat, Asher E. : Kentucky Folk Song in Northern Wisconsin, Journal of American Folk Lore, Vol. 52 No. 203, Jan.-March 1939, P P 1-51

Trifet, Ferdinand : Trifet's Budget of Music No. 15, Boston, March, 1892

Truitt, Florence : Songs from Kentucky, Journal of American Folk Lore, Vol. 36, No. 142, Oct.-Dec., 1923, PP 376-379

Trumbell, H. C. : The Blood Covenant, 1887.

Turner, Harriet : Folk Songs of the American Negro, The Boston Music Co., Boston, 1925

Vance, Lee J. : Folk Lore Study in America, Popular Science Monthly, Vol. 43, Sept., 1893, PP 586-598

Van Doren Carl : Some Play Party Songs from Eastern Illinois, Journal of American Folk Lore, Vol. 32, No. 126, Oct.-Dec., 1919, PP. 486-496

Van Vechten, Carl : In the Garret. A. A. Knoff, Newyork, 1920

Vernon, Lue : Old Songs that Live, Music Chicago, Vol. 18, Sept, 1900, PP 440-446

Vitali Leptev : The Art of Free Korea, Art Publishing House, Moscow, 1955

Wake, C. S. : Serpent Worship

Warnick Florence : Play Party Songs in Western Maryland, Journal of American Folk Lore, Vol. 54, No. 213-214, July-Dec., 1941, PP 161-166

Webb, W. Prescott. : Miscellany of Texas Folk Lore, Texas Folk Lore Society Publications, Vol. 2, 1923, PP 38-49

Wedgewood, Harriet L. : The Play party, Journal of American Folk Lore, Vol. 25, No. 97, July-Sept., 1912, PP 268-273

Westropp, H. M. : Primitive Symbolism

Wheat, C. V. : Songs & Ballads of Yester-Years, Aurora, Mo., Advertiser, Dec. 19, 1934, Feb., 1939

White, Newman I. : American Negro Folk Songs, Harvard University Press, Cambridge, 1928.

„ „ : Racial Traits in the Negro Song, Sewanee Review, Vol. 28, No. 3, July, 1920, PP. 396-404.

White, Richard Grant : (Comp. & ed.) Poetry, Lyrical, Narative and Satirical, of the Civil War, The American News, Newyork, 1866.

Whitney, Annie Weston and Caroline Canfield Bullock : Folk-lore from Maryland. Newyork, The American Folk lore Society, G. E. Stechert & Co., Agents, 1925, Memoirs of the American Folk lore Society, Vol. 18.

Wilde, Lady : Ancient Legends, Mystic Charms and Superstitions of Ireland, London, 1888.

Will, G. F. : Four Cowboy Songs, Journal of American Folk lore, Vol. 26, No. 100, April-June, 1913, PP. 185.

„ „ : Songs of Western Cowboys, Journal of American Folk lore, Vol, 22, No. 84, April-June, 1909, PP. 256-261.

Williams, Alfred : Folk Songs of the Upper Thames, Duckworth & Co., London, 1923.

Williams, Alfred Mason : American Sea Songs, Atlantic Monthly, Vol. 69, No. 414, April, 1892, PP. 489-501.

„ „ „ : Folk Songs of the Civil War, Journal of American Folk lore, Vol. 5, No. 19, Oct.-Dec., 1892, PP. 265-283,

„ „ „ : Studies in Folk Song and Popular Poetry, Houghton Miffin & Co., Boston & Newyork, 1894.

Wilson, Charles Morrow : Back Woods America, The University of North Carolina Press, Chapel Hill, 1934.

Wilson, Thomas : The Arkansas Traveller, Press of Fred J. Heer, Columbus, Ohio, 1900.

Wimberly, Lowry Charles : Folk lore in The English and Scottish Ballads, The University of Chicago Ill, 1928,

Wolford, Leah Jackson : The Play Party in Indiana, Indiana Historical Commission, Indiana polis, 1916.

Wood, C. L. : Early Days, Tennessee Folk-lore Society Bulletin, Vol. 10, No. 3, Sept. 1944, PP. 5-6.

Wood, Ray : (Comp.) Mother Goose in the Ozarks, Ray Wood, Texas, 1938.

Work, John Wesley : Folk Song of the American Negro, Press of Fisk University, Nashville, Tenn, 1915.

Wyman, Loraine and Howard Brockway : Lonesome Tunes; Folk Songs from Kentucky Mountains, The H.W. Gray Co., Newyork, 1916.

Wyman, Loraine and Howard Brockway : Twenty Kentucky Mountain Songs, Oliver Ditson Co., Boston, 1920.

Yefimov, Boris : Great Traditions, Vokes Bulletine, 1 (84), 1954.

परिशिष्ट १

पुस्तक के प्रकाशित होते-होते कुछ अन्य पुस्तकें और दिखीं जिनकी सूची यहाँ प्रस्तुत है

Fan, Ning Early Vernacular Tales, Chinese Literature, No. 3, 1955, PP. 86-89.

Gladys, Yang Ashma—A Shani Ballad, Peoples Literary Press, Peking, 1955.

Wei Chi-Lin The Legend of The Rose, Chinese Literature, No. 4, 1955, PP. 73-78.

Tso Cheng (Tr.) Ma Liang and His Magic Brush—A Folk Tale, Chinese Literature, No. 4, 1955, PP. 138-144.

Tang Sheng (Tr.) The Lady in the Picture—A Folk Tale, Chinese Literature, No. 4, 1955, PP. 145-150.

Yu Kuan-Ying : Selected Poems from the Book of Odes, Writers' Publishing House, Peking, 1957.

Nguyen Dinh Thi : The Literature of Viet-Nam, Ancient Folk Literature and Classics, Soviet Literature, No. 9, 1955, Mascow.

Maxim Rylsky (ed.) Ukrainian Folk Proverbs and Sayings, Publishing House of The Academy of Sciences of Ukrainian S.S.R. Kiev, 1955.

Le Van Hun History of the Great Viet, Folk lore Portion, 30 Vols., 13th Century.

Le Quy Don Philosophical writings, Folklore Portion, 18th Century.

Doan Thi Diem Laments of a Soldiers Wife, 1872.

Nguyen Du : The Tale of Thuy Kieu, 1900.

Mikhail Lakerbai : Abkhazian Folk Tales, Soviet Literature, No. 5, Moscow, 1957.

Alexandra Anisimova : Songs of the War, Union of Soviet Writers, Moscow, 1943.

„ „ : Russian Folk Tales, Soviet Literature, No. 5, Moscow, 1957.

Vu Ngoc Phan & Van Tan : Vietnamese Folklore, Folk Stories and Legends, 1957.

Grabar, J.E. Kemenov, V. S. and Lazarev, V.N. : (ed.) History, of Russian Art, Vols. 4, Academy of Sciences Publishing House, Moscow, 1953-1955.

Yakov Uhsai : Grandfather Kelbuk, Soviet Writer Publishing House, Moscow, 1954.

„ „ : The Bashkir State Opera and Ballet Theatre, The Academic Dramatic Theatre, The Folk Dance Ensemble, Bashkir State Philharmonia, 1938.

„ „ : Krasnaya Presnya Museum, Balshavik Street, Krasnaya Presnya, Distt. Moscow, from 7th Dec. 1905.

Retold by—Pushkin, Tolstoy, Zhukovsky, Mamin Sibiryak Bazhov : Fairy Tales, The Wooden eagle and the Stone Bowl (Russian) The Skyblue Carkpet (Georgian) The Shepherd Boy (Latvian) Golden Fingers (Bashkir) Ali the Master (Kazakh), A Mountain of Gems.

Lu Feng, Chu I-Chang : Chinese Fairy Tales.

Bozena NemCova, Karel Erben, Alois Jirasek and Karel Capek : Czech and Slovak Folk Tales, the Publishing House for Juvenile.

Andersen Hens : The Snow Queen & 2 Vols. of Folk Tales, Publishing House for Juvenile.

Perrault, Laboulaye, George Sand and Vaillant Couturier: Red Riding Hood, Cindereslla, Puss in Boots

and Hop O' My Thumb, Publishing House for Juvenile.

Golovnya, V. : The Theatre of Aristophanes, Institute of the the History of Arts, U. S. S. R., Theatre Deptt. 1954.

Dmitriev, Y : Our Theatrical Heritage; Institute of the History of Arts, U.S.S.R. Theatre Deptt., 1955.

Burov, A. : On Aesthetic Essence of Art, Institue of The History of Arts, U.S.S.R Aesthetics Deptt., 1956.

Vanslov, V. : Content & Form in Art, Institute of the History of Arts, U. S. S. R. Aesthetic Deptt., 1956.

Podelkov, Sergei : Folk Songs of the Mari People, State Publishing House for Fiction and Poetry, Moscow, 1955 (Russian).

Chang Su-Chu : Two Lovers and Two Trees. Tales of The Chuang People, Chinese Literature, No. 4, Foreign Languages Press, Pai Wan Chuang, Peking, 37, China 1956.

Mao-Tun : (ed.) Tibetan Folk Tales and Fables. Chinese Literature, No. 2. Foreign Languages Press, Pai Wan Chung, Peking, 1956.

Mao-Tun : (ed) Tibetan Folk Songs. Chinese Literature, No. 2. Foreign Languages Press, Pai Wan Chuang, Peking, 1956.

Jora-Shurba Lozong—Jeltseng ; Tibetan Folk Literature, Chinese Literature, No. 2, Foreign Languages Press, Pai Wan Chuang, Peking, 1956.

: The Moscow Museum of Folk Art, Founded in 1885 (Called The Arts and Crafts Museum Then) Soviet Literature, 11, 1955, P.P. 200.

: Central Puppet Theatre, 1937, Soviet Lit. No., 10, 1955, PP 197-198.

: The Old Museum of Folk; Nanking, 1864.

: The Peking Opera : from 1644 Museum.

Bakhtin, V., and Others : (Comp.) Russian Soviet Poetry and Folklore, Soviet Writers Publishing House, Leningrad, 1955.

Shukur Sagdulla : The Heroic Badal, State Publishing House of the Uzbek, S.S.R., Tashkent, 1955.

Sheverdin, M. : Uzbek Folk Stories, The State Publishing House of the Uzbek S.S.R., Tashkent, 1955.

Samdeil Marshak : A Selection of Poems Based on Folk Themes, 4 Vols, State Publishing House for Fictions and Poetry, Moscow, 1955.

Irina Zheleznova : Ukrainian Folk Tales, Foreign Languages Publishing House, Moscow, 1955.

Marshak, S. : A Whiskered little Frisker, Foreign Languages Publishing House, Moscow, 1957.

Ivv Litvinova : The Fox in a Fix, Foreign Languages Publishing House, Moscow, 1957.

Gheorghe Saru : (ed.) Arts in the Rumanian Peoples Republic, 128, Calea. Mosilor, Bucharest, 1955.

परिशिष्ट २

कुछ लोकयानी जानकारियाँ

The Standard Dictionary of Folk-lore, Mythology and Legend

Editor : **Maria Leach.** Asstt. Editor . **Jerome Fried.**

Publisher : Funk and Wagnalls Coy. Newyork, 1950.

Consultants : **Malville, J. Herskovits; Mac Edward Leach ; Alexander, H. Krappe; Erminie, W. Voeglin ;**

Jakobron, Roman (Russian) : Two Old Czech Poems on Death, 1927

: Remarques sur l'evolution Phonogique du russe, 1929.

: Characteristics of the Eurasian Linguistic Affinity, 1931:

: Old Czech Verse, 1934.

: Description of Macha's Verse, 1939.

: Wisdom of Ancient Czechs. 1943.

: Russian Epic Studies (With E. Simmons), 1949.

Jones Louis Clark (Georgian):Club of Georgean Rakes, 1941

: Spooks of the Valley, 1948

Cooperstown, 1949.

Mac Dongald, Duncan, Jr. (Salvician) : The First four Centuries of Organ Music, 1948,

: Flok-Dances of the Salvic Nations, 1950

: Songs to grow on, 1950.

Phillips, William John (Dutch) : (Several books to his credit but names could not be traced,)

Jameson, Raymond Deloy (Chinese) : Three Lectures on Chinese Folk-lore, 1932.

Krappe, Alexander Haggerty : The Legend of Rodrick, 1923.
: The Scene of Folk-lore, 1930.

J. Hestings : Encyclopaedea of Religion and Ethics.

Stith Thompson : The Types of the Folk-tale, 1928 :
: Motif Index of Folk-literature.

Balys, Jones (Lithunian) Motiv Index of Lithunian Narrative Folk-lore, 1935.
Lithunian Folk-legends, Vol. 1,19 .0.
Hundred Folk-ballads, 1941.
Lithunian Folk-tales, 1945.
Handbook of Lithunian Folk-lore (vols. 2), 1948.

Barbeau Marius (French) Bio-Bibliography, Pub. by Clarissecardin, Archives-Folk-lore, II, 1947.

Bascom. William R. : Sociological Role of the Yoruba cult Group

Boggs, Ralph Steele (Spainish): Index of Spainish Folk-tales, 1930
: Bibliographia del Folk-lore Mexicano, 1939
: Bibliography of Latin American Folk-lore, 1940

Brakeley Theresa, C. (spainish) : (Several books to his credit but names could not be traced).

Botkin Benjamin Albert . Treasury of American Folk-lore, 1944
: Treasury ofNew England Folk-lore, 1947

Botkin Benjamin Albert : Treasury of Southern Folk-lore, 1949.

Foster, George M. (American): Survey of Yuki Culture, 1944.
: Sierra Popoluca Folk-lore and Beliefs, 1944.

Loonus, Roger Sherman(Celtic) : Celtic Myth and Arthurian Romance, 1927
: Arthurian Legends in medieaval Art, 1938
: Arthurian Tradition, 1949

Metraux, Alfred ; Myths and Tales of the Pilaga Indians. 1946

Miss John Leon : Conditional Sentence in Classical Chinese, 1936

Arnold Van Gennep (French) : Manuel de Francais Contemporain, 4 vols., Paris Editions Auguste Picard 82, rue Bonaparte

Charles Leirens (Belgian) : Belgian Folk-lore, Belgian Government Information Centre, 630, Fifth Avenue, New York.

J. **H. Kruizinga (Netherland)** : Levende Folk-lore, Pub., Uitgeverij De Torenlaan, Aan De Torenlaan 20, Assen (Netherlands)

परिशिष्ट ३

अमरीकी लोकयानी अनुसन्धाता

Botkin, B. A. : Sidewalks of America, 1954.

„ „ „ : A Treasury of American folklore, 1954.

„ „ „ : A Treasury of Mississippi River folklore, 1955

„ „ „ : A Treasury of New England folklore, 1947.

„ „ „ : A Treasury of Western folklore, 1951.

Chase, R. : Grandfather Tales, 1948.

Credle, E. : Tales from the high hills, 1958.

Dobie, J. F. : Tales of old-time Texas, 1955.

„ „ „ : The family saga and other phases of American folklore, 1958.

Leach, M. : The Rainbow book of American folk tales and legends, 1958.

Adms, Ruth Constance : Pennsylvania Dutch Art.

Christensen, Erwin Ottomar : Early American Wood carving

Dickey, Roland F. : New Mexico village arts.

Eaton, Allen H. : Handicrafts of New England.

Ford Alice : Pictorial folk art, New England to California.

Kauffman, Henry : Pennsylvania Dutch; American folk art.

Lipman, Jean H. : American primitive painting.

„ „ „ : American folk art in wood, metal and stone.

Durlacher, Edward : Honour your partner; 81, American square, circle and contra dances.

Kirkell, Miriam H. : Partners all—Places all; 44, enjoyable square and folk dances for everyone.

Maddocks, Durward : Swing your partners; a guide to modern country dancing.

Shaw Lloyd : Cowboy dances.

Boni, Margaret B : Fireside book of folk songs.

,, ,, ,, ; The fireside book of favourite American songs.

Carmer Carl, L : America Sings.

Downes, Olin : A Treasury of American songs.

Sandburg, Carl : The American songbag.

,, ,, : New American songbag.

Scott, Thomas J. : Sing of America.

Seeger, Mrs. Ruth (Crawford) : American folk songs for children in home, school and nursery school.

परिशिष्ट ४

AUSTRIAN FOLKLORISTS

Beitl Richard, Phil. D : "Der Kinderbaum", 1942.
: "Sagen verarlbergs", 1950.
: "Neue Sagen aus voralberg", 1953.
: "Osterreichiache volksmarchen", 1957

Do "Rrer Anton, Phil. D : "Die Thierseer Passionspiele 1779-
: 1935", 1935.
: "Bozner Burgerspiele", 1942.
: "Tiroler Fasnacht", 1949.
: "Tiroler Umgangsspiele", 1957.

Haberlandt Arthur, Phil. D : "Volkskunst der Balkanlander", 1919.
: "Die volkstumliche Kultur Europas in ihrer geschichtlichen Entwicklung" (Buschans Ill. Volkerkunde, vol. 3) 1926.
: "Volkskunde des Burgenlandes", 1935.
: "Taschenworterbuch der Volkskunde Osterreichs", 2 Vol. 1953, 1959.

Helbok Adolf, Phil D. : "Co-editor of "Atlas der deutschen Volkskunde", 1929.
: Co-editor of "Osterreichischer Volkskundetlas", 1953.

Kelbok Adolf, Phil D. : Vandans, eine Heimatkunde aus dem Tale Montafon in Vorarlberg", 1922.

: "Haus und Siedlung", 1937.

: "Grundlagen der Volksgeschichte Deutschlands und Frankreiche", 1939.

Hofler Otto, Phil. D : "Kultische Geheimbunde der Germanen". 1934.

: "Germanisches Sakralkonigtum", vol. 1, 1952.

Ilg Karl, Phil. D : ed. "Beitrage zur Volkskunde Tirole", Vol. 2, 1948.

: Die Walser in Vorarlberg, 2 vol. 1949, 1956.

Klaar Adalbert, Dipl. Eng. : "Die Siedlungs formen von Salzburg", 1939.

: "Siedlungsformenkarte der Reichsgaue Wien, Karnten, Niederdonau, Oberdonau, Salzburg Steiermark und Vorarlberg", 1942.

Koren Hanns, Phil. D : "Volksbrauch im Kirchenjahr", 1934

: "Pflug und Arl, 1950.

: "Volkskunde in der Gegenwart", 1952.

: "Die Spende", 1955.

Kretzenbacher Leopold, Phil. D :

: "Germanische Mythen in der epischen Velksdichtung der Slovenen", 1941.

: "Lebendigas Volksschauspiel in Steismark", 1951.

: "Passionsspiel und Christi Leiden Spiel in den Sudostalpenladern, 1952.

: "Fruhbareckes Weihdtsspiel in Karnten" und Steiermark, 1953.

Hretzenbacher Leopold, Phil. D. : Weihnachtskrippen in Steisrmark, 1953.

"Die Seelenwage," 1958.

Schmidt Leopold, Phil. D :

: Editor of "Osterreichische Zeituchrift fur Volkskunde" and of Publications of Austrian Museum f. Folklore.

: "Wiener Volkskunde", 1940.

: "Formproblems der deutschen Weihnachtsspiele ." 1937.

: "Der Mannerohrring", 1947.

: "Gestaltheiligkeit im bauerlichen Arbeitsmythos", 1952.

: "Heiliges Blei, 1958.

Weiser-Aall Lily : "Jul, Weihnechtsgeschanks und Weihnachtsbaum", 1923.

: "Altgermanische Junglingsweihen und Mannerbunde, 1927.

: "Volkskunde und Psychologic" 1937.

Wolfram Richard, Phil. D :

: "Schwarttanz und Mannerbund", 2 vol. 1936, 1937.

: "Deutsche Volkstanze, 1937.

: "Die Volkstange in Osterreich und verwandte Tanze in Europa, 1951.

: "Salzburger Volskunde" (Salsburg-Atlas), 1955.

Wopfner Hermann, LL. D. Phil. D : "Tiroler Volkskunde", 1933.

: "Das Bergbauernbuch", 1951.

Burgstaller Ernst, Ph. D. : "Lebendiges Jahresbrauchtum in Ob-erosterreich", 1948.

: "Brauchtumsgebacke und Weihnachts speisen", 1957.

: "Osterreichische Festtagsgebacke", 1957.

Gommend Hans, Phil, D. : "Volkskunde der Stadt Linz an der Donau", 2 vol., 1958-1959.

Gugitz Gustav : "Das Jahr und seins Feste im Volksbrauch "Osterreichs", 2 Vol. 1949-1950.

: "Das kleine Andachtsbild in den" osterreichischen Gandenstatten, 1950.

: "Die Sagen und Legenden der Stadt Wien", 1952.

: "Osterreichs Gnadenstaten in Kult und Brauch, 5 Vol., 1955-1948.

Haiding Karl, Phil D. : "Kinderspiel und Volksuberlieferung"

: "Osterreichischs Marchenschat" 1953

Horak Karl : "Burgenlandische Volksschauspiele", 1940.

Klier Karl Magnus : "Schatz osterreichischer Weihnachts-lieder."

: "Das Blochziehen—ein Faschings-Brauch von der Sudostgtenze Osterr-eichs". 1953.

: "Das Totenwacht-Singen im Burgenland", 1956.

: "Volkstumliche Musikinstrumente in den Alpen", 1954.

Kotex George, LL. D. : "Osterreichisches Volkslied—Werk", Editor in chief of "Das deutsche Volkslied", co-editor of "Osterreichisches Volksliederbuch."

Lipp Franz, Phil. D. : "Art und Brauch im Land ob der Enns", 1952.

Mais Adolf, Phil. D. : Editor of "Osterreichische Volkskunde fur Jedermann".

Moser Oskar, Phil. D. : Landes—"Kaantner Bauernmobel", 1949.

Peter Ilka : "Perchtentanz im Pinzgau", 1940.

: "Gasslbrauch und Gasslspruch in Osserreich", 1953.

Ringler Josef Jakob, Phill. D. : "Deutsche Weihnachtskrippen", 1929.

Zonder Raimnnd : Co-editor "Deutschen Volkstanz", 1938.

: Co-editor Das deutsche Volkalied".

: Altosterreicnische Volkstanze sec. ed. 1946-1955.

: Volkslied, Volkstanz und Volksbrauch in Osterrelch, 1950.

परिशिष्ट ५

CANADIAN FOLKLORE

The collecting of Canada's rich folklore was begun long ago. Material that would otherwise have been lost forever has been preserved in records of early colonial times, in the accounts of missionaries among the natives (particularly those of the Jesuits) and in writings left by white people who had been captives of the Indians. However, scientific research in to the field of Canadian folklore did not develop until the 20th century.

Canadian folklore consists of two distinct elements. One is a heritage growing out of the traditions and handicrafts of the Indians; the other has sprung from the traditions and handicrafts of the white man. Over the past 300 years the two elements have tended to merge into or influence one another. The white settlers, voyageurs and fur-traders borrowed from the Indians a number of New World devices—The snowshoe, the moccasin, the toboggan, the canoe, the cultivation of the potato, maize and tobacco, etc.—as well as certain words. The native peoples and half-breeds have adopted many more details of European culture, including the white man's costume. They have transposed his embroidery and patterns from thread into moose hair, porcupine quill and bead decorations. They have also assimilated many French folk tales. The tall totems and scrimshaw carvings that developed among the Haida and other Indian groups of the Northwest Pacific Coast and the Bering Sea area are representatives of a new heraldic art that was stimulated by the fur trade.

Folklore as applied to the white man's traditional beliefs, narratives and manual arts has been scientifically pursued only

since 1900. It is quite comprehensive, embracing as it does all the accessories of material existence as well as verbal accounts, tales, songs, dances, games, recipes, medicines and superstitions.

The occasioal blending of European and Indian folklore elements, not only in Canada, but throughout North America, constitutes a continent-wide cultural aspect demanding further study. In order to reconstruct the full picture of our continental culture and history, efforts are being made to recover the folklore of French Canada, Mexico and other New World areas. This study has expanded largely in recent years, especially under the guidance of the National Museum of Canada, the Journal of American Folklore and Laval University's Archives de Folklore.

Literature concerning the native peoples of Canada is listed with the articles on the various tribes or bands. Franz Boas, J.R. Swanton, T F. McIlwraith and Marius Barbeau, among others, have published works on the Indians of the North Pacific Coast. Books and monographs on the Eskimo and North western Indians include those of Pere Petitot and other missionaries, and of numerous anthropologists, including Frank Speck, Thalbitzer, Diamond Jenness, Stith Thompson, Jacques Rousseau and Marius Barbeau.

Folklore literature about French Canada its folk tales, songs and handicrafts—was seriously begun Marius Barbeau after 1914 and has since expanded at the hands of such scholars as E.Z. Massicotte, Luc Lacourciere, Raoul and Marguerite d 'Harcourt (Paris), Madeleine Doyon, Carmen Roy and Gerard Morisset. The National Museum of Canada has a collection of more than 20,000 folklore and folk-music recordings (other than Indian), in which those in the French language are much the most numerous. Among the English-language work, that of Helen Creighton in Nova Scotia, and Margaret McTaggart and Kenneth Peacock in Newfoundland has been notable in more recent years. Other scholars are giving particular attention to the more recent groups in the population of various European origins.

MARIUS BARBEAU, D. LIT., F. R. S.C.
(Canadian)

Dr. Marius Barbeau was born on March 5, 1883 at Ste. Marie de Beauce, Quebec. His father was Charles Barbeau whose ancestors settled in Canada in the 17th century.

Dr. Barbeau studied law at Laval University and in 1907 he won a Rhodes scholorship to Oxford where he became interested in ethnology. From there he pursued his studies at the Sorbonne in Paris. He returned to Canada in 1911 and was appointed to the staff of the National Museums where he remained forty years. During this time he devoted his life to building up the museums rich store of Indian and French Canadian folklore. Although Dr. Barbeau has recently retired from his post as head of the National Museum, nevertheless he still continues with unabated enthusiasm his career as Ethnologist and Folklorist.

Dr. Barbeau has written some 60 books, 100 pamphlets and 800 articles. Among his publications, are the following:

"Wyandot and Huron Mythology, 1912.

"Indian Days in the Rockies" 1923.

"Folksongs of French Canada". 1924.

"Totem Poles of the Gitskan", 1929.

"Au Coeur de Quebec", 1934.

"Folk-Songs of Old Quebec", 1935.

"Grand-mere Laconte", 1935.

"Quebec Where Ancient France Lingers", 1936.

"Maitres Artisans chez-nous", 1942.

The Indian Speaks", 1943.

"Mountain Cloud", 1944.

"Archives de Folklore", 1947.

"Le Rive de Kamalmouk", 1948.

"Haida Myths", 1953.

"The Tree of Dreams", 1955.

परिशिष्ट ६

विभिन्न व्यक्ति अथवा संस्थायें जिनसे लोकयानी जानकारी प्राप्त की जा सकती है

1. Swiss National Library,
   Halwylstrasse, Bern, Switzerland.
2. Department of Sociology,
   University of Ceylon.
   Peradeniya,
   Ceylon.
3. Patriot Association,
   Addis Ababa,
   Ethopia.
4. The Ministry of Information
   Addis Ababa,
   Ethopia.
5. Kitabfaroushi Ebne Sina
   Kheyabane Shahabad.
   Teheran—Iran.
6. Folk-lore Institution, Columbia.
7. Maruzen Co., Ltd.
   No.-6, Tori 2-Chome, Nihonbashi,
   Tokyo (Japan).
8. Nihon Shuppan Kyokai
   (Japan Publication Society)
   6, Suido-Cho, Kobinata,
   Bunkyo-Ku
   Tokyo (Japan).
9. Shri Ernesto Rodriguez Jr.,
   Acting Director,

Bureau of Public Libraries,
Manila (Philippines).

10. Danish Folk-lore Council.
(Dansk Folkeminderaad),
Christians Brygge 8,
Copenhagen K.

11. President, Phillippine Education Coy., Inc.,
1104, Castillojos, Manilla, Philippines.

12. Director,
The Higher Council of Literature & Arts,
11, Hasan Sabry, Zamalek,
CAIRO. (V.A.R.)

13. Verband der Vareine fuer Volkskunde e. V.
(Association of Societies for Folk-lore).
Dillmannstr, 3.
Stuttgart, West Germany.

14. Deutsches Institut fuer Volkskunde e.V.
(German Institute for Folk-lore)
Kanalstr, 13.
Muenster (Westf.), West Germany.

15. Suomalaisen Kirjallisnuden Seura
(Society of Finnish Literature)
Hallitustatu 1,
Helsinki, Finland.

16. American Folk-lore Society
Box 5, Bennett Hall,
University of Pennsylvania
Philadelphia, 4, Pennsylvania.

परिशिष्ट ७

पुस्तक के प्रकाशित होते-होते कुछ पुस्तकों की सूची और बन गई है जिसे यहाँ दिया जा रहा है :—

हिन्दी में प्रकाशित लोक-साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें

उपरेत्ती, मोहनचन्द्र : कुमाऊँनी रामलीला; एक पर्यवेक्षण, १९६० ।

,, ,, : लोक-संगीत तथा लोक-नाट्य; एक समन्वय १९६१ ।

,, ,, : लोक-नाट्य एक अध्ययन, १९६२ ।

गौंडाराम वर्मा : विभिन्न पत्रों में प्रकाशित लेख तथा भारतीय लोक-कला मण्डल, उदयपुर द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में सहकार्य ।

पाण्डेय, इन्दुप्रकाश : अवधी लोक-कथायें, शिव प्रकाशन, बम्बई—४, १९५९ ।

,, ,, : अवधी लोक-गीत और परम्परा, रामनारायणलाल इलाहाबाद, १९५७ ।

मटियानी शैलेश : कुमाऊँ की लोक-कथायें, आत्माराम एण्ड सन्स; दिल्ली, १९५९ ।

,, ,, : अलमोड़ा की लोक-कथायें, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, १९६० ।

,, ,, : बारामण्डल की लोक-कथायें, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, १९६० ।

,, ,, : नैनीताल की लोक-कथायें, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, १९६१ ।

भटियानी शैलेश : चम्पावत की लोक-कथायें, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, १९६१।

,, : तराई की लोक-कथायें, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, १९६१।

,, : डोटी की लोक-कथायें, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, १९६१।

व्यास, मुरलीधर : लोक-कथाओं का संग्रह, १९५८।

शर्मा, भगवती : 'कालिदास' लोक-संस्कृति अंक, उज्जैन

शर्मा, मनोहर : राजस्थान की सात बहनें, वारदा पत्रिका

,, ,, : राजस्थान की सात मातायें, वारदा पत्रिका

हिन्दी लिपि में प्रकाशित डोगरी की लोक-साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें

नमियाँ मिंजराँ : डोगरी संस्थान, जम्मू, १९५५

इक हा राजा : डोगरी संस्थान, जम्मू, १९५८

डोगरी लोक-कत्थाँ : डोगरी संस्थान, जम्मू, १९५८

खारे मिट्ठे अत्थरू : डोगरी संस्थान, जम्मू, १९५४

नमी चेतना : डोगरी पत्रिका के चार अंक १९५०

पंजाबी में प्रकाशित लोक-साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें

मादपुरी, सुखदेव : नैणां दे वञ्जारे, लाहौर बुकशाप, लुधियाना

मराठी में प्रकाशित लोक-साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें

अद्वन्त० : पैण्डाल, चित्रशाला प्रेस, पूना, १९५४

आप्टे : म्हणी आणि सम्प्रदाय

केलकर, य० न० : अन्धार्यान्ती लावण्या

चाफेकर : आमचे बदलापूर

जोशी, वी० वा० : लोक-कथा, १९३५

दाते : लोक-कथा, १९३६

पाटिल, एस० डी० : मराठी स्त्री गीतें, मालेगाँव

पाठक, बा० ल० : मुलींच्या फुगड्या, १९५४

पोहनेरकर, न० : राम पार्यांन्त, मराठी ग्रन्थ संग्रहालय, हैदराबाद, १९५६

बावर, डा० सरोजिनी : स्त्री धन, १९५१

,, ,, : मंगलाक्षता

,, ,, : सखवत

बोरसे, प्रो. दा. गो. : गिरिजा, गिरिजा साहित्य भण्डार, मालेगाँव, १९५१

,, ,, : खानदेश वाग्वैभव, गिरिजा साहित्य भण्डार, मालेगाँव, १९५३

,, ,, : तापी तरंग, गिरिजा साहित्य भण्डार, मालेगाँव, १९५२

,, ,, : अहिराणीची कुलकथा, गिरिजा साहित्य भण्डार, मालेगाँव, १९५२

,, ,, : अहिराणी ध्वनि परिचय, गिरिजा साहित्य भण्डार, मालेगाँव, १९५६

,, ,, : अजिब्याचे लेणें, गिरिजा साहित्य भण्डार, मालेगाँव १९५४

भागवत, दुर्गा : लोक-साहित्यांची रूपरेखा, १९५८

महाराष्ट्र लोक-साहित्य समिति, पूना : महाराष्ट्र लोक-साहित्य माला, १ला भाग, १९५६

,, ,, : महाराष्ट्र लोक-साहित्य माला, २रा भाग, १९५७

,, ,, : महाराष्ट्र लोक-साहित्य माला, ३रा भाग, १९५८

लिमये, अनुसूया : घाटा वरील श्रमिकांची गाली

खंडे, ना० रा० : लोक-साहित्य सम्पदा

उड़िया में प्रकाशित लोक-साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें

डा० कुंजबिहारी दास : उड़िया लोक-गीत-ओ-कहानी, विश्व भारती विश्वविद्यालय

" " : पल्लिगीत सञ्चयन, प्रथम भाग, लेखक द्वारा प्रकाशित

" " : पल्लिगीत संचयन, द्वितीय भाग लेखक द्वारा प्रकाशित

" " : कथांति कहूं, दो भाग, लेखक द्वारा प्रकाशित

श्रीमती प्रेमलतादास : लोकथाति सरिता, रैंब सूसन पुरी

चन्द्रधर महापात्र : बोहुसिका सुख दुख गीतिका

डा० लक्ष्मीनारायण साहू: दण्ड नट

अंग्रेजी में प्रकाशित लोक-साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें

Dr. K.B. Dass : A Study of Orissan Folk-lore, Vishva-Bharati University, Shantiniketan.

Dr. Laxmi Narain Sahu : Hill Tribes of Joypur.

Mookerjee, Ajit : Folk-Toys of India, D.B. Taraporevala Sons & Co., Bombay.

Thomas ,P : Epics, Myths and Legends of India, D.B. Taraparevala Sons & Co., Bombay.

" " : Hindu Religion, Customs & Manners, D. B. Taraporevala Sons & Co. Bombay.

Prem Kumar : Language of Kathakali.

Faubion Bowers : The Dance in India.

Coyajee, Sir J. C. : Iranian and Indian Analogues of the Legend of the Holy Grail.

Burlingame, E.W. : Buddhist Legends, 2 Vols.

Bigandet, Rev. P. : (tr.) The Life or Legend of Gautama the Buddha of the Burmese.

Conze, Edward : Selected Sayings from the Perfection of

Nivedita, Sister : Cradle Tales of Hinduism.

Dubois, J. A. : Hindu Manners, Customs & Ceremonies.

Lewis Spence : Myths of Maxico & Peru.

" " . An Introduction to Mythology.

Hadland Davis, F. : Mytns & Legends of Japan.

Rolleston : Myths & Legends of the Caltic Races.

Ebbutt, M. I. : Hero Myths & Legends of the British Race.

Garber, H.A. : Myths of the Horseman,

" " : Myths & Legends of the Middle Ages.

Robert Graves : Greek Myths, Cassell & Co., London, 1958.